श्रीः

ज्योतिष्मती

त्रैमासिक

वर्ष
२१
सं० २०१५

संख्या
४
श्रावण



वार्षिक
मूल्य
१२·००

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य ३·२५

विषय-सूची

प्रेमी पाठकों और स्नेही सज्जनोंसे निवेदन

इस अङ्कमें २१वाँ वर्ष पूर्ण हो रहा है। जिन ग्राहकोंका इस अङ्कमें मूल्य समाप्त है उनको छपा हुआ मनीआर्डरफार्म साथ भेजा जा रहा है। कृपया वे अपना आगामी वर्ष २२वें का वार्षिक मूल्य १२) बारह रुपये शीघ्र भेज दें, ताकि समय पर 'नववर्षाङ्क' उन्हें प्राप्त हो सके।

२२वें वर्षके 'नववर्षाङ्क' के लिए कई लेख प्राप्त हो चुके हैं, अतः अब जो सामयिक लेख (राष्ट्रीय भविष्यदिग्दर्शन और व्यापार भविष्य सम्बन्धी) अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रामाणिक होंगे वे ही प्रकाशित हो सकेंगे। 'नववर्षाङ्क' में ज्योतिष आयुर्वेद मंत्र-यन्त्र-तन्त्र सम्बन्धी महत्वपूर्ण लेख कविता कहानी साहित्य-समीक्षा आदि उपयोगी सामग्री १०० पृष्ठ में सुन्दर कागज पर छपकर आगामी विजयादशमी दि. ११ अक्टूबर ७८ को प्रकाशित होगी।

...ापक—ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)—१७३२१२

❀ श्रीः ❀

ज्योतिष्मती

[भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी प्रचारक प्रमुखपत्रिका]

❀

सम्पादक एवं संचालक

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य सांख्ययोगाचार्य M.A., Ph.D.

श्री भवानी शंकर त्रिवेदी शास्त्री B.A.

❀

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिःशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन संमान्य सदस्य और जो १२५) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १२.०० बारह रुपये और एक प्रतिके ३.२५ तीन रुपये पच्चीस पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजनी चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथि से १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि० प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

(श्रावण-भाद्रपद-आश्विन, दि० २१ जुलाई ७८ से १६ अक्टूबर ७८ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भतले ॥

वर्ष	सोलन, आषाढ शु० १५ गुरुवार, स० २०३५ वि०	संख्या
२१	२६ आषाढ़, शाके १६०० (२० जुलाई १६७८ ई०)	४

दयस्व देवि चण्डिके दरिद्र दुःखखण्डिके !

अपार दुःखसागरे पतामि मातरम्बिके ।। दयस्व देवि चण्डिके दरिद्रदुःखखण्डिके ! ॥ १ ॥
भजन्ति ये दुराशया भवन्ति ते महाशयाः । दयस्व देवि चण्डिके दरिद्रदुःखखण्डिके ! ॥ २ ॥
अहर्निशं स्मरन्ति ये विशुद्धकायमानसाः । दयस्व देवि चण्डिके दरिद्रदुःखखण्डिके ! ॥ ३ ॥
सुव्यग्रचित्तचंचला कलत्रमित्र बान्धवाः । दयस्व देवि चण्डिके दरिद्रदुःखखण्डिके ! ॥ ४ ॥
विलुप्ततीक्ष्णशेमुषी अभावपाशपाशितः ! दयस्व देवि चण्डिके दरिद्रदुःखखण्डिके ! ॥ ५ ॥
स्मराम्यहं सदाशिवं विपत्तिकालसन्निधौ । दयस्व देवि चण्डिके दरिद्रदुःखखण्डिके ! ॥ ६ ॥
अतीव संकटेस्थितो विचारमग्नभावुकः । दयस्व देवि चण्डिके दरिद्रदुःखखण्डिके ! ॥ ७ ॥
भजाम्यहं महाभयामवेहि मातरम्बिके ! दयस्व देवि चण्डिके दरिद्रदुःखखण्डिके ! ॥ ८ ॥
दुरन्त दुःख दुःखिते ललाट पट्टदर्शके । दयस्व देवि चण्डिके दरिद्रदुःखखण्डिके ! ॥ ९ ॥
समैर्जनैरुपेक्षिते क्रियाविहीन चिन्तिते । दयस्व देवि चण्डिके दरिद्रदुःखखण्डिके ! ॥१०॥

पूजावसानसमये नवरात्रसंज्ञे वाचस्पतेर्लपनपंकजनिर्गतेन ।
यश्चण्डि पूजनमहो कुरुते प्रभाते सुप्रीणितो भवति चण्डिसुतो गणेशः ॥

—वाचस्पति शर्मा वैद्य

[कविकृत अप्रकाशित 'वेदनः-काव्य' से साभार]

सम्पादकीय बिचार–

बापूकी समाधि पूछती है कहां गई वे प्रतिज्ञाएं ?

भारतके प्रबुद्ध नागरिकोंने सर्वथा अप्रत्याशित और अभूतपूर्व प्रचण्ड बहुमतसे सन् १९७७ के लोकसभा निर्वाचनोंमें जनतापार्टीको विजयी बनाया और उसके हाथोंमें सत्ता सौंपी थी। जनतापार्टीकी इस महान् विजय और सफलता को देशकी जनताने स्वयं अपनी विजय और सफलता समझा था। उस समय राष्ट्रमें जो उत्साहकी लहर व्यापी थी, जो नयी-नयी आशाएं और आकांक्षाएं अंकुरित हुई थीं वे देखते ही बनती थी। और जिस समय जनता पार्टी तथा उसके सहयोगी दलोंके निर्वाचित लोकसभा-सदस्योंने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की राजघाट स्थित समाधि पर जाकर लोकनायक श्री जयप्रकाश-नारायणके नेतृत्वमें बापूके चरणचिह्नों पर चलकर, उनके आदर्शों और सपनोंको पूरा करने तथा राष्ट्रका नव-निर्माण करनेका सत्संकल्प लिया था, वह इस महान् भारत राष्ट्रके लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षण था। जनता पार्टीके सांसदों के द्वारा राजघाट पर ली गई उस प्रतिज्ञासे राष्ट्रके हृदयमें यह आशा जगी थी कि जनता पार्टीकी नई सरकार पाश्चात्य संस्कृति पर आधारित श्री नेहरूकी भोग-प्रधान नीतिको तिलांजली दे भारतीय परम्पराके अनुसार पूज्य बापूकी त्याग प्रधान नीतिका अनुसरण करेगी।

नेहरूकी नीति ही अपना ली गई

गांधी और नेहरूकी नीतियोंमें धरती और आसमानका, पूर्व और पश्चिमका, दिन और रातका अन्तर है। भारतकी स्वाधीनताकी पुण्यवेलामें जब कुछ पत्रकार गांधीजीसे साक्षात्कार हेतु उनके पास पहुंचे और उनसे बात करने लगे तो उन्होंने उन देशी और विदेशी पत्रकारोंसे बड़े दृढ़ और निर्भीक स्वरमें कहा कि "विश्वको, सारे संसारको बता दो कि गांधी को अंग्रेजी नहीं आती। मुझसे जो बात करनी है हिन्दीमें की जाए। मैं हिन्दीमें बोलूंगा।"

इसके विपरीत नेहरू आद्यन्त अंग्रेजी और अंग्रेजियतके उपासक और भक्त ही क्यों, कहना तो यह चाहिये कि दास बने रहे! नेहरूके लिए हिन्दी मात्र सभा-सम्मेलनोंमें बोलनेकी और इस प्रकार लोगोंको ठगनेकी, गुमराह करनेकी भाषा थी। वे अपना सम्पूर्ण कार्य आद्यन्त अंग्रेजीमें करते थे। अंग्रेजीमें लिखते और बोलते थे। यह बात नहीं है कि वे अच्छी हिन्दी न जानते हों। आवश्यकता पड़ने पर वे प्रांजल हिन्दीमें घंटों धाराप्रवाह भाषण दे सकते थे, किन्तु उनके मानसमें तो अंग्रेजी और अंग्रेजियत रमी हुई थी। जान मथाई जैसे अंग्रेजीदां लोगोंको ही वे अपने अंतरंगमें रखते थे। अंग्रेजी और अंग्रेजियत का प्रचार-प्रसार जितना नेहरूने अपने शासन के १७-१८ वर्षोंमें तथा उनके बाद उनकी बेटी इन्दिराने लगभग १२-१३ वर्ष तक कुल मिलाकर ३० वर्षकी संक्षिप्त अवधिमें किया उतना तो अंग्रेज अपने दो सौ वर्षके लगभग

के शासनकालमें भी नहीं कर पाए थे। अंग्रेजों के जमानेमें प्राथमिक कक्षाओंसे लेकर अंग्रेजी माध्यमसे सम्पूर्ण शिक्षा देने वाले नामके लिए पब्लिक स्कूल (जनताके विद्यालय) किन्तु वास्तवमें मात्र जनताके सम्पन्न वर्गके लिए चलने वाले ऐसे स्कूल सम्पूर्ण भारतमें इने गिने ही थे, किन्तु नेहरूने अंग्रेजी और अंग्रेजियत का प्रचार-प्रसार करनेके उद्देश्यसे भारतके नगर-नगर तो क्या कस्बों तकमें इन पब्लिक स्कूलोंका जाल बिछा दिया। आज देशमें हजारों ऐसे पब्लिक स्कूल चल रहे हैं जिनमें अंग्रेजी माध्यमसे शिक्षा तो दी ही जाती है अंग्रेजी ढंगसे रहन-सहनके तौर-तरीके भी सिखाए जाते हैं और बच्चोंके अबोध मन और मस्तिष्कको अंग्रेजियतके सांचेमें ढाला जाता है।

बढ़ती हुई शराबखोरी

पाश्चात्य संस्कृतिकी एक विशिष्ठ और सर्वप्रमुख पहचान है मद्यपान। अंग्रेजीशासन-कालमें शराबके ठेके कहीं-कहीं ही दिखाई देते थे। और कुछ उच्चवर्गके या निम्नवर्गके थोड़े-बहुत लोग शराबका सीमित मात्रामें सेवन अवश्य करते थे। किन्तु, मध्य और निम्न मध्यवर्गमें शराबका सेवन प्रायः नहीं किया जाता था, या नाम मात्रको होता था। किन्तु कांग्रेसके तीस वर्षके शासनकालमें देशके कोने-कोनेमें शराबकी नदियां बहने लगीं और अधिकांश जन-समाज इस विनाशक व्यसनके चगुलमें जा फँसा। स्थिति तो यहां तक आ पहुंची थी कि हरियाणा और हरियाणा ही क्यों, कांग्रेस शासित प्रायः सभी राज्योंमें कदम-कदम पर शराबकी दुकानें ऐसे खुल गई थी जैसे शीतल पेयकी दुकानें हों। अब भी स्थितिमें कोई विशेष अन्तर नहीं हुआ है। जिस दुकान पर शीतलपेय मिलता है उसीके साथ दुकान पर बड़े आकर्षक नाम-पट्टों पर लिखा दिखाई देता है "यहां ठण्डी बीयर और व्हिस्की बिकती है।"

और ये विलास सामग्रियां

अंग्रेजी और अंग्रेजियतके प्रमुख चिह्न मद्यपानके साथ नेहरूके नेतृत्वमें कांग्रेसी सरकारोंने भोग प्रधान पाश्चात्य संस्कृतिको भारत में बद्धमूल करनेके लिए नानाविध विलासोपकरणों तथा ऐशो-आरामके साजो-सामान अपनानेका भी खूब प्रचार-प्रसार किया और लोग विलासी जीवन बितानेके लिए बड़े-बड़े बंगले जिन्हें आलीशान महलोंकी संज्ञा दी जा सकती है खड़े करने लगे। इन बंगलोंमें जो विलासोपकरण जुटाए जाते थे उनकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। अकेले बखिया जैसे कुख्यात तस्करके विलास बंगलेमें जिन भौतिक सुख-सुविधाओं और विलास सामग्रियों के वर्णन पत्रोंमें छपे थे वे ही चौंका देने वाले थे। कांग्रेसी मन्त्रीगण उन बंगलोंमें जाकर वहांके स्वर्गीय सुखोंका उपभोग कर कृतकृत्य हुआ करते थे। इन्दिरा गांधीने लाल किलेके सामने जो कालपात्र गड़वाया था उसमें स्वाधीन भारतकी जिन अनेक उपलब्धियोंका वर्णन किया गया है उनमेंसे एक नई दिल्ली में अशोक होटलका निर्माण भी है। और क्यों न हो, जहां शासनसूत्र संचालक मंत्रियोंको यूरोपके जैसी सुख-सुविधाएं और विलास सामग्रियां उपलब्ध हों, उस अशोक होटलको स्वाधीन भारतकी उपलब्धि क्यों न माना

जाए। कांग्रेसके कुछ मंत्रियोने तो (जिनमें भू०पू० प्रसारण मन्त्री श्रीविद्याचरण शुक्लका नाम विशेष रूपसे लिया जाता है) अपने विशाल बंगलोंके रहते हुए भी अपने लिए इस होटलमें स्थायी रूपसे कक्ष सुरक्षित करवा छोड़े थे।

और ये वातानुकूलित रेलगाड़ियां

मंत्रियोंको जितनी सुख-सुविधाएं उनके बंगलोंमें मिलती हैं—यात्राके समय रेलगाड़ियों में भी उनमें किसी प्रकारकी कमी न आ जाए, कांग्रेसी सरकारोंने वातानुकूलित डीलक्स गाड़ियाँ चला दीं। मात्र प्रथम श्रेणीसे उन्हें भला कहां संतोष हो सकता था। यहां हम देखते हैं कि नेहरू और गांधी मानो दो ध्रुवों पर खड़े हैं। कहां आजन्म थर्ड क्लासमें यात्रा करने वाले विश्ववन्द्य त्यागमूर्ति बापू और कहां प्रथम श्रेणीसे भी न सन्तुष्ट वातानुकुलित रेल चलाने वाले भोगप्रधान पाश्चात्य संस्कृति के जीवन प्रतीक श्रीनेहरू। ऐसे विलासवैभव में पले भारत सरकारके मन्त्रियोंके सुकोमल चूतड़ दो चार सौ पांच सौ रुपएकी साधारण कुर्सियों पर बैठनेसे तो घिस जाते, इसलिए उन्होंने अपने लिए पांच-पांच हजार रुपएकी कुर्सियां बनवाई। इंग्लैण्ड और अन्यत्र राजदूत के पद पर रहते हुए एक विजयलक्ष्मी पंडितने ही क्यों, यहां भी श्यामाचरण शुक्ल जैसे कांग्रेसी मन्त्रियोंने अपने निवास स्थानको सजाने संवारने और उनमें हेर-फेर करनेके लिए लाखों रुपए पानी की तरह बहा दिए।

तीस वर्षके कांग्रेसी दुःशासनकी समाप्ति कर जनताने जब जनता पार्टीके हाथमें सत्ता सौंपी थी तो यह आशा की थी कि अब राष्ट्र को नेहरूकी भोग-विलास और शानो-शौकत प्रधान सरकारसे छुटकारा मिलेगा और सरकार बापूके दिखाए त्याग-प्रधान मार्गको अपनाएगी। किन्तु, कहां! स्वप्न स्वप्न ही रहे। जनतापार्टीके शासन-सूत्र संचालकोंने आरम्भमें जो बड़ी-बड़ी प्रतिज्ञाएं और घोषणाएं की वे सब कुर्सी पर बैठते ही हवामें उड़ गईं, या पानी बनकर बह गईं। हमारे जिन वर्तमान राष्ट्रपतिने कहा था कि 'मैं राष्ट्रपति भवन छोड़कर छोटी कोठीमें रहूँगा' वे अब उससे हटनेका नाम तक नहीं लेना चाहते। जो मंत्रीगण कुर्सी पर बैठनेसे पूर्व हिन्दीकी वकालत करते न अघाते थे वे अब अपना सारा काम-काज बड़े शौकसे अंग्रेजीमें चला रहे हैं। जिस देशकी साठ प्रतिशत जनता गरीबके जीवनस्तरसे भी नीचेका जीवन बिता रही हो, आज झोंपड़ियोंमें रहकर तन पर एक लंगोटी और पेटमें आधी रोटी डालकर जिस किसी तरह दिन काट रही हो, उसी देशके शासनसूत्रधारोंको रहनेके लिए बड़े-बड़े महल, यात्राके लिए विमान और वातानूकूलित गाड़ियां तथा अन्यान्य भोग-विलासके प्रभूत उपकरणोंका भोग करते लज्जा नहीं आती और अब भी वे स्वयंको बापूका अनुयायी कहनेका दम भरते हैं। इससे बढ़कर और विडम्बना क्या हो सकती है।

'किस्सा कुर्सीका'

कुर्सी! तुझपर जो भी बैठता है फिर तुझे वह छोड़ना ही नहीं चाहता और तेरे लिए अपने सब आदर्श सिद्धांत तथा जनतासे किए

गए वादे प्रतिज्ञाएं सब कुछको भुलाकर तेरे साथ चिपके रहना चाहता है। किन्तु, हम फिर चेतावनी दिए देते हैं कि राष्ट्रका कल्याण नेहरूकी भोगवादी नीतिको अपनानेसे नहीं, भारतीय त्यागवाद (जिसका प्रचार बापूने किया था) को अपनाकर ही होने वाला है। जनता-पार्टीके शासनसूत्रधार अब भी चेत जाएं और निष्ठापूर्वक बापूके मार्गको अपना लें। इसीमें उनका और राष्ट्रका कल्याण होने वाला है, अन्यथा निकट भविष्यमें उनकी भी वही दुर्गति होगी जो भ्रष्ट कांग्रेसियोंकी हुई थी। जनता यही कहेगी कि कांग्रेसने तो तीस वर्ष शासन चलाया, पर कुर्सीके भूखे ये जनता-पार्टीके नेता ३० महीने भी न चला पाये। अभी गत जून मासके सहयोगी 'लोकालोक' ने (वर्ष ८ अङ्क ३ में पृष्ठ २-३ पर) अपना सम्पादकीय 'किस्सा कुर्सीका' शीर्षकसे लिखा है उसे हम यहां उद्धृत कर रहे हैं—

"विगत सत्ताधारियोंके कुर्सीके किस्से अब कोई रहस्य रोमांचकी बात नहीं रही, समाचार पत्रों और हिन्दी अंग्रेजीकी अनेक पुस्तकोंके माध्यमसे जनताके समक्ष आ चुके हैं। अनेक आयोगोंकी रिपोर्टों और अदालतमें चल रहे मामलोंसे भी इनकी जानकारी जन-जनमें पहुँच चुकी है और पहुंच रही है। कुर्सी के दीवानोंकी जब तिहाड़ जेलमें दुर्भाग्यपूर्ण असंभावित मुलाकात हुई तो कहा जाता है माँने बेटेको हौंसला देते हुए कहा था—'बेटे! यह तुम्हारा राजनीतिक पुनर्जन्म है। घबराना नहीं, तुम्हारे नानाजी तो वर्षों जेलमें रहे।' परन्तु, बेटेको ढाढ़स बँधाते माँ स्वयं द्रवित हो उठी, तब भू०पू० शहजादेने रुमाल निकालकर उनकी आँखें पोंछते हुए कहा—'मम्मी! आप वैसे ही दिल छोटा कर रही हैं, मुझे यहां सिर्फ एक मास ही तो रहना है।'

किस्सा कुर्सीका एक ऐसा चिरन्तन शाश्वत सत्य है जिसकी परिधिमें आकर कोई भरत जैसा भाग्यशाली व्यक्ति ही उन्मत्त होनेसे बच पाता है। साम्प्रतिक सत्ताधारी जनतापार्टी के अकुर्सीस्थ नेताओंने कुर्सी हथियानेके लिये कभी हिमाचलमें तो कभी हरियाना बिहार व उत्तरप्रदेशमें जो हायतोबा मचा रखी है, जनकल्याणकी भावनाको ताक पर रखकर अपना पेट पीटते हुए जो अभद्र उछल कूदका प्रदर्शन कर रहे हैं उसे देखकर शर्म भी शर्मा जाती है।

आज पार्टीमें विद्यमान पाँचो घटक जिन की पृथक्-पृथक् सत्ता अतीव नगण्य और उपेक्षणीय है, राष्ट्रहितकी उपेक्षा करते हुए भ्रमरकी नांई कुर्सीके चारों ओर नाच दिखा रहे हैं। प्रत्येक विधायक मिनिस्टर बननेके लिये लालायित है, प्रत्येक मिनिस्टर मुख्यमंत्री पदका उम्मीदबार है, प्रत्येक मुख्यमंत्री केन्द्रमें पहुंचनेकी आकांक्षासे पीड़ित है और प्रत्येक केन्द्रीय मंत्री अन्दर ही अन्दर अपनेको प्रधान-मंत्री बनानेके लिए हाथ पांव मार रहा है। इस उपहासास्पद दौड़का कोई अन्त भी है?

कुर्सीकी इस आराधनामें पार्टीके नेता इतने तल्लीन हैं कि उन्हें यह स्मरण भी नहीं कि उन्होंने राजघाट पर कोई शपथ ली थी गांधीजीके मार्ग पर चलनेकी, जनताको स्वच्छ प्रशासन देने और स्वयंको सादगीके जीवनमें ढालनेकी। डेढ वर्ष बीत गया इन बातोंको, परन्तु, मंत्रीगणोंकी शाही जीवन पद्धतिमें इंच

मात्रका अन्तर नहीं, वही बीघोंमें फैली एयर-कण्डीशन शानदार कोठी-बंगले हैं, वही चमचमाती कारें हैं, नौकरचाकरोंका वही हजूम है। एक सर्वेक्षणके अनुसार सन् ७६ में उत्तर-प्रदेश राजभवन पर १२ लाख ७७ हजार रु० खर्च हुआ था, सन् ७७ में १३ लाख ६९ हजार और इस वर्षमें इस व्ययके और भी बढ़ जाने की सम्भावना है। एक केन्द्रीय मंत्रीके बारेमें पिछले दिनों समाचार पत्रोंमें यह प्रकाशित हुआ कि अपने एक दौरेके समय उन्हें रायबरेली में लंच करना था तो उनकी फरमायशके अनुसार लखनऊ जीप भेजकर किसी विशेष होटलसे 'कढी' मँगवाई गई—तब उनका भोजन हुआ। जनताने 'उन' लोगोंके कुर्सीके किस्से पढ़े, अब इनके भी किस्सोंका संग्रह शुरु हो गया है, कल इन्हें पढ़ा जायगा। क्या ये ध्यान देंगे?" (लोकालोक)

इस कुर्सीके लिए जनतापार्टीके शीर्षस्थ नेताओंने एकदूसरेके दोषोंको बढ़ाचढ़ाकर कीचड़ उछालना प्रारंभ किया उससे राष्ट्र-शक्तिका ह्रास हुआ और वे जनताके कोप भाजन बन रहे हैं। अनुशासन अत्यावश्यक है, इसमें कोई दो राय नहीं। परन्तु, जहां राष्ट्रहितको ताकमें रख कर केवल अहं या आत्महठको व्यक्तिगत प्रतिष्ठाका प्रश्न बनाकर एकदूसरे को नीचा दिखानेके लिए अनुशासन आदर्श या सिद्धान्तकी आड़ ली जाती है--वहां न राष्ट्रका हित है और न व्यक्तिविशेषका ही।

देशका दुर्भाग्य है कि इस चिरन्तन सत्य को वर्तमान जनतापार्टीके नेता समझ नहीं पा रहे। कांग्रेसके शासनमें कई बार सरदार पटेल और श्रीनेहरूजीमें मतभेद हुए। सरदार और मौलाना आजादमें भी झगड़े हुए, पर उन नेताओंने कभी खुल्लमखुल्ला एक दूसरेके विरुद्ध समाचार पत्रों या सार्वजनिक वक्तव्यों में आरोप नहीं लगाये थे। ये नेतागण अपने झगड़े राष्ट्रपिता बापूके पास ले जाते थे और वे सबको समझाबुझाकर मामला ठीक कर दिया करते थे। लोगोंको यह ज्ञात ही न हो पाता था कि उनके आपसमें वैमनस्य या खींचातानी है। क्या वर्तमान शासन सूत्र-संचालकगण अपने आपसी झगड़ोंको राष्ट्र-नायक श्रीजयप्रकाश बाबू या वयोवृद्ध नेता आचार्य कृपलानीके माध्यमसे सुलझा नहीं सकते? यदि उन्होंने अपने अहंके मदमें ऐसा न किया तो जनताजनार्दन उन्हें राष्ट्रद्रोही मानकर भविष्यमें कभी उनपर विश्वास नहीं करेगा।

अनुशासनके सम्बन्धमें

सहयोगी दैनिक 'वीरप्रताप' के ये विचार भी पठनीय हैं--

जनता पार्टीकी वर्तमान रस्साकशीमें चाहे कोई भी जीते, यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि जहां तक अनुशासनहीनताका प्रश्न है चौ० चरणसिंह व उनके साथी उतने गुनाहगार नहीं; जितने कि जनता पार्टीके प्रधान श्री चन्द्रशेखर व उनके इर्द-गिर्द मंडराने वाले पुराने कांग्रेसी हैं। इन लोगोंको अनुशासनका ख्याल अब आया, जब पिछले मास कुछ लोगोंने श्री चन्द्र-शेखरको पदसे हटानेकी मांग की। लेकिन लगभग एक वर्ष हुए इन्हीं लोगोंसे प्रेरणा लेकर हिमाचल प्रदेशमें कु० श्यामाने मन्त्रि-मण्डलमें रहते हुए अपने मुख्यमन्त्री पर गम्भीर

आरोप लगाए थे। उस वक्त अनुशासनकी चिन्ताने पार्टीके प्रधान व उनके साथियोंको तनिक भी न सताया।

जब हरियाणामें श्रीमती सुषमा स्वराजने खुले आम मुख्यमन्त्री पर आरोप लगाए तब भी श्री देवीलालको उन्हें मन्त्रिमण्डलसे निकालनेकी अनुमति नहीं दी गई और अनुशासन लागू करनेके स्थान पर समझौता करवा दिया गया।

जब हरियाणाके कुछ असन्तुष्टोंने करनाल लोकसभा उपचुनावमें जनता पार्टीके उम्मीदवारको पराजित करवानेकी पूरी कोशिश की और चौ० देवीलालने उन्हें पार्टीसे निकालना चाहा, तब भी अनुशासनकी धारणा कहीं घास चरने गई हुई थी।

जब कुछ भूतपूर्व युवा तुर्कोंने हरिजनों पर किए गए कथित अत्याचारोंको लेकर बारबार उत्तर-प्रदेशके मुख्यमन्त्रीकी सार्वजनिक आलोचना की, 'अनुशासन' उस समय भी न जाने कहां खोया हुआ था।

जब आजमगढ़ उपचुनावके समय अनेक वरिष्ठ नेताओंने वहां जाकर जनता पार्टीके उम्मीदवारके पक्षमें प्रचार करनेसे इन्कार कर दिया क्योंकि उन्हें कांग्रेसकी हारकी अपेक्षा चौ० चरणसिंह द्वारा चुने हुए जनता उम्मीदवारकी पराजय अधिक पसन्द थी, तब भी पार्टी प्रधान व पार्टी हाईकमानने 'अनुशासन' को लागू नहीं किया।

अनुशासन सख्तीसे लागू करनेका मौका तो केवल अब आया जब कुछ नेताओंने भूतपूर्व गृहमंत्रीसे टक्कर लेनेकी ठान ली। इसमें उन्हें प्रधानमन्त्रीका सहयोग मिला। श्री मोरारजी देसाई ऐसे मामलोंमें बड़े पक्के हैं, लेकिन हैरानी केवल इस बातकी है कि जब श्री शान्ताकुमार, श्री देवीलाल, श्री रामनरेश यादव व चौ० चरणसिंह जैसे लोग अनुशासन लागू करनेकी मांग कर रहे थे तब अनुशासनकी भावनाको वे भी भूले हुए थे। ऐसा प्रतीत होता है जनता पार्टीमें अनुशासन केवल एक पक्षके लिए है। दूसरे पक्षको इसका उल्लंघन करनेकी खुली छूट मिली हुई है।"

-:★:-

शकुनावली

श्रावण

सावन बदी एकादशीको यदि वर्षा होय।
संवत् अच्छा होयगा, संशय करो न कोय॥
सावन शुक्ला अष्टमीके दिन प्रातःकाल।
सूरज पर बादल छवैं वर्षा करै निहाल॥

भाद्रपद

दोयज भादव वदीमें घटाटोप आकास।
अन्न खरीदो खूब ही तेजी फागुण मास॥
भादव शुक्ला सप्तमी बादल गाज न बीज।
यह लक्षण दुर्भिक्षका मँहगो हों सब चीज॥

आश्विन

आश्विन लागत चौथको बादल निकसे सूर।
क्षेम कुशल आरोग्यता वर्षा हो भरपूर॥
बादल वर्षा बीजली बिजयादशमी देख।
उर्द मूंग तिल तेलमें तेजी रहे विशेष॥
(भविष्यभारती)

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र

सिंह राशिके शनिका जनतापार्टी पर प्रभाव

स्वतन्त्र भारतका ३२वाँ वर्षलग्न और खग्रास चन्द्रग्रहण

—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी—

कर्क और सिंह राशिके शनिका प्रभाव मैं अपने 'श्रीविश्वविजयपंचांग' और 'ज्योतिष्मती' पत्रिकामें विगत ४ वर्षोंसे बराबर लिखता आ रहा हूं । उसका अनुभव पाठक कर चुके हैं। गत वर्ष २० संख्या ४ की ज्योतिष्मती' जुलाई-अक्टूबर १९७७ में पृष्ठ १४-१५ १६ पर ७ सितम्बर ७७ से प्रवेश होने वाले सिंहके शनिका जनता पार्टीके जन्मलग्न और स्वतन्त्र भारतके ३१वें वर्षलग्न पर जो स्पष्ट विचार व्यक्त किये थे वे अधिकांशमें अक्षरश: यथार्थ घटित होते जा रहे हैं । पाठकोंके स्मरणार्थ एक वर्ष पूर्व लिखित उन विचारोंकी कुछ पंक्तियां यहां उद्धृत की जा रही हैं—

" ... आगे सिंहका शनि जनता सरकारको बालारिष्ट योगकारक रहेगा। यद्यपि इन पांच वर्षोंमें गुरुकी महादशामें जनता सरकारके गिरनेका कोई कारण नहीं है, तथापि सिंहका शनि जनता पार्टीके लिए अग्निपरीक्षा कारक सिद्ध होगा। इसमें अन्त:कलह पनपेगा। यत्रतत्र मंत्रिमण्डलीय गतिरोध उभरेगा। शनि अनुदार तत्त्व, संकुचित स्वार्थी मनोवृत्ति वाले वर्ग, श्रमिकवर्ग और हरिजनोंका प्रतीक है, अत: इस मनोवृत्तिके मानवों द्वारा राष्ट्रविरोधी कार्य होंगे। जब-जब शनिके साथ मंगल राहु केतु हर्षल नेपच्यूनका अशुभ योग दृष्टि सम्बन्ध बनेगा, तब अशान्तिकारक घटनाएं अधिक होंगी। दि० १२ अक्टूबर ७७ से २५ जुलाई ७८ तक मंगल कर्क सिंह राशिमें शनिसे द्विर्द्वादश युति योग बनावेगा । इस अवधिमें कुछ अकल्पित घटनाएं घटेंगी ।"

"दशमेश बुध शनि राहुकी कर्तरीमें है और सूर्य चन्द्र अष्टम तथा मुंथा १२वें होनेसे केन्द्र में प्रधानमन्त्री और प्रान्तीय मुख्यमंत्रियोंके सामने नित्य-नयी समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी। निष्ठावान् राष्ट्रपुरुषों या आदर्शवादी मंत्रियोंकी शनि टांग खींचेगा, फलत: केन्द्र और प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलोंमें अन्त:कलह अविश्वास का कारण बनेगा।"

"......... आगे सिंहके शनिमें जनता पर्टीमें भी दरार पड़ेगी। कुछ प्रभावशाली व्यक्ति पार्टी छोड़कर नया दल बनावेंगे। तीन वर्ष बाद कन्याके शनिमें जनता पार्टीका शुद्धिकरण होकर सुदृढ़ संगठन बनेगा। सिंहके शनि में भारतमें कुछ प्राकृतिक एवं राजनैतिक अकल्पित घटनाएं घटित होंगी।"

"इस वर्ष लग्नमें देवगुरु लग्नेश होकर सप्तम भावमें दैत्यगुरु शुक्रके साथ है। वर्षेश शुक्र कूटनीतिज्ञ है और गुरुके साथ प्रतिस्पर्धी है। जनतापार्टीके जन्मलग्नसे वर्षलग्नमें षडष्टक योग है अत: इस वर्ष दुष्टराजनीतिके दावपेच

चलेंगे। एकदूसरेके विरुद्ध भयंकर दोषारोपण और अन्तर्बाह्य षड्यंत्र रचेंगे। गुरु-शक्तिप्रधान सदाचारी चरित्रवान् आदर्शराष्ट्रपुरुष धूर्त राजनीतिज्ञोंसे सताये जावेंगे। परंतु वर्षलग्नेश गुरु राज्येश बुधकी राशिमें उच्चाभिलाषी है और जनतापार्टीका जन्मलग्नेश चन्द्रमा स्वराशिस्थ है, एवं मुन्थेश मंगल शत्रु संहारक बनकर षष्ठ स्थानमें बैठा है, अतः अन्ततोगत्वा सत्वगुण प्रधान आदर्श राष्ट्रनायकोंकी विजय होगी। विषम परिस्थितियोंके झंझावातसे जनता शासन अपने बुद्धिकौशल आत्मबल एवं उदारनीतिसे पार हो जावेगा। आगे ३ वर्ष बाद कन्याराशिके शनिमें जनता सरकार अधिक लोकप्रिय बनकर विश्वमें अपना प्रमुख स्थान प्राप्त करेगी। पूर्व उत्तर और दक्षिण भारतके ३ प्रदेशोंमें मन्त्रिमण्डलीय गतिरोध और केन्द्र से मनोमालिन्य वर्षके उत्तरार्धमें बढ़ेगा। फलतः वर्षान्त तक कन्याके शनिमें दो प्रान्तोंमें राष्ट्रपति शासन लागू करनेकी स्थिति बनेगी।"

शनिमंगलका चमत्कारी दुष्प्रभाव

जैसा ऊपर कहा गया है कि—"दि० १२ अक्टूबर ७७ से २४ जुलाई ७८ तक मंगल कर्क सिंह राशिमें शनिसे द्विर्द्वादश युति योग बनावेगा। इस अवधिमें कुछ अकल्पित घटनाएं घटेंगी।" तदनुसार गत अक्टूबर माससे आगे भयंकर यान दुर्घटनाएं हुईं जिनमें भारतके सौभाग्यसे प्रधानमंत्री बालबाल बचे। पर, पांच होनहार नवयुवक अधिकारियोंके प्राण गये। तदनन्तर दिल्ली-अहमदाबाद एक्सप्रेसकी भयानक रेल दुर्घटनामें श्री प्रकाशवीर शास्त्री जैसी विभूतियोंके प्राण गये। १-१-७८ को सायकालको शम्राट् अशोक नामक मिग वायुयानकी भयानक रोमांचकारी दुःखद दुर्घटनासे भारतको अपूरणीय क्षति हुई है। उक्त शनि मंगलके अशुभ योगमें ही दक्षिण भारत दिल्ली पंजाब अमृतसर आदि अनेक स्थानोंमें अभूत पूर्व झंझावात तूफान एवं कहीं अग्निकाण्ड, तो कहीं साम्प्रदायिक राजनैतिक तनावसे अभूत पूर्व घटनाए घटित हो चुकी और होती जा रहीं हैं। आजसे पूरे एक वर्ष पूर्व वर्तमान सं० २०३५ वि० के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में पृष्ठ १८ पर लिखा था—

"..........अब इस नये वर्ष सं० २०३५ वि० में भी शनि ग्रह सिंह राशिमें ही रहेगा। इस वर्षमें दो बातें और विशेष हो गई हैं वे यह कि एक तो इस वर्षका अधिपति या राजा शनि बना है, एवं दूसरे वर्षेश या जगल्लग्न मकरका स्वामी भी शनि ही है। वर्षारम्भ और वर्षान्तमें शनि वक्री है, अतः विश्वभरमें शनि इस वर्ष अपनी क्रूरताका परिचय दिये बिना नहीं रहेगा।" इत्यादि।

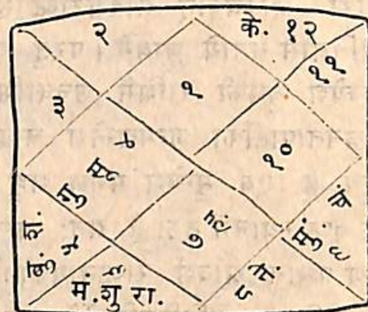
गत २ जून ७८ से मंगल भी सिंह राशिमें शनिके साथ आ गया है, तबसे संसारमें यत्रतत्र प्रकृतिप्रकोप दुर्घटनाएं और राजनैतिक सामाजिक तनाव बढ़ रहे हैं। आज ये पंक्तियां लिखने तक (५ जुलाई ७८) भारतमें प्रधानमंत्री और गृहमंत्रीके वैमनस्यने जनतापार्टीको झकझोर कर अग्निपरीक्षाका अवसर उपस्थित कर दिया है। राष्ट्रहितैषी हर सम्भव प्रयत्न से वर्तमान अवांछनीय स्थितिको सुलझानेके प्रयत्नमें हैं। १७ जुलाईको किसान रैलीके निर्णयसे स्थिति और जटिल बन गई है। मेरे

विचारमें वर्तमान स्थितिमें उग्रता सिंह राशिके मंगलमें कर्क-सिंह-कन्या नवमांशमें मंगल रहेगा तब तक रहेगी। गत २० जूनसे मंगलने कर्क नवमांशमें, २७ जूनको सिंह नवांशमें और २ जुलाई ७८ को कन्या नवांशमें प्रवेश किया है। आगामी ८ जुलाई ७८ को तुलानवांशमें प्रवेश करेगा, एवं ६ जुलाईको सिंह राशिस्थ दो विध्वसक शत्रुग्रहों—शनि-मगलके साथ नीतिनिपुण शुक्र शुभग्रह आ जावेगा, अतः विश्वास किया जा सकता हैं कि ८ जुलाईके आसन्न वर्तमान विस्फोटक स्थितिका समाधान निकल आवेगा और १७ की रैली स्थगित हो जावेगी। गृहमंत्री चौ० चरणसिंहजी निष्ठावान् राष्ट्रभक्त हैं, जनतापार्टी उनके पूर्ण सहयोगसे बन पाई, वे इसके निर्माता हैं, अतः वे ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे जिससे राष्ट्रकी प्रतिष्ठा को धक्का लगे। मुझे श्री चौ० चरणसिंहजी की राष्ट्रीय भावनाओंको समझने और उनके स्वभावसे परिचित होनेका एकाधिक बार अवसर मिला है, उस धारणा एवं उपर्युक्त ग्रहस्थितिके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि संकटका समाधान हो सकेगा। आगे सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

स्वतन्त्र भारतका ३२वां वर्षलग्न

सं० २०३५ वि० श्रावण शु० १० सोमवार दि० १४ अगस्त १९७८ को सूर्योदयात् इष्ट घटयादि ४२।४६ भारतीय स्टेण्डर्ड टाइमसे रात्रि ११ बजे सू० ३।२८ मेष लग्नके १९ अंश पर भारतीय स्वतंत्रताके ३१ वर्ष पूर्ण होकर ३२वां वर्ष प्रवेश होगा। सदाकी भांति स्वतन्त्रताका उत्सव और राजकीय अवकाश १५ अगस्त मंगलवारको मनाया जावेगा। उस समयकी ग्रहस्थिति यह है—

वर्ष-लग्न



जन्म-लग्न



जन्मलग्नेश शुक्र और वर्ष लग्नेश मंगल दोनों षष्ठस्थ हैं और समान अंशोंमें (१३ अंश) योग करते हुए राहुसे पीड़ित हैं। जन्मलग्न वर्षलग्नका द्विर्द्वादशयोग है। राज्येश शनि पंचममें नवमेश गुरुसे द्विर्द्वादशयोग बना रहा है। वर्ष भर शनि सिंह राशिमें रहेगा। जनता पार्टीका जन्मलग्नेश चन्द्रमा मुन्थाके साथ शनि मंगलसे दृष्ट है अतः यह वर्ष भी भारतीय जनता और शासनसूत्र-संचालकोंके लिए विशेष सुख शान्तिकारक नहीं है।

यथा—"इष्टस्वजन विद्वेषं भयं भूपालजं भयम्।
चतुष्पदमनुष्याणां भयं सूर्यचतुर्थगे ॥"
"महाभयं गृहेकष्टं वर्षे षष्ठगतो भृगौ।"

केन्द्रमें प्रधानमंत्री और प्रान्तीय मुख्य-मंत्रियोंके सामने नित्य नयी समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी । निष्ठावान् राष्ट्रपुरुषोंकी शनि टांग खींचेगा । लोकसभा विधानसभाओंमें अभूतपूर्व हंगामें होंगे । निपक्षी दल तो शासक दल पर आक्रमणकी ताकमें रहेगा ही, साथ ही जनता-पार्टीमें भी अन्तःकलह पनपेगा । नये वर्ष सं० २०३६ वि० की वर्ष प्रतिपदाका क्षय है और नये वर्षका राजा बुध नपुंसक ग्रह एवं मत्री शनि है । १७ नवम्बर ७८ से राहु भी सिंहमें शनिके साथ हो लेगा और आगे भाद्रपद मास (अगस्त-सितम्बर १९७९) में सिंह राशि में सू. बु. गु शु. श. रा. का षड्ग्रही योग बन रहा है । यह संसारके लिए अकल्पित संकटका द्योतक है । प्रकृतिप्रकोप, भूकम्प, बाढ़, तूफान, अग्निकाण्ड और यान दुर्घटनाओंसे यत्रतत्र हानि होगी । पश्चिमी देश यूरोप अमेरिका अरबराष्ट्र रसिया चीन जापान इस कुयोगसे अधिक प्रभावित होंगे । भारत भी अछूता न रहेगा । जनतापार्टीके लिए यह वर्ष भी अग्नि-परीक्षाकारक सिद्ध होगा । पारस्परिक वैमनस्य पूर्ण रूपेण दूर नहीं होगा । वर्षान्तमें किसी वयोवृद्ध नेताका अवसान होगा । और कोई वरिष्ठ मंत्री दुर्घटनाग्रस्त होंगे या स्वास्थ्य बिगड़ेगा । यान दुर्घटनाएं अधिक होंगी ।

शुभ योग

वर्षलग्नमें नवमेश गुरु सर्वाधिक बलवान् उच्च राशि वर्गोत्तमांशमें केन्द्रस्थ पञ्चमेश सूर्यके साथ है, यह सब प्रकारकी सम्भाव्य आपत्तियोंसे पार लेजाकर राष्ट्रको प्रगतिपथ पर अग्रसर करेगा । चंद्रमुन्था और सूर्य गुरुकी शुभस्थितिसे उत्पादन में वृद्धि होगी । कृषिक्षेत्र व यातायात साधनों में पर्याप्त प्रगति होगी । देवगुरु न्यायप्रिय हैं और सूर्य मंगल मित्रक्षेत्री हैं, अतः न्यायपालिका कार्यपालिकाएं व्यवस्थित कार्य सम्पादन करेंगी । अपराधियोंको उचित दण्ड दिया जावेगा । धनेश शुक्र लग्नेश मंगलके साथ षष्ठस्थ है यह अर्थतंत्रमें संकटका द्योतक है । मँहगाई दूर नहीं होगी । श्रमजीवियोंमें असन्तोष बढ़ेगा । ग्रहणकाल और चतुर्ग्रही षड्ग्रही योगमें कहीं हिंसक उत्पातकी संभावना है ।

वर्तमान और आगामी ग्रहस्थितिको देखते हुए मुझे अभी विश्वशान्तिकी आशा नहीं है । गतवर्ष मैंने अपने वर्तमान २०३५ वि० की दैवज्ञकी दृष्टिमें एक चेतावनी दी थी उसे यहां उद्धृत किया जा रहा है—

"दैवज्ञके नाते अब मैं चेतावनी देना चाहूँगा कि आगामी एक युग या १२ वर्षकी कालावधिमें (काल-नियामक शनिदेवके धनुः राशिमें रहने तक) संसारमें अकल्पित भले-बुरे परिवर्तन और कुछ राजमुकुट भूलुण्ठित होने वाले हैं । वर्तमान भारतके केन्द्रीय और प्रान्तीय प्रधान पुरुषोंने यदि लोभमोह स्वार्थ एवं रागद्वेषग्रस्त होकर बापूकी समाधि पर की गई अपनी प्रतिज्ञाको भुला दिया तो उनकी भी वही दुर्गति होगी जो आज भूतपूर्व प्रधान पुरुषोंकी हो रही है ।"

खग्रास चन्द्रग्रहण

भाद्र. शुक्ला पूर्णिमा शनिवार १६-१७ सितम्बर १९७८ को चन्द्रग्रहण होगा । यह

सम्पूर्ण भारत, नेपाल बंगला देश, पाकिस्तान और श्रीलंकामें खग्रास दिखाई देगा। ग्रहणका स्पर्श एशिया, हिन्द महासागर, अफ्रीकाके पूर्वी भाग आष्ट्रेलिया पूर्वी यूरोप, न्यूजीलेण्डमें दिखाई देगा। इस ग्रहणका मोक्ष उत्तर पूर्वी भाग (ईशान कोण) को छोड़कर शेष एशिया महाद्वीप, पश्चिमी आस्ट्रेयिया, हिन्द-महासागर यूरोप, अफ्रीका, दक्षिणा अमेरिका महाद्वीपके सुदूर पूर्वोत्तरीय (ईशान) भाग तथा पूर्वी अन्धमहासागरमें दिखाई देगा। १६-१७ सितम्बर ७८ को समस्त भारतमें होने वाले इस खग्रास चन्द्रग्रहणका भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम में स्पर्शादिकाल इस प्रकार है :—

	घं. मि.	तारीख
स्पर्श (ग्रहण प्रारम्भ)	२२-५०	१६ सि.
सम्मीलन (खग्रास प्रारंभ)	२३-५४	१६ सि.
ग्रहण मध्य	०-३४	१७ सि.
उन्मीलन (खग्रास समाप्ति)	१-१४	१७ सि.
मोक्ष (ग्रहण समाप्ति)	२-१८	१७ सि.

पर्वकाल (ग्रहणका कुल समय) ३ घण्टे २८ मिनटका है। परम ग्रास १.३३ (चन्द्र-बिम्ब=१.००)।

राशिफल

यह चन्द्रग्रहण पू.भा. नक्षत्र और कुम्भ मीन राशिको बिशेष नेष्ट फलदायक है। वृषभ, मिथुन, तुला, मकर राशियोंको शुभ। कर्क, कन्या, वृश्चिक राशियोंको मध्यम और मेष, सिंह, धनु राशियोंको अशुभ है। अशुभ राशि राशि नक्षत्र वाले व्यक्ति ग्रहणका दर्शन न करें। कमरेमें शुद्धासन पर बैठ भगवद्भजन इष्टदेव स्मरण करें और रात्रि १-३० के बाद यथाशक्ति अन्न, वस्त्र घृत, छायापात्र दान करें।

विशेष फल—कन्या संक्रान्ति प्रवेश काल में यह चन्द्रग्रहण हो रहा है। सूर्य, शनि-मंगलके मध्यमें जा रहा है यह आगे संसारके लिए भयप्रद है। पश्चिमी देश यूरोप, अमेरिका और पूर्वमें चीन, जापान आदिमें कहीं राज्य-क्रान्ति, भूकम्प, प्रकृतिप्रकोपादिसे हानि होगी। तीन मासमें प्रधान पुरुषकी मृत्यु और यान दुर्घटनाएं अधिक होंगी, राजनैतिक, आर्थिक स्थिति बिगड़ेगी। भारतमें भी कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टिसे हानि होगी। काली वस्तुएं उड़द, अफीम, बाजरा, तिल, तेल, सरसों,, लोहादि, धातु पदार्थ तेज होंगे। चौर, ग्वाला, वैश्य, जलजीवी-नाविक मल्लाह, वैद्य, ज्योतिषी, अध्यापक और शासनसूत्र संचालकों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। लाल पीले वस्त्र, तांबा, लालमिर्च, हल्दी, गुड़ खांड, चनाके संग्रहसे आगे ३ मासमें लाभ होगा। ग्रहणकालमें और तीन दिन आगे पीछेकी अवधिमें जहां बादल वर्षा होवे वहां अनिष्ट फल नहीं होगा।

ग्रहण वेध (सूतक)—इस चन्द्रग्रहणका वेध १६ सितम्बरको मध्याह्नके बाद १-५० पर प्रारम्भ होगा। ग्रहण वेधमें धार्मिकजन भोजनादि न करें। बाल, वृद्ध, रोगियके लिए निषध नहीं है।

लेखकोंसे निवेदन

आगामी 'नववर्षाङ्क' के लिए जो लेख ३१ अगस्त १९७८ तक प्राप्त हो जावेंगे वे ही छप सकेंगे। लेख स्पष्ट सुवाच्य अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखे होने चाहिये। टाइप की हुई अस्पष्ट कार्बन कापी भी स्वीकृत न होगी। विलम्बसे आये लेख छप नहीं सकेंगे। सम्पादक

मुष्टिक योग

अनुभूत योग माला (उत्तरार्ध)

[लेखक :—वैद्य श्री वाचस्पति शर्मा]

श्रियं स दद्याद् भवतां पुरारिर्यदङ्गतेजः प्रसरे भवानी ।
विराजते निर्मल चंद्रिकायां महौषधीव ज्वलिता हिमाद्रौ ॥
नत्वा नारायणीं देवीं स्मृतिमात्रार्तिनाशिनीम् ।
वक्ष्येऽहं योगमालाया उत्तरार्धं सुखावहम् ॥
यदि एक अद्भुत बात मुझको ज्ञात कोई होगई ।
तो हाय मेरे साथ ही संसार से वह खोगई ॥

सर्व व्रणहर मलहम

व्रण तो प्राणी मात्रके पीछे लगा है। 'व्रणगात्र अवचूर्णने' से व्रण शब्दकी उत्पत्ति है। व्रण मिट जाने पर भी व्रण-वस्तु (निशान) आजीवन नहीं मिटता है। संसारमें ऐसा कोई प्राणी नहीं होगा जिसके व्रण-घाव-फोड़ा-फुन्सी न हो। जिस प्रकार ज्वरका आना सबको अनिवार्य है उसी प्रकार ज्वरके पश्चात् व्रण ही एक ऐसा रोग है जो सभी प्राणियों पर समान रूपसे अप्रत्याशित अतिथिके समान दयावान् हैं। अस्तु, स्वागतार्थ अधोलिखित मलहर मधुपर्कके समान प्रस्तुत करें।

(१) श्वेत वेसलीन १२५ ग्राम, (२) शुद्ध हिङ्गुलु ६ ग्राम, (३) मुरदासिंग २ ग्राम, (४) सौभाग्य पुष्प २ ग्राम, (५) फिटकड़ी २ ग्राम, (६) सिन्दूर २ ग्राम, (७) कर्पूर २ ग्राम, (८) रस पुष्प २ ग्राम। सब वस्तुओंको वेसलीनमें डालकर अच्छी तरह मिला लेवें। पश्चात् सभी प्रकारके व्रणों पर निश्शङ्क होकर प्रयोग किया जा सकता है। चाहे वह विपादिका हो या जननेन्द्रियों के व्रण।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

जुलाई १९७८

ता. २० गुरुवार–व्यासपूजा गुरुपूर्णिमा।
२३ रविवार–श्रीगणेश ४व्रत चद्रोदय २१।४६
३० रविवार–कामदा एकादशी व्रत।

अगस्त १९७८

ता. १ मंगलवार–भौमप्रदोषव्रत श्रीतिलक ज०।
३ गुरुवार–हरियाली अमावस।
६ रविवार–चन्द्रदर्शन मु० ३०
७ सोमवार–मधुश्रवा ३, सिधारातीज।
८ मंगलवार–वरद चौथ वैनायकी ४
९ बुधवार–नागपंचमी।
११ शुक्रवार–गो० श्री तुलसीदास जयन्ती।
१२ शनिवार–मेला श्रीनयनादेवी चिन्त्यपूर्णी
१४ सोमवार–पुत्रदा ११ व्रत स्मार्त्तोंका।
१५ मंगलवार–भारतीय स्वतन्त्रता दिवस, पुत्रदा ११ व्रत वैष्णवोंका।
१६ बुधवार–प्रदोषव्रत सिंहमें सूर्यसंक्रान्ति।
१८ शुक्रवार–रक्षाबन्धन ऋषितर्पण सत्यव्रत।
२१ सोमवार–कज्जली ३ श्रीगणेश ४ व्रत।
२५ शुक्रवार–श्रीकृष्णजन्माष्टमी वत चन्द्रोदय स्टे टा. २३।४८
२६ शनिवार–गोकुलाष्टमी नन्दमहोत्सव।
२९ मंगलवार–अजा एकादशी व्र. पर्यूषणपर्व
४० बुधवार–प्रदोषव्रत वत्सद्वादशी।

सितम्बर १९७८

ता. २ शनिवार–शनैश्चरी कुशोत्पाटिनी अमावस
४ सोमवार–चन्द्रदर्शन मु० ४५
५ मंगलवार–हरितालिका ३, ईद उल्फितर।
६ बुधवार–कलंक ४चौथ पत्थर चौथ।
७ गुरुवार–ऋषिपंचमी जैन संव्वत्सरी।
८ शुक्रवार–श्रीबलदेव ६ मेला ब्रजमंडल।
१० रविवार–श्रीराधाष्टमी, दूर्वा ८
११ सोमवार–श्रीचन्द्र ९ उदासीन सम्प्रदाय।
१३ बुधवार–पद्मा जलझूलनी एकादशी व्र. मेला श्रीचारभुजागढबोर (मेवाड़ राज०)
१४ गुरुवार–प्रदोषव्रत, श्रीवामनजयन्ती, श्री भुवनेश्वरी जयन्ती, मेला अम्बाला।
१५ शुक्रवार–अनन्तचतुर्दशी व्रत।
१६ शनिवार–कन्यामें सूर्य संक्रान्ति सत्यव्रत प्रोष्ठपदी पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण।
१७ रविवार–पितृपक्ष श्राद्ध प्रारम्भ।
१९ मंगलवार–श्रीगणेश ४ व्रत चं. उ. २०-१६
२८ गुरुवार–इन्दिरा ११ व्रत।
२९ शुक्रवार–प्रदोष व्रत।

अक्टूबर १९७८

ता. २ सोमवार–सोमवती अमावस्या मेला फल्गु हरियाणा, महात्मा गांधी जयन्ती सर्व पितृ अमावस्या, पितृपक्ष समाप्त।
३ मंगलवार–शारदीय नवरात्रारंभ चन्द्रदर्शन
८ रविवार–श्रीसरस्वती आवाहन ओली प्रा.
९ सोमवार–श्रीसरस्वतीपूजा महादुर्गाष्टमी मेला ज्वालामुखी तारादेवी भद्रकाली ज०
१० मंगलवार–श्रीसरस्वती बलिदान महानवमी, शस्त्रपूजा नवरात्र समाप्ति।
११ बुधवार–विजयादशमी मेला दशहरा सरस्वती विसर्जन।
१२ गुरुवार–पापांकुशा ११ व्रत, भरतमिलाप
१३ शुक्रवार–प्रदोष व्रत।
१५ रविवार–सत्यव्रत शरद्पूर्णिमा।
१६ सोमवार–श्रीबाल्मीकिजयन्ती, कार्त्तिकस्नान प्रारंभ, जैन ओली समाप्त।

आगमिक अनुसन्धानके आलोकमें–

यन्त्रविज्ञानपर एक दृष्टि (२)

[लेखक :—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी, नई दिल्ली]

यन्त्रोंके प्रकार और उनके प्रयोग

जिस प्रकार मन्त्र और तन्त्रोंके शास्त्रोंमें अनेक प्रकार दिखलाये गये हैं, उसी प्रकार यन्त्रोंके भी अनेक प्रकारोंका निर्देश शास्त्रोंमें प्राप्त होता है। विधाताकी सृष्टिमें कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसका स्वरूप यन्त्ररूप न हो। लौकिक दृष्टिसे यन्त्र एक प्रकारसे विविध पुर्जोंसे बनी मशीनके अर्थको व्यक्त करता है। कोई भी मशीन हम देखें तो उसमें कई छोटे-बड़े पुर्जे लगे होते हैं और वे मशीनकी क्रिया में किसी न किसी तरहका सहयोग करते रहते हैं। सबसे मिलकर मशीन जो कर्म करती है उसका फल एक सिद्धिके रूपमें प्राप्त होता है। इसी प्रकार शास्त्रीय यन्त्रोंको भी हम एक मशीन कह सकते हैं। ये यन्त्र अपने अन्दर छोटे-बड़े पुर्जोंके रूपमें अंक वर्ण बीज, रेखा, मन्त्र आदिको पृथक्-पृथक् या एक साथ धारण करते हैं। इनकी साधनामें की जाने वाली क्रियाओंका फल सिद्धिके रूपमें प्राप्त होकर अपेक्षित कामनाओंकी पूर्तिमें सहायक होता है।

इसी क्रियाकारित्व और फलदायकत्व तत्त्वके आधार पर सर्वप्रथम यन्त्रोंके कुछ प्रकार निश्चित होते हैं। यथा—

१. रेखात्मक यन्त्र—केवल रेखाओंके गोल, आयत, समचतुरस्र एवं अन्य कोणमूलक यन्त्रोंमें इनके बहुतसे रूप प्राप्त होते हैं। गोल आकारोंमें कमल, पुष्प और पत्रादिकी रचनाएँ और रेखाओंसे त्रिकोण, चतुष्कोण, षट्कोण, अष्टकोण बनते हैं जब कि दोनोंके योगसे अनेक आयुध आदिके आकारमें बने यन्त्र भी प्रायः उपलब्ध होते हैं।

२. आकृतिमूलक यन्त्र—देव, मनुष्य और पशु-पक्षियोंकी आकृतिमें बनाए हुए यन्त्रों का इसमें समावेश होता है। गणपति, यक्ष-यक्षिणी, मातंगिनी, घण्टाकर्ण तथा पुरुषाकार यन्त्र, गज, अश्व, वृषभ, हरिण, सर्प, भारण्ड, काक आदि पशु-पक्षियोंके यन्त्र इस दृष्टिसे स्मरणीय हैं।

इस प्रकार मूलतः रेखाओंसे निर्मित विभिन्न आकृतियोंमें बीजमन्त्र, २. मन्त्रवर्ण, ३. अंक तथा ४. मिश्र पद्धतिके प्रयोगोंसे उपर्युक्त दो पद्धतियोंके पुनः चार प्रकार विकसित हुए हैं, जिनका परिचय इस प्रकार है—

१. बीजमन्त्र गर्भित यन्त्र—देवताओंके मन्त्रोंका सारभूत रूप बीजमन्त्र होता है। रेखाओं द्वारा निर्मित यन्त्राकृतियों अथवा कोष्ठकोंमें इन बीजमन्त्रोंका लेखन करके यन्त्र की शक्तिमें अभिवृद्धि की जाती है।

२. मन्त्रवर्णगर्भित यन्त्र—प्रत्येक देवताके गुण-रूपादिके वर्णन और विशिष्ट वर्णोंके द्वारा मन्त्रका निर्माण होता है। उसी मन्त्रके वर्णों को यन्त्रमें लिखनेसे यन्त्र और मन्त्र दोनोंकी

विशिष्ट शक्तियोंका एकत्र समावेश ऐसे यन्त्रों में हो जाता है।

३. अङ्कगर्भित यन्त्र--देवताओं, वर्णों अथवा अन्य सांकेतिक रूपमें स्वीकृत अंकोंको विशिष्ट पद्धतिसे लिखकर ऐसे यन्त्र बनाए जाते हैं। इन यन्त्रोंमें १ से ९ तकके अंकोंसे बने यन्त्र तथा किसी एक निश्चित संख्याके पूरक यन्त्र प्रमुख हैं।

४. मिश्र विधिमूलक यन्त्र—उपर्युक्त विधियोंको ही कहीं दो विधियोंका और कहीं तीनों विधियोंका मिश्रण करके भी यन्त्र बनाए जाते हैं। अतः कहीं मन्त्र-वर्ण, कहीं बीज-मन्त्र तो कहीं अंक अथवा तीनों एक साथ लिखकर आकृतियोंको पूर्ण किया जाता है।

शास्त्रीय प्रयोगोंकी दृष्टिसे अन्य सात प्रकार—यन्त्रोंके शास्त्रीय दृष्टिसे जो प्रयोग होते हैं उनके **सात प्रकार** प्राप्त होते हैं जो इस प्रकार हैं—

१. शरीर यन्त्र—हमारा शरीर स्वयं एक यन्त्र है और इसमें अनेक प्रकारके छोटे-बड़े पुर्जे लगे हुए हैं जिनके चलनेसे शरीर चलता-फिरता रहता है और सभी चेतन क्रियाएँ करता रहता है। ऐसे शरीरगत यन्त्र अनेक हैं उन्हींमेंसे मुख्य रूपसे १. मूलाधार, २. स्वाधिष्ठान, ३. मणिपूर, ४. अनाहत, ५. विशुद्ध और ६. आज्ञा-चक्र इन ६ चक्रोंको यन्त्र रूपमें स्वीकार किया गया गया है। मस्तकके ऊपर एक सहस्रार-चक्रयन्त्रकी भी कल्पना की गई है। इन यन्त्रोंकी धारणा करके आम्नाय-क्रमसे साधना की जाती है। प्रत्येकके अलग-अलग मंत्र हैं जिनका स्मरण करनेसे विभिन्न प्रकारके फल प्राप्त होते हैं। अतः इन्हें शरीर-यन्त्र कहते हैं।

२. धारण यन्त्र—पूर्वोक्त यन्त्रोंकी प्रतिष्ठा करके निश्चित वस्तुपर लिखकर शरीरके निश्चित अंगों पर धारण करनेसे कार्य सिद्ध होते हैं। ऐसे यन्त्रोंके लिए अनेक प्रकारकी विधियोंका स्वतन्त्र उल्लेख भी प्राप्त होता है।

३. आसन-यन्त्र—साधना करनेके समय बैठनेके आसनके नीचे यन्त्र बनाकर जो यन्त्र रखे जाते हैं उन्हें 'आसन-यन्त्र' कहते हैं। ऐसे यन्त्रोंके बनानेकी पद्धति स्वतन्त्र है। इन यन्त्रों पर आसन बिछाकर बैठनेसे शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। आसन-यन्त्रका दूसरा प्रकार देवताओंकी प्रतिमा, भवन, मन्दिर आदिकी नींवमें रखे जाने वाला है। प्रत्येक देवताकी प्रतिमाके नीचे भी यन्त्र रखनेसे प्रभाव स्थिर रहता है। (क्रमशः)

न्यायमूर्ति श्री तपननन्दन

[श्री कुमार दैवज्ञ]

नक्षत्रीय जगत्में किसी ग्रहके साथ ऐसा अन्याय नहीं हुआ जैसा कि सूर्य-पुत्र श्री शनि-देव के साथ हुआ है। प्रसिद्ध कश्यप कुलमें उत्पन्न होकर भी तथा ग्रहराज श्री सूर्यको पिताके रूपमें प्राप्त करने पर भी उसे 'प्रेष्य' (नौकर) का कार्य मिला जबकि उन्हें यौवराज्य का अधिकार था। यौवराज्य मिला चन्द्रमाके गुरुपत्नीसे उत्पन्न अवैध पुत्र बुधको !

दिनेशचन्द्रौ राजानौ सचिवौ जीवभार्गवौ।
कुमारो वित् कुजो मन्त्री प्रेष्यस्तपननन्दनः॥

इसके अतिरिक्त सामान्यजन तथा विद्वानों दोनों वर्गोंके लोगोंने पुलिस तथा मजिस्ट्रेसीके कार्यकलापोंकी तरह—शनिके कार्यकलापोंको सदा ही गलत समझा। पारम्परिक ऋषियोंसे लेकर आधुनिक ज्योतिर्विदों तक सभीने एक स्वरमें इस न्यायप्रिय तथा दृढ़इच्छाशक्ति वाले ग्रहको केवल दुःख, दारिद्रय, वध बन्धनादि देने वाले एक अभिशापके रूपमें निरूपित किया। प्राचीन महर्षिगण जब किसी दशा अन्तर्दशा के सन्दर्भमें शनिके प्रभावोंका निरूपण करते हैं तब शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकारके परिणाम बतलाते हैं। किन्तु जब अलगसे सामान्यरूपसे (Generally) शनिके प्रभावका निरूपण करते हैं तो उसे नितान्त शोककारक ग्रहके रूप में बताते हैं। मानसागरीकार शनिकी महादशा के विषयमें कहता है :—

मिथ्यापवाद-बधबन्ध-निराश्रयञ्च
मित्रातिवैरधनधान्य-कलत्र-शोकम्।
आशानिराशकृत-निष्फल सर्वशून्यम्
कुर्यात् शनैश्चरदशा सततं नराणाम्।

अर्थात् शनि महादशा सदैव मनुष्योंके लिए झूठे अपवाद, मृत्यु, बन्धन (जेल) निरा-श्रय, मित्रोंसे वैर, धन धान्य तथा पत्नीका शोक, नैराश्य, असफलता आदिका कारण होती है तथा उस समय मनुष्यको सब कुछ शून्य दिखता है। जिन विवेकी ज्योतिर्विदोंने शनिकी प्रकृतिका साङ्गोपाङ्ग अध्ययन किया है वे मुझ से सहमत होंगे कि शनिकी महादशाके बारेमें ऊपर जो कुछ कहा गया है वह पूर्ण सत्य नहीं है—केवल सत्यका एकांग है। शनि वह सब कुछ करता है जो ऊपर कहा गया हैं—पुलिस तथा दण्डनायक भी वह सब कुछ करता है जो ऊपर कहा गया है—**किन्तु प्रत्येक स्थितिमें नहीं, तथा शनि, पुलिस किंवा दण्डन्यायालय इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ करते हैं।** उदाहरणार्थ यदि शनि वृषभ या मिथुनमें है तो उसकी महादशामें—डा० बी० वी० रमन के अनुसार निम्नलिखित शुभ परिणाम होते हैं :—

'कृषिकार्यमें सफलता तथा लाभ, पशुओं की समृद्धि, बहुत आय, काम्य वस्तुओंकी प्राप्ति, कार्योंके लिए सुयश, व्यापार व्यवसाय में लाभ, राजासे सम्मान, राजनीतिक सफलता, कीर्ति एवं सर्वतोभावेन सौख्य' (हिन्दू प्रिडिक्टिव एस्ट्रालाजी—डा० रमन पृष्ठ २६५ सन् १९६७ का संस्करण)। मानसागरीकार भी शनि महादशामें शुक्र तथा बुधकी अन्त-

दशाओंके शुभ परिणाम ही बताता है—

सौभाग्यं सौख्य विजयं बोधसं स्थानमानतः।
सुहृद् वित्तप्रदं सौख्यं सौरस्यान्तर्गते बुधे ॥
सुहृद् बन्धुवशीयुक्तं भार्या वित्तजयान्वितम्।
सुखसौभाग्यवात्सल्यं सौरस्यान्तर्गते सिते ॥

अर्थ स्पष्ट है। सभी सुखद तथा शुभद परिणाम हैं। निष्कर्ष स्पष्ट है कि शनि केवल शोक दु:खप्रद ग्रह नहीं है अपितु परिस्थिति विशेषमें वह अन्य सौम्य ग्रहोंकी तरह—तथा कभी-कभी उनसे भी अधिक सुख तथा सौभाग्य को देने वाला ग्रह है। शनिको केवल शोकमय ग्रह बताना जनमानस तथा विद्वानोंका पूर्वाग्रह है, पूर्ण सत्य नहीं। सत्य तो यह है कि शनि सबसे अधिक बौद्धिक (rational) सत्य एवं न्यायप्रिय ग्रह है। सूर्यसे अधिकतम दूर होनेके कारण भावावेगोंकी उष्मा इसे न्यायमार्गसे विचलित नहीं कर सकती। एक सत्य एवं न्यायनिष्ठ न्यायाधीशमें जो गुण होने चाहिये वे शनिदेवमें हैं। अतः प्रकृतिने उसे इस संसारके सर्वशक्ति-सम्पन्न दण्डाधिकारीके रूपमें नियुक्त किया है। प्राणियोंके सुकर्मोंका पुरस्कार तथा कुकृत्योंकी सजा देनेका अधिकार प्रकृतिने उसे दिया है। न्यायाधीश' के व्यापक अर्थमें शनि शिक्षक है, दार्शनिक है, धर्मगुरु है तथा संसारकी समस्त व्याधियोंका एकमात्र सार्वभौम उपचार है। अतः संसारके शुभ या अशुभके लिये जितना शक्ति सम्पन्न शनि ग्रह है उतना अन्य ग्रह नहीं। 'जातक परिजातकार' ने ठीक ही कहा है :—

'आयुर्जीवन मृत्युकारण विपत् सम्पत् प्रदाता शनिः'

शनि सब कुछ देता है, पात्रता चाहिये। यह बात और है कि इस कलियुगमें सुकर्मोंकी अपेक्षा कुकृत्य अधिक है अतः उसे पुरस्कारकी अपेक्षा दण्ड अधिक देना पड़ता है। यही कारण है कि इस ग्रहको शुभकारककी अपेक्षा अशुभ-कारक (दण्ड देने वाला) अधिक माना जाता है। पारम्परिकरूपसे शनिके स्वरूपकी इस प्रकार वन्दना की जाती है—

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड-सम्भूतं त नमामि शनैश्चरम् ॥

शनिदेवका यह स्वरूप न्यायाधीशकी वर्तमान वेशभूषा तथा उसके चारों ओर घिरे हुए काले कोट पहने हुए वकीलोंसे युक्त परिसरसे मेल खाता है। उक्त श्लोकका अर्थ इस प्रकार है—

मैं शनिदेवकी वन्दना करता हूं जो :—

(१) नीले काजलके समान कान्ति वाले हैं (सभी न्यायाधीश काला कोट पहनकर काजलके समान कान्तिवाले लगते हैं)
(२) सूर्यके पुत्र हैं (सूर्यकी कृति हैं)
(३) यमराजके बड़े भाई हैं (यमराज-पुलिस-से वरिष्ठ अधिकारी हैं)
(४) छाया एवं मार्तण्डसे उत्पन्न हैं (सूर्य-शासन एवं छाया-अन्धकार जन्य कृत्य-अपराध आदिके कारण जिनका जन्म हुआ है)
(५) धीमे-धीमे चलने वाले हैं (अदालतोंमें लम्बित प्रकरणोंके लिए लोग व्यर्थ दोष देते हैं!

इस प्रकार न्यायाधीशके पक्षमें भी उक्त

श्लोकका अर्थ एकदम युक्ति-युक्ति हो जाता है—मैं ऐसे न्यायाधीश महोदयकी वन्दना करता हूं जो काजलके समान कान्तिवाले हैं, शासनके कर्म-पुत्र हैं, पुलिसके वरिष्ठ सहयोगी हैं, अन्धकारजन्य कृत्योंके प्रति शासनकी चिन्ताके कारण जिनका जन्म हुआ है तथा जो मन्दगति से चलने वाले हैं।

न्यायाधीशसे शनिदेवका बाह्य साम्य तो एक प्रसंगगत वाक् वैचित्र्य है किन्तु अधिक महत्वपूर्ण तो आन्तरिक साम्य है। न्यायाधीश, सिविल सर्वेन्ट्स, राजनेता, दार्शनिक आदिकी जन्मपत्रिकाओंमें उनको उच्चपद दिलानेमें शनिदेव ही प्रधान कारण रहते हैं। नीचे पांच कुण्डलियां दी जा रही हैं जिनमें शनिदेवका प्रभाव अत्यन्त स्पष्ट है—दो राजनेताओंकी है, दो आई०ए०एस० अधिकारियोंकी है तथा एक हाईकोर्टके मुख्य न्यायाधीशकी—

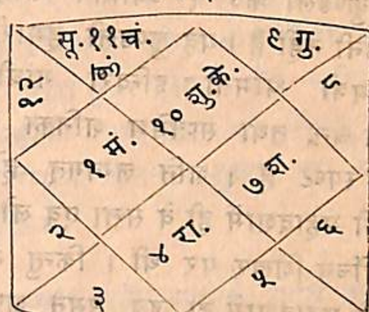
क्रम १



क्रम २



क्रम ३



क्रम ४



क्रम ५



क्रम ६



कुण्डली क्र० १ ज्योतिष जगत्के लिए अनजानी नहीं है। यह कुण्डली हमारी भू०पू० प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधीकी है। लग्नेश चन्द्र तथा सप्तमेश शनिका परिवर्तन योग स्पष्ट है। शनि लग्नगत् हो गया। शनिकी महादशामें ही वे सत्ता एवं लोकप्रियता के सर्वोच्च शिखर पर थीं। किन्तु न्यायप्रिय शनिकी महादशामें ही जब उसने अष्टमेशका फल देना शुरु किया तो केतुकी अन्तर्दशामें वे सत्ता श्रीहीन हो गईं। कुण्डली क्र० २ एक भू०पू० मुख्य मंत्रीकी है। उच्चस्थ शनि चतुर्थ में दशम (राज्य भाव) पर पूर्ण प्रभाव डाल रहा है। राहु महादशामें शनिके अन्तरमें उन्होंने खोई सत्ता पुनः प्राप्त कर ली। शनि का प्रत्यन्तर भी उनके लिए लाभदायक सिद्ध होता है, जहां तक सत्ता एवं लोकप्रियता प्राप्त करनेका प्रश्न है। कुण्डली क्र० ३ एक भू०पू० मुख्य सचिवकी है उसी प्रान्तके जिसके कि कुण्डली क्र० २ के जातक मुख्यमंत्री थे। ग्रहों की स्थिति लगभग वही है, केवल लग्न एक-दूसरेके विपरीत हो गए हैं। एकमें लग्नेश चन्द्र है जो ग्रहोंका राजा है ('दिनेश चन्द्रौ राजानौ') दशव स्थानमें मंगल है स्वग्रही अतः उनको मुख्य-मंत्रित्व मिला। दूसरेके लग्नेश शनि हैं तथा दशममें भी उच्चका शनि ही है जो ग्रहोंमें 'प्रेष्य' (प्रेष्यस्तपन नन्दनः) नौकर है। अतः प्रान्तकी सर्वोच्च सत्ता पर रहकर भी सिविल सर्वेन्ट होनेके कारण थे तो 'प्रेष्य' (सर्वेन्ट) ही। उनको उच्चपद दिलानेमें शनिका प्रभाव एकदम स्पष्ट है। कुण्डली क्र० ४ एक आयुक्त महोदयकी है। शनि लग्नेश होकर दशममें है। शनिकी महादशामें ये सत्ताके सर्वोच्च शिखर पर थे—एक प्रान्तीय बिजली बोर्डके अध्यक्ष, किन्तु शनि द्वादशेश भी है अतः शनिने ही उनको इस पदसे उतार दिया। अन्तर्दशा अनुकूल आने पर शनिदेव इनको पुनः सत्तासीन करेंगे। कुण्डली क्र० ५ यू०पी० के एक भू०पू० मुख्य न्यायाधीशकी है। इसमें भी भाग्येश (धर्मेश—भारतीय संस्कृतिमें धर्म तथा कानून का करीब-करीब एक ही अर्थ है) शनि उच्च पञ्चमस्थ है-पंचमेशसे परिवर्तनयोग भी, षष्ठेश लाभेश मंगल पर दृष्टि भी। शनिका प्रभाव उनको उच्चपद दिलानेमें स्पष्ट है। अगस्त ७७ के 'एस्ट्रालाजिकल मैगजीन' में ६३ न्यायाधीशोंकी पत्रिकाएं देकर उनका जन्म-राशिके आधार पर एक सर्वेक्षण किया गया है। ४२ मामलोंमें जन्म राशि या तो मकर है या कुम्भ—दोनों शनिकी राशियां हैं।

वैपरीत्यकी स्थितिमें (On the negative side) सामान्य रूपमें शनि निम्नलिखित परिणाम देने वाला होता है—

(१) बिमारी
(२) धन नाश
(३) बन्धन या जेलयात्रा
(४) वियोग
(५) प्रियजनकी मृत्यु
(६) मृत्यु या मृत्युसम कष्ट
(७) क्रान्ति या गृह युद्ध
(८) छत्र-भंग

यदि किसी व्यक्तिका आहार-व्यवहार नितान्त असंयमित है तो शरीरमें किसी न किसी प्रकारका विकारका उत्पन्न हो जाना उसका निश्चित परिणाम है। शरीरकी इस

विकृतिको दूर करनेके लिए शनि अपनी दशा अन्तर्दशामें तथा साढ़ेसातीकी अवधिमें व्यक्तिको बीमार कर देता है ताकि वह औषधि ले तथा संयमित बने। वह उसका रेचन (Purgation) कर देता है तथा संयमके रास्ते पर लानेके लिए एक झटका उसे देता है। हममेंसे अधिकांशको यह अनुभव होगा कि साढ़ेसातीसे तत्काल बाद की अवधिमें मनुष्य अपने आपको ताजा तथा नया महसूस करता है। प्रत्येक ३० वर्षकी अवधिमें शनिदेव यह उपचार करते हैं। जब शरीर अत्यन्त जीर्ण हो जाता है तथा केवल कष्टदायक ही रह जाता है तब अपने तृतीय उपचारके समय शनिदेव सदाके लिए भी इस कष्टको दूर करते हैं। इस रूपमें शनि उस कठोर डाक्टरकी तरह है जो रोगीकी व्याधि नाशके लिए आपरेशनके समय रोगीके चिल्लाने की परवाह नहीं करता, क्योंकि उसके इस क्षणिक कष्टमें उसका वास्तविक कल्याण (नीरोगता) निहित है। लोगोंका शनिको दोष देना उसी प्रकार है जैसे बच्चोंका डाक्टरको देख कर गाली देना। उपर्युक्त कुण्डली क्र० ६ एक प्रतिष्ठित परिवारकी महिलाकी है। वे दो दशकसे अधिक समयसे गॉल ब्लैडरमें पथरीके रोगसे त्रस्त थीं। षष्ठेश मंगल सप्तम भावमें है जो गॉल ब्लैडरको इंगित करता है। उसकी युति शनिसे हैं। मंगलका अर्थ है अग्निसे या पैने अस्त्रसे उपचार। जातक इतने वर्षोंसे कष्ट भोगता रहा किन्तु चन्द्रमाकी महादशामें शनिकी अन्तर्दशामें ही रोगका निदान हो सका। इसी अवधिमें उनका एक बड़ा आपरेशन हुआ तथा गॉल ब्लेडरसे ४० (चालीस। पत्थर निकाले गए। शनिने उन्हें जबरन आपरेशनके लिए मजबूर किया ताकि उनका उपचार होकर पुनः स्वस्थ हो सके। बीमारीकी अवधि में कष्ट तो बहुत हुआ होगा। दोष शनिने ही झेला—उन्हींकी अन्तर्दशा थी—किन्तु उस सबका परिणाम कितना सुखद था—वर्षोंके कष्टसे मुक्ति।

इसी प्रकार यदि व्यक्ति अवैध तरीकेसे धन एकत्रित करता है तो शनि अपनी दशा—अन्तर्दशामें उसका धननाश जरूर करेगा। अत्याचारी एवं प्रजाके कष्टसे बेखबर राजाओं को वह निर्ममतापूर्वक धूलमें मिला देता है। समाजमें भी यदि कोई रोग लग जाय तथा शोषण अत्यधिक बढ़ जाय तो क्रान्तियों द्वारा शनिदेव पुनः व्यवस्था कायम कराते हैं। भारतीय गणतन्त्रकी कर्क राशि है। कर्कके शनिमें ही क्रान्ति हुई—एक रक्तहीन क्रान्ति तथा पटरीसे उतरा हुआ प्रजातन्त्र फिर पटरी पर आ गया। शनि सर्वहारा वर्गका प्रतिनिधित्व करता है अतः शोषितवर्गकी हरेक क्रान्तिमें शनिदेवकी प्रेरणा रहती है, किन्तु न्याय उसका मूलमन्त्र है अतः अन्यायी कोई भी वर्ग हो उसके दण्डसे बच नही सकता।

शनिका अपना जीवन अत्यन्त सादा है जो उस जैसे सार्वभौम न्यायप्रशासकके उपयुक्त ही है। अपनी वाञ्छाओं तथा आवश्यकताओंसे व्यक्ति मार्गसे विचलित होता है। उसने स्वेच्छासे राजकुमार होते हुए भी प्रेष्यत्व स्वीकार किया। कोई भी राजकीय ठाटबाट स्वीकार नहीं किया। हाथी-घोड़ोंको छोड़कर उसने 'महिष' से सन्तोष किया। सोना-चांदी आदि महार्घ वस्तुओंको छोड़कर लोहा स्वीकार

ऐतिहासिक कहानी

प्राण-प्रतिष्ठा

[ले०—डा० वेदप्रकाश शास्त्री]

भारतीय मान्यताके अनुसार संसारके सभी पदार्थ प्राणवान् माने गए हैं। जड़पदार्थों को अन्तश्चेतना सम्पन्न एवं जीवित प्राणियों को वहिश्चेतना सम्पन्न प्रतिपादित करते हुए सभीको ईश्वरांशभूत मान सबके प्रति प्रणतिका विधान आर्ष मनीषाने आदि-अनादि कालसे किया है—

खं वायुमग्नीं सलिलं महीं च
ज्योतिंषी सत्वानि दिशो द्रुमादीन् ।
सरित् समुद्रांश्च हरेः शरीरं
यत्किञ्च भूतं प्रणमेदनन्यः ।।

—श्रीमद्भागवत

किया। उड़द तथा तेलसे उसे सन्तोष। उसे रंग-बिरंगे मखमली कपड़ेकी आवश्यकता नहीं। काला कपड़ा उसे अभीष्ट है। राजमंत्री, न्यायाधीश, दार्शनिक आदि महान् व्यक्तियों को बनाने वाले इस शनिका, जो किसीको इन्द्रके समान सम्मान भी दिला सकता है तथा इन्द्रको भिखारी बनाकर धूलमें मिला सकता है, अपना जीवन इतना सादा तथा आडम्बर-हीन है। शनिदेव साक्षात 'शिव' के अवतार हैं जो विश्वको अमृत पिलानेके लिए स्वयं विषपान करते हैं। कौन उनके प्रति कृतज्ञ होकर नतमस्तक नहीं होगा।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः ।।



यह सब होनेपर भी पाषाणादि निर्मित देवविग्रहोंमें प्राण-प्रतिष्ठाका विधान इस दृष्टिसे किया गया है जिससे सामान्यकलात्मक विग्रहों और देवविग्रहोंमें अन्तर दिखाया जा सके और उसके माध्यमसे लक्ष्य तक पहुंचनेका प्रयत्न किया जा सके। जिस प्रकार करेंसी नोट प्रस्तुत होता है कागजसे ही परन्तु उसमें अपने जैसे लाखों कागजों, कागजकी रीमोंको क्रय करने की क्षमता अन्तर्हित होती है और यह क्षमता आती है उसपर अंकित राजमुद्राके कारण। ठीक उसी प्रकार प्राणप्रतिष्ठारूपी ईश्वरीय मुद्रा विशेषको धारण कर पाषाणी प्रतिमा ईश्वरत्व को प्राप्त कर लेती है। यह प्राणप्रतिष्ठा सम्पन्न देव-विग्रह जहां ध्यान, पूजन, अर्चन आदिका माध्यम बन मानवका अन्धेकी लकड़ीकी भाँति सहायक बन उसे लक्ष्यकी ओर ले जाने वाला सशक्त सम्बल सिद्ध होता है वहीं आत्माको परितोष रूपी भोजन प्रदान करने वाला अक्षय पात्र भी। इसी विशेषताके कारण विभिन्न देव विग्रहोंकी प्रतिष्ठा भारतमें चिरन्तनकालसे चली आई है। शुक्रनीतिमें तो देव-मन्दिर निर्माण, देव-विग्रह स्थापनको राजा का पुनीत कर्तव्य प्रतिपादित किया गया है—

शृंगाटके ग्राम मध्ये विष्णोर्वा शंकरस्य च।
गणेशश्च रवेर्देव्याः प्रसादात् क्रमतो न्यसेत् ।।

यद्यपि वेदोंमें ईश्वरका प्रतिपादन निराकार और साकार दोनों रूपोंमें हुआ है परन्तु अनुभव

द्वारा यह सिद्ध चुका है कि—ध्यान धारणादि में जितना सहायक साकार रूप हो सकता है उतना निराकार नहीं। यही कारण है कि चिरन्तनकालसे भारतमें मूर्तिपूजा चली आ रही है। भारतीय एकता विधायक ऋषियोंने इसी मूर्तिपूजाको आधार बनाकर चारधाम सप्तपुरी आदिका विधान किया है जिससे भारतवासी इत्तर प्रान्तवासियोंके सम्पर्कमें भी आते रहें और विभिन्न विग्रहोंके दर्शन का लाभ भी प्राप्त करते रहें।

इतिहासकारोंके अनुसार महाराष्ट्रकी मराठा जाति जिसने हिन्दू कुलभूषण शिवाजो जैसा नर-नाहर उत्पन्न किया—मूलरूपमें क्षत्रिय जाति है। यह जाति राजपूतानासे दक्षिणके महाराष्ट्र क्षेत्रमें जाकर बसी है और क्षेत्र विशेषके नाम पर मराठा नामसे प्रसिद्ध हुई है। इस जातिकी मान्यता, सस्कृति, सभ्यता सब कुछ राजपूत जातिपरक है। जो कुछ अन्तर इसमें आया है अथवा परिलक्षित होता है वह क्षेत्रीय प्रभावका द्योतक है। यह जाति भगवती भवानीको परम्परागत रूपमे अपनी आराध्या मानती है और उसीके पूजनार्चनमें विशेष रुचि लेती है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है छत्रपति शिवाजी इसी जातिके भूषण थे, उन्हींके शासन कालमें मूर्तिकी प्राणप्रतिष्ठाके सम्बन्धमें एक चमत्कारिक घटना घटित हुई थी, जिससे न केवल मूर्तिका महत्व उजागर हुआ था अपितु मूर्तिको पाषाण मानने वालोंको भी नतमस्तक होना पड़ा था।

शिवाजी छत्रपति पद पर अधिष्ठित हो चुके थे। धर्मविहित राजनीतिका आश्रय लेकर वे इस कुशलताके साथ शासन कर रहे थे कि महाराष्ट्रमें पदे-पदे रामराज्यके ही दर्शन होते थे। जीवन भर हिन्दू राज्यकी कल्पनाको साकार बनानेमें सहयोग देने वाले उनके सहयोगी आज उनकी इच्छानुसार विभिन्न पदों पर अधिष्ठित हो पूर्ण क्षमता एवं कुशलताके साथ शासन चलाने एवं राज्यको सुदृढ़ बनानेमें लगे हुए थे। इन सहयोगियोंमें शिवाजीके अन्यतम सहयोगी थे—तुकारामजी पोद्दार।

महाराष्ट्रमें स्वर्णकारको पोद्दार कहा जाता है। श्री तुकारामजी भो जातके स्वर्णकार थे।

स्वर्णकार स्वयंको क्षत्रिय मानते हैं। इसी मान्यताके आधारपर महाराष्ट्रमें स्वर्णकार यज्ञोपवीत धारण करते हैं और शास्त्र-सम्मत क्षत्रिय धर्मका पालन करते हैं।

श्री तुकारामजी भी इसी परम्पराके अनुयायी एव भवानीके अनन्य आराधक थे। उन्होंने अपनी अनन्य भक्तिसे पराम्बाको इतना सन्तुष्ट किया था कि वे समय-समय पर उन्हें दुलरानेके लिए उसी प्रकार उनके पास आ पहुंचती थीं जिस प्रकार माँ अपने शिशुके पास पहुंचती है।

तुकारामजी छत्रपति शिवाजीके अनन्य हितैषी और कोषाध्यक्ष थे। बहुशः परीक्षामें खरा उतरनेके कारण शिवाजीका उनपर अटूट विश्वास था। उनकी सम्मतिको शिवाजी कभी नहीं टालते थे।

शिवाजीके कालमें उपनेत्र (चश्मा) पहना जाता था अथवा शिवाजी स्वयं कभी-

कभी उपनेत्र धारण करते थे, इस कथन पर सम्भवत: कोई विश्वास न करे, परन्तु है यह पूर्णत: सत्य।

महाराष्ट्रमें उपनेत्र अथवा चश्मेको चालीसा कहा जाता है। यह नाम सम्भवत: इसलिए दिया गया है कि चालीस वर्षकी आयुके पश्चात् नेत्रशक्ति शिथिल होने लगती है और मनुष्यको प्राय: इसे धारण करनेकी आवश्यकता अनुभव होने लगती है।

हां, तो शिवाजी भी इस अवस्थामें पहुँच चुके थे जब चालीसा, उपनेत्र अथवा चश्मा मानवके लिए किसी न किसी रूपमें आवश्यक हो जाता है। शिवाजी यूं तो अधिकांश समय बिना उपनेत्रके रहते थे, परन्तु यदा कदा आगे-पीछे उसे धारण भी करते थे। क्योंकि उनका अधिकांश समय बिना उपनेत्रके ही बीतता था अत: न किसी चित्रमें उसके दर्शन होते हैं और न ही किसी इतिवृत्तमें उसकी चर्चा ही उपलब्ध होती है। उस समय क्योंकि पत्थर से ही चश्मे बनाये जाते थे अत: इसे बनानेमें बहुत समय और श्रम लगा करता था। बहुत कम व्यक्ति इसे बनाना जानते थे। मूल्य भी पर्याप्त हुआ करता था, अत: बहुत कम उसका उपयोग हुआ करता था। तुकाराम पोद्दार इस प्रकारके चश्मे बनानेमें निपुण थे और उन्होंने ही आवश्यकताके अनुसार शिवाजीको एक चश्मा बनाकर भेंट किया था। एक दिन अचानक उस चश्मेका एक शीशा टूट गया। शिवाजीने पोद्दारजीको बुलाकर कहा कि वे कल तक वह शीशा तैयार कर चश्मेमें बिठाकर यादसे उन्हें दे दें क्योंकि उन्हें युद्ध सम्बन्धी कुछ मान चित्रोंका अध्ययन करना है, जो उसके बिना संभव नहीं है।

पोद्दारजी चश्मा लेकर अपने आवास पर लौटे, परन्तु पारिवारिक झझटोंमें उलझकर सर्वथा भुला बैठे कि उन्हें चश्मा कल तक तैयार कर महाराजको सौंपना है। रात्रिमें जब वे सोनेके लिए शैया पर जाने लगे सहसा चश्मेका ध्यान आया। वे निद्राका ध्यान छोड़ तेजीसे अपनी गद्दीकी ओर लपके, जिससे वहां बैठकर रात्रिमें कार्य पूरा कर सकें परन्तु अन्धेरेमें उनका पांव गद्दी पर एक ओर रखे हुए चश्मे पर जा पड़ा। परिणाम यह हुआ कि उसका दूसरा कांच भी टूट गया। पोद्दारजी इस आकस्मिक हानिसे सन्न हो गए। यहां तो एक कांच ही तैयार करना कठिन था अब दो-दो कैसे तैयार होंगे? कैसे महाराजको मुँह दिखाऊँगा? कैसे कल उन्हें चश्मा दे पाऊँगा? आदि प्रश्न उनके हृदयको मथने लगे।

जब व्यक्ति सर्वथा निराश और निरुपाय हो जाता है, उसका ध्यान अपने आराध्यकी ओर जाता है। पोद्दारजी भी व्यथित होकर भवानीकी शरणमें पहुँचे और जमीनपर लोटकर करुण स्वरमें अपनी व्यथा-कथा सुनाने लगे।

माँ अन्तत: माँ ही होती है, कब तक सन्तानकी पीड़ा देख सकती है? माँ भवानी भी द्रवित हो पोद्दारजीके सामने प्रगट हो गईं और वात्सल्य पूर्ण स्वरमें बोलीं—'पुत्र तुकाराम! शान्त! अरे! ऐसी कौनसी विपद आ पड़ी तुझ पर जो इस प्रकार तड़प रहा है।

तुकारामजीने पूरी घटना माँको सुनाते हुए बताया कि यदि मैं कल महाराजको चश्मा न दे पाया तो मेरी प्रतिष्ठा क्या रह जाएगी?

भगवतीने मुक्त हास्य बिखेरते हुए कहा—'अरे ! जरा मैं भी तो देखूं वह टूटा हुआ चश्मा आखिर है कैसा ? उसके जुड़नेका भी कुछ उपाय है या नहीं ?

पोद्दारजी चश्मा लानेके लिए गद्दी पर पहुंचे । चश्मा उठाया तो आश्चर्यचकित रह गए यह देखकर कि चश्मेके दोनों कांच सर्वथा निर्दोष रूपमें अपने स्थान पर जड़े हुए थे । वे गद्गद् होकर भवानीकी स्तुति करने लगे । माँ भवानी उन्हें आशीर्वाद दे अपनी प्रतिमामें जा समाईं ।

किसी प्रकार इस चमत्कार पूर्ण घटनाका विवरण जनतामें जा पहुंचा और लोग पोद्दारजी को लेकर नाना प्रकारकी बातें कहने लगे। होते-होते शिवाजीके कानोंमें भी यह चर्चा पहुंची । उन्होंने मुँहसे तो कुछ नहीं कहा परन्तु मन ही मन यह निर्णय अवश्य कर लिया कि यथावसर वे इस बातकी परीक्षा अवश्य करेंगे कि इस चर्चामें कितना तथ्य है । (क्रमशः)

फरवरीमें जन्म लेने वालोंका जीवन वर्णन (२)

[लेखक :—श्री ओंकारनाथ त्रिवेदी, बाराबंकी उ०प्र०]

[गताङ्कसे आगे]

ऊपरसे सीधे, भोले और संकोची प्रतीत होने पर भी चालाक और घुटे हुए होते हैं। इनके परिचित मित्र और सम्बन्धी इन पर विश्वास करते हैं । दूसरे लोग इन्हें सदाचारी समझते हैं परन्तु अन्दर ही अन्दर यह दुराचारी होते हैं । मानसिक व्यभिचार किया करते हैं। अस्वाभाविक भोगोंकी बात सोचते हैं। इनमें पुरुषत्व शक्ति कम होती है क्योंकि शनि नपुंसक ग्रह है ।

शरीरका सुख इन्हें नहीं मिलता है। इनके जीवनमें सुख भरे मनमोहक क्षण कम आते हैं। अनेक प्रकारके घाटे, अपमान और शोक इन्हें सहन करने पड़ते हैं । क्रूरता, निर्दयता, आकस्मिक असहनशीलता और दूसरों को भड़कानेकी बुरी लत इनमें होती है। देश-काल-समाज-कुटुम्बके नियमोंका उल्लंघन भी करते हैं ।

शरमीले, डरपोक, पलायनवादी और निराशावादी होनेके कारण अपने गुणोंका प्रदर्शन नहीं कर पाते । तृतीयेश-दशमेश मंगल के होनेसे साहसी होते हैं किन्तु साहसका उचित उपयोग नही जानते । इस क्षेत्र में जन्म लेने वाले बालकोंको यदि उचित प्रशंसा, प्रोत्साहन और पथप्रदर्शन नहीं मिलता और यदि मिले तो वह चमत्कारिक उन्नति करें ।

अधिकांशमें दुबले-पतले लम्बे होते हैं। यह लोग अपने स्वामी शनिकी भाँति, मनमारे हुए विचारोंमें तल्लीन, शिर झुकाए हुए, धीरे-धीरे चलते हैं । कुंभ राशिका चिह्न (≈≈) देखिए । इसे देखते ही, सोचते समझते हुए, धीरे-धीरे या रुक-रुक कर चलनेका बोध होता है । इस चिह्नके ही समान इनका जीवन उतार

चढ़ाव पूर्ण रहता है। इस चिह्नसे इनके जीवन का सच्चा चित्र सामने आ जाता है। इनकी आँखें छोटी होती है। नाक लम्बी होती है। दांत बड़े-बड़े और सुन्दर होते हैं। ग्रीवा लम्बी होती है। यह मोटा खाना और मोटा पहनना पसन्द करते हैं। नये फैशनोंसे दूर रहते हैं। एड़ियां जोड़कर खड़े होनेपर पैरोंके घुटने आपसमें मिल जाते हैं इसलिए यह पुलिस या सेनामें नहीं लिए जा सकते हैं। इनका भाग्योदय ३५ या ३६ वर्षकी अवस्थामें होता है।

ज्ञात रहे कि जन्म समय बलवान् होने पर और (अपने लिए कथित) श्रेष्ठ स्थानोंमें होनेपर शनि जिन बातोंसे सुख देता है, बलहीन या अश्रेष्ठ स्थानोंमें होनेपर उन्हींके द्वारा अनेक कष्ट देता है। ऐसी स्थितिमें शनिकी शान्ति का उपाय-उपचार करना चाहिए।

अनेक गुप्त पापी, दुराचारी, नशेबाज, चोरबाज़ारी करने वाले, पतित आदि लोग भी इसी भागमें जन्म ग्रहण करते हैं। कोई न कोई व्यसन तो प्रायः सभीमें होता है।

विवाहित जीवन और सन्तान—

इनका विवाहित जीवन प्रायः सफल नहीं होता है और उसके प्रति एक विचित्र, अज्ञात और अकारण असन्तोष इनके मनमें बना रहता है। प्रेमपिपासाकी पूर्ण तृप्तिका अनुभव यह नहीं कर पाते हैं। फैशनेबुल और हावों भावों वाली युवतियोंको चोरी-चोरी घूरनेसे अपने को रोक नहीं पाते। इन्हें गौराङ्गी तरुणियों की अपेक्षा श्यामवर्णा सुन्दरियां अधिक पसन्द आती हैं। कामवासनाकी मानसिक अतृप्तिके कारण उसका उभार भिन्न-भिन्न अशोभन रूपोंमें होता रहता है। पत्नी श्रेष्ठ कुलकी, कठोर स्वभावकी और वफादार मिलती है, जिससे विवाहित जीवनका निर्वाह हो जाता है और देखने वाले उसे सफल समझते हैं। सन्तानभाव विशेष अच्छा नहीं होता, पर यह निस्सन्तान नहीं रहते हैं। एक पुत्र विद्वान् होता है। पुत्र-पुत्री सेवा चाहे न करें पर ध्यान रखते हैं।

आर्थिक स्थिति—

कुछ थोड़े व्यक्तियोंको छोड़कर यह लोग विशेष धनी नहीं होते और कहींसे रकम एकाएक मिल जाय इसकी इच्छा किया करते हैं। गड़ा खजाना ढूँढनेकी इच्छा होती है। विपत्तिके दिनोंमें इनको आर्थिक सहायताके स्थान पर सान्त्वना और सत्परामर्शकी प्राप्ति होती है। कभी-कभी कीमिया यन्त्र-मंत्र-तंत्र-तपानुष्ठानादिके द्वारा भी धनी बननेका प्रयास करते हैं। आवश्यकताकी पूर्त्तियोग्य धन मिलता ही रहता है। सन्तोषी होते हैं। अनेक बार लाभके सुअवसर आनेपर भी हाथसे निकल जाते हैं। धन मिलने पर अच्छा खाना चाहे खालें पर अपने भोग-विलास-शृङ्गारादिमें व्यय नहीं करते। प्रायः कंजूस होते हैं। दूसरोंके लिए कमाते हैं। आयके दो स्रोत होते हैं, एक गुप्त, दूसरा प्रत्यक्ष। पितासे उत्तराधिकारमें मिली सम्पत्तिसे इन्हें सुख नहीं मिल पाता है। भाइयोंसे पटती नहीं है। कुछेक लोग लोहा, मशीनका काम, बिजली, खानोंकी खुदाई, कोयला, सरसों, तेल, खेती, तांत्रिक सिद्धि, प्रेतवशीकरण, चोरबजारी आदिके द्वारा विपुल धन कमाते हैं।

यश-सम्मान–

इनके निकट सम्पर्कमें आने वाले व्यक्ति इनके परोपकारी, धार्मिक और सरल स्वभाव के कारण इनका सम्मान करते हैं किन्तु जन-साधारणका सम्मान और यश इन्हें नहीं मिल पाता। इनके मर जानेके बाद लोग इनके महत्वको समझते और स्वीकार करते हैं।

यात्राएं–

इनके जीवनमें छोटी यात्राएँ अनेक बार आती हैं। जीवनमें दो-तीन बार स्थान परि-वर्त्तन करना पड़ता है। तृतीय, नवम और द्वादश स्थानोंमें चर राशियां होनेसे कई बहुत बड़ी-बड़ी यात्राएं और तीर्थ यात्राएँ भी करते हैं। कमसे कम एक बार विदेश यात्रा का भी अवसर मिलता है।

स्वास्थ्य और बीमारियाँ–

इनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा कभी नहीं होता है। रक्तहीनता प्रायः बनी रहती है। परन्तु यह चला फिरा करते हैं। एक बार किसी कठिन बीमारीका सामना करना पड़ता है और जीवनकी आशा छूट जानेके बाद पुनः स्वास्थ्य लाभ करते हैं। कोई चीज ऊपर गिरनेसे चोट लगती है।

उदरमें वायुविकार और उसके कारण अपच रहता है। कभी-कभी पेटकी गैस ऊपर चढ़कर दिलमें घबराहट पैदा कर देती है। घुटनों और दांतोंमें पीड़ा होती है। स्नायु-सम्बन्धी बीमारियोंकी सम्भावना बनी रहती है। पैरोंकी कोई बीमारी, जैसे पैरोंमें पानी उतर आना या फालिज आदिका भय है। निम्न रक्तचाप होनेके कारण जाड़ोंमें हाथ पैर ठंडे हो जानेसे यह कष्टका अनुभव करते हैं। रूस आदि बहुतसे अतिशीत देश कुंभ राशि क्षेत्रमें आते हैं, उन क्षेत्रोंमें कुंभ मास वालों पर क्या प्रभाव पड़ता है इसका तो मुझे पता नहीं है पर अन्य स्थानोंमें जन्म पाने वालोंको पर्वतीय स्थल अनुकूल नहीं पड़ते। ऊंचे स्थानों पर चढ़नेमें और विशेषकर ऊपरसे नीचे झांकने पर यह घबरा उठते हैं और इनके घुटने कांपने लगते हैं। हिंडोला झूलना या बहुत ऊंची सीढ़ियां चढ़ना इनकी सामर्थ्यमें नहीं है। समशीतोष्ण समुद्रतटीय स्थानों पर इनका स्वास्थ्य बढ़ता है। दैनिक स्वास्थ्यको देखें तो प्रतिमास कृष्णपक्षकी सप्तमी या अष्टमीसे इनका स्वास्थ्य ठीक होने लगता है, अमाव-स्या प्रतिपदाको बहुत ठीक रहते हैं, फिर शुक्ला द्वितीयासे स्वास्थ्यमें हल्की गिरावट आने लगती है और उसका अनुभव शुक्ला सप्तमी या अष्टमीसे बढ़ने लगता है, पूर्णिमा और प्रतिपदा नेष्ट हैं, कृष्णा द्वितीयासे सूक्ष्म सुधार आरम्भ हो जाता है।

इन्हें अपने भोजनके साथ पर्याप्त हरे शाकोंका उपयोग करना चाहिए। रक्तवर्धक और लौहवर्धक खाद्य और पेय इनके लिए बड़े हितकर होंगे। उचित मात्रामें कैलशियमका नियमित उपयोग करनेसे इनमें यौवनका पुनरागमन होने लगता है। नित्य महामृत्युञ्जय मंत्रका जप (सौरिस्तु मृत्युञ्जयात्) अति कल्याणप्रद है।

आयु–

यह लोग दीर्घजीवी होते हैं। इनकी परमायु ७० वर्षकी मानी गयी है।

ज्योतिषविद्याका तीसरा पाठ

[ले० — श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा साहित्यरत्न प्रभाकर ज्यो०]

इस पाठको आरम्भ करनेसे पहले आप प्रथम पाठको एक बार ध्यानसे पढ़ जाइये। पिछले पाठके अन्तमें 'ज्योतिष्मती' वर्ष २१ संख्या २ में हमने योग व करणोंके नाम दिये थे। इस पाठमें आपको पचांग देखना व इष्ट-काल निकालना बताया जायेगा। आपके नगरमें सबसे अच्छा पंचांग मिलता हो उसकी एक प्रति ले लीजिये। उसमें लग्न सारिणी, अक्षांशादिसारिणी, रवि-क्रान्ति चरान्तर-सारिणी अवश्य होनी चाहिये। यदि आपको ऐसा पंचांग न मिले तो हमको लिख दीजियेगा। यहांसे एक प्रति भेज दी जायेगी। पंचांगमें पांच अंग होते हैं इसी कारण इसका नाम पंचांग है: तिथि, बार, नक्षत्र, योग, करण।

(१) तिथि :—तिथियोंके नाम तो आप को बता दिये गये हैं। यह शुक्ल पक्षकी प्रतिपदासे गिनी जाती है। पूर्णिमाको १५ तथा कृष्णपक्षकी अमावस्याको ३० लिखा जात है। जब चन्द्रमा सूर्यके पास यानी दोनों एक ही राशिमें आ जाते हैं तब चन्द्रमा अस्त हो जाता है। सूर्य चन्द्रका पूर्व पश्चिम अन्तर शून्य हो जाता है या निम्नतम हो जाता है तब अमावस्या होती है। जब दोनोंका अन्तर बढ़ने लगता है तब १२ अंशका अन्तर होने पर एक तिथि होती है। चन्द्रमा एक दिनमें लगभग १२ अश और एक राशि २-१/२ दिनमें चलता है जबकि सूर्य की चाल इतनी तेज नहीं है। सूर्य एक दिनमें लगभग एक अंश और एक राशि एक मासमें चलता है। इस प्रकार प्रति १२ अंशके अन्तर पर एक तिथि होती जाती है। तिथिका मध्यम मान ५६ घटी ३० पल होता है। ३० तिथियां २९-१/२ दिनमें पूरी होकर एक चन्द्र मास होता है। चान्द्र वर्ष १२ चान्द्र महिने यानो ३५४ दिनका होता है। और ३५४ दिनमें ३६० तिथियां होती हैं, इस कारण तिथियों की क्षय व वृद्धि होती रहती है। चन्द्रमाकी चाल भी घटती बढ़ती रहती है। सूर्योदयके समय जो तिथि होती उस दिनकी वही तिथि पंचांगमें लिखी होती है। यदि कभी तिथिका मान इतना कम हो कि वह दूसरे दिनके सूर्य उदयसे पहले ही समाप्त हो जाय तो सूर्योदय के समय लगती तिथि ही आयेगी और इस प्रकार तिथिका क्षय हो जायेगा। इसी प्रकार यदि तिथिका मान ६० घड़ीसे अधिक हो और दूसरे दिनके सूर्योदयके समय भी वही तिथि रहे तो एक ही तिथिके २ दिन तक रहनेके कारण तिथि वृद्धि हो जायेगी।

(२) वार :—वार सात होते हैं। वारों के नाम सातों ग्रहोंके नाम पर रखे गये हैं। आपको बताया जा चुका है कि आकाशमें पृथिवीसे दूरीके क्रममें ग्रहोंकी स्थिति इस प्रकार है :—(१) शनि (२) गुरु (३) मंगल (४) रवि (५) शुक्र (६) बुध (७) चन्द्रमा। पृथिवीके सबसे पासमें चन्द्रमा है, फिर बुध शुक्र सूर्य मंगल गुरु व शनि हैं। दिन रातमें २४ घण्टे होते हैं। अहोरात्रका संक्षिप्त होरा

(HOUR) होता है। प्रत्येक ग्रहका होरा एक-एक घण्टेका होता है। जैसे शनिवारको सूर्योदयके समय शनिका होरा होता है, इस कारण इस तिथिका नाम शनिवार रखा गया। शनिवारको २रा होरा गुरु व तीसरा मंगल का, ४था सूर्यका, ५वां शुक्रका ६ठा बुधका ७वां चन्द्रमाका और ८वां फिर शनिका आया। इस प्रकार तीन आवृत्ति २ घण्टे होकर २२वां होरा शनिका २३वां गुरुका और २४वां मंगल का हुआ। २५वां होरा यानी दूसरे दिनका पहला होरा सूर्यका हुआ और इस कारण इस दिनका नाम रविवार रखा गया। इसी प्रकार रविवारको ७ ग्रहोंके होराओंकी ३ आवृत्ति होनेके बाद २२वां रविका २३वां शुक्रका २४वां बुधका और २५वा यानी अगले दिनका पहला होरा चन्द्रमाका आया। इस कारण इस दिनका नाम चन्द्र वार रखा गया। इसी प्रकार प्रत्येक दिनके ग्रहसे चौथे ग्रहके होरा पर वारों के नाम रखे गये हैं। यदि कभी यह जानना हो कि २४ घण्टेमें किस समय किस ग्रहका होरा होगा तो उसकी रीति यह है कि अगर समय घड़ियोंमें दिया है तो उसके घण्टे बना लो (घड़ी गुणा २॥) घण्टोंमें सूर्योदय घटा कर ७ भाग दो। जो शेष बचे उनको उस दिन के प्रातः के होरासे गिन लो। मान लो मंगलवार के दिन शामके ५-४५ बजे किस ग्रहका होरा होगा, यह जानना है। घण्टे मध्यरात्रिके १२ बजे से शुरु होते हैं इस कारण ५-४५ में १२ जोड़ कर १७-४५ हो गये। यदि घण्टे सुबहके ५-४५ होते तो उनमें २४ जोड़ना पड़ता क्योंकि हमारा दिन सूर्योदयसे आरम्भ होता है। १७-४५ में से उस दिनका सूर्योदय घटाया। मान लो सूर्योदय ६-१५ पर था इसको १७-४५ मेंसे घटानेसे ११-३० आया। ११-३० में ७ का भाग दिया तो ४-३ बचे। ६-१५ से ७-१५ तक पहला होरा था, १३-१५ से १४-१५ तक ८वां १५-१५ तक ९वां १६-१५ तक १०वां १७-१५ तक ११वां होरा था और १७-१५ से १८-१५ तक १२वां यानी मंगलसे ५वां होरा चन्द्रमा का था। आपकी सुविधाके लिये नीचे होरा चक्र दिया जा रहा है।

होरा	1	2	3	4	5	6	7
	8	9	10	11	12	13	14
	15	16	17	18	19	20	21
बार	22	23	24				
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल
चन्द्रवार	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
मंगल	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु
बुध	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बृहस्पति	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि
शुक्र	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शनि	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चन्द्र

(२) नक्षत्र :—२७ होते हैं। अभिजित नाम मात्रका ही नक्षत्र है। आगे सभी गणित में २७ नक्षत्र ही लिये जायेंगे। एक नक्षत्र १३ अंश २० कलाका होता है और नक्षत्रका एक चरण ३ अंश २० कलाका। प्रत्येक नक्षत्रका मध्यम मान ६० घड़ी ४३ पल है। किसी नक्षत्रका मान इससे अधिक और किसीका इससे कम भी होता है। पंचांगमें जो नक्षत्र

दिये होते हैं वे चान्द्र नक्षत्र होते हैं और उनसे यही जाना जाता है कि चंद्रमा किस समयसे किस समय तक किस नक्षत्रमें रहेगा। नक्षत्र का मान निकालनेकी विधि यह है कि मान लो १७-६-७६ के नक्षत्रका मान निकालना है तो मालूम हुआ कि उस दिन धनिष्ठा नक्षत्र १४-४२ पल था। अर्थात् ११ घण्टे १६ मिनट और १६-६-७६ को ११-३० घड़ी पल पर यानी १० घण्टे २ मिनट पर आया था। पिछले दिनके मानको ६०-०० मेंसे घटाया और उसमें उस दिनका मान जोड़ देनेसे नक्षत्रका मान आ जाता है।

घडी पल	घण्टा मिनट
६०— ००	२४ — ००
११— ३०	१० — २
४८— ३०	१३ — ५८
+१४— ४२	+११ — १६
६३— १२	२५ — १७

पिछले दिन जब नक्षत्र शुरु हुआ घटानेसे उस दिन कितना रहा यह आ जाता है।

उस दिनका मान जोड़नेसे नक्षत्रका पूरा मान आ जाता है।

धनिष्ठा नक्षत्रका पूरा मान ६३ घडी १२ पल या २५ घण्टे १७ मिनट हुआ।

इसी प्रकार किसी भी दिनका किसी भी नक्षत्रका मान निकाला जा सकता है। पचांग में प्रत्येक ग्रहकी दैनिक या साप्ताहिक स्थिति राशि अंशोंमें दी हुई होती है। जिससे पता चलता है कि कौन ग्रह किस दिन किस समय पर किस राशिके कितने अंशादि पर था या होगा। और यह सूचना भी दी हुई होती है हैं कि कब किस नक्षत्रके किस चरणमें प्रवेश करेगा या कर चुका है।

(४) योग :—योग भी २७ होते हैं। चन्द्रमा तथा सूर्य दोनों मिलकर जब १३ अंश २० कला चल लेते हैं तब एक योग पूरा होता है। इसका नक्षत्र, राशि, या ग्रहोंकी गति या आकाशीय स्थितिसे कोई सम्बन्ध नहीं है। योग सूर्य व चन्द्रमाकी चालके अन्तरको बताते हैं। योगोंके नाम पिछले पाठमें दिये हैं। यह क्रमसे एकके बाद दूसरे आते हैं।

(५) करण :—यह तिथिका आधा भाग होता है। तिथिके पहले आधेमें एक करण और दूसरे आधेमें दूसरा करण होता है। करण कुल ११ होते हैं। जिनके नाम पिछले पाठमें दिये गये थे। किस तिथिके प्रथम भागमें कौनसा करण और दूसरे भागमें कौनसा करण होता है, यह नीचेकी सारिणीमें दिया गया है।

शुक्लपक्षकी तिथि	पहला करण	दूसरा करण	कृष्णपक्षकी तिथि
1	किंस्तुघ्न	बव	——
2,9	बालव	बालव	1,8
3,10	तैतिल	गर	2,9
4,11	वणिज	बालव	3,10
5,12	बव	तैतिल	5,12
6,13	बालव	वणिज	6,13
7,14	गर	बव	7
8,15	विष्टि	शकुनि	14
——	विष्टि	नाग	30

विष्टि करणका दूसरा नाम भद्रा है। यह शुभ कार्योंमें वर्जित है।

पंचांगके पांचों अंगोंके बारेमें बता दिया गया है अन्य मुख्य-मुख्य बातोंके बारेमें आगामी अंकमें विवरण दिया जावेगा। (क्रमशः)

नेहरूजी और ज्योतिष

[लेखक :--भक्त श्री रामशरणदास, पिलखुवा]

ज्योतिषविद्या सनातन-धर्मका प्राण है। सनातन-धर्मियोंका ज्योतिषविद्या और ज्योतिषियोंके बिना कोई भी कार्य सम्पन्न हो नहीं सकता। प्रत्येक कार्यमें ज्योतिषविद्याका सहारा लेना अनिवार्य माना गया है। भू०पू० प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी जो दिन-रात ज्योतिषियोंको और ज्योतिषविद्याको गाली बका करते थे वे कभी-कभी इनके अद्-भुत चमत्कारको देखकर नतमस्तक हो जाते थे और उनकी बोलती कैसे बन्द हो जाती थी इस सम्बन्धकी कुछ सत्य घटनायें हमें 'माया' मासिक पत्रिका दिसम्बर सन् १९७७ में देखनेको मिली हैं, वे यहां पर दी जा रही हैं। माया पृष्ठ १०५ पर इस प्रकार छपा है—

नेहरूजी और ज्योतिष

"संसदकी कार्यवाही स्थगित हो गई तो सभी सदस्य लाबीमें आगये। उन दिनों मौलाना अबुलकलाम आज़ाद बीमार थे। बाथरूममें वे फिसलकर गिर पड़े थे। डॉ० विधानचन्द्रराय इलाज कर रहे थे। उन्होंने उन्हें खतरेसे बाहर बतला दिया था। श्रीसत्य-नारायण सिन्हा उस समय संसदीय मामलोंके मंत्री थे (जो बादमें सूचना प्रसारणमंत्री रहे) वह नेहरूजीके पास आये और उन्होंने पूछा मौलाना ठीक है न?

"हां ठीक हो रहे हैं।"

कोई खतरा तो नहीं है?

नहीं।

सत्यनाराण सिन्हा धीरेसे बोले 'एक ज्योतिषीने बतलाया है कि.........कहते-कहते वह रुक गये।

क्या बतलाया है?

तीन चार दिनमें मौलाना चले जायेंगे।

"क्या बकते हो? नेहरूजी झल्ला गये। डाक्टर विधान चन्द्रराय जैसे योग्य डाक्टरने उनको खतरेसे एकदम बाहर बतलाया है।"

सत्यनारायण सिन्हा चुप रह गये।

चौथे दिन शिक्षा मंत्री मौलाना आज़ाद का देहान्त हो गया। सत्यनारायण सिन्हाको देखते ही नेहरूजी कांप गये। उनकी ज्योतिष-सम्बन्धी नास्तिकता हिलने लगी थी।

मार्च सन् १९६२ में जब नेहरूजी पूनासे दिल्ली वापस आये तो उन्हें जोरोंका बुखार था डाक्टरोंने मात्र इसे थकावट समझा, पर बीमारी कुछ ऐसी बन गई कि लगभग एक महीने तक नेहरूजीको बिस्तरसे लगे रहना पड़ा। उस समय सत्यनारायण सिन्हाने कहा—'पंडितजी आप अपनी जन्मकुण्डली किसी पंडितको दिखलाइये। क्या ग्रहचक्र हैं, कुछ तो पता चले। "बकवास है।" पंडितजी भड़क गये।

गुलजारी लाल नंदा पास ही बैठे थे। बोले—"दिखलानेमें नुकसान क्या है?"

मौलाना आज़ाद वाली बातका स्मरण कर नेहरूजी कुछ डिग गये। बोले—"अच्छा बुलाओ। देखें कौन पंडित है.........।"

सत्यनारायण सिन्हाने व्यवस्था कर दी। पंडितने कुण्डली देखी और बोला "आपका कोई घनिष्ठ मित्र इसी वर्ष आपके साथ विश्वासघात करेगा और इसी वर्ष चीन भारत पर आक्रमण करेगा।" पंडितका इतना कहना था कि नेहरूजी एकदम तमतमा गये "बेवकूफ बकवास करता है।" और शायद अपने सामने रखा कलमदान वह उस पंडितके चेहरे पर दे मारते, अगर सत्यनारायण सिन्हाने उनका हाथ न पकड़ लिया होता।

नेहरूजी चीखने लगे—"इन्हीं पोंगापंथी लोगोंने भविष्यवाणियां करकरके देशका बेड़ा गरक कर दिया। सिन्हा गेटआऊट ....आई से गेट आऊट.........व्हाट नानसेंस........."

उन दिनों भारत चीनमैत्री अपनी चरम सीमा पर थी। पंचशील नेहरूजी प्रसव कर चुके थे। सारे देशमें हिन्दी-चीनी भाई-भाईका नारा बुलन्द था।

चन्द सप्ताह बाद चीनने आक्रमण कर दिया। पंडितजी घबरा गये और सत्यनारायण सिन्हासे बोले—"उस पंडितको बुलाना।"

"आप उसे मारेंगे तो ....।"

नेहरूजी शर्मिन्दा हो गये।

उस दिनके अपमानके बावजूद पंडित आया। नेहरूजीने उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं। उसने पंडितजीका जीवन अत्यल्प बतलाया और कहा 'केवल पूजासे कुछ लाभ हो सकता है।" इन पंडितजीके सुझावके अनुसार कालकाजीके मन्दिरमें ५० पंडितोंने पंडितजीकी आयुके लिये पूजनपाठ किया। प्रतिदिन पूजाकी समाप्ति पर पंडितजीको तिलक लगाया जाता था। यह कार्य अत्यन्त गुप्त रूप से सम्पन्न किया गया।

इसी पंडितसे नेहरूजीने इन्दिराके बारेमें पूछा।

पंडितने बतलाया—"इन्दिरा सर्वोच्च सत्ता पर जा सकती है। पर, चाटुकारोंका भरोसा उनका पतन करेगा। साठ वर्षकी आयु में संकटका सामना करना पड़ेगा। देहावसान बड़ी विषम परिस्थितिमें होगा। पर इतिहास में आपके ही समान सदा स्मरण की जायेंगी। उनकी हठवादिता शनीके रूपमें हमेशा अनिष्ट करेगी।"

नेहरुजीने संतोष कर लिया। पंडितने मनकी बात कह दी थी कि सर्वोच्च सत्ता पर आ सकती है और शायद इसीलिए नेहरूजी इन्दिराके लिये प्रयत्नशील होगये।" पाठकों हमने मायामेंसे ज्योंका त्यों यह लेख आपके सामने रखा है। जो नेहरूजी ज्योतिषियोंको दिनरात कोसा करते थे अन्तमें उन्हें भी ज्योतिषी और ज्योतिषविद्याका अद्भुत चमत्कार देखकर इनके सामने नतमस्तक हो जाना पड़ा। इसे ही तो कहते हैं—'भूत वही जो सर चढ़ बोले'।

कालिदासका नाम

[ले०—कविपुण्डरीक श्री सम्पूर्णदत्त मिश्र M.A. (Sans.), M.A. (Eng.)]

संस्कृत साहित्यके इतिहासों तकमें मैंने कहीं कालिदासके नामकी ठीक व्युत्पत्ति नहीं पढ़ी। लोग प्रायः यही समझते आये हैं कि भगवती कालीका दास होनेके कारण उनका नाम कालिदास पड़ा।

यह तो सच है कि वे कालीके उपासक थे और मंत्रशक्तिसे ही कवि थे, पर 'कालिदास' का अर्थ कालीका दास नहीं होता। इस अर्थमें तो नाम 'कालीदास' बनता है, क्योंकि काल्या दास इति कालीदासः। पर इस नामसे तो उन्हें न हिन्दीके विद्वान् पुकारते हैं और न संस्कृत के।

मैं स्वयं इस जन्ममें जब अनेक मौलिक संस्कृत काव्योंकी रचना कर चुका तब तक भी मेरा ध्यान इस ओर नहीं गया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि इतने समयसे, इतने पण्डितों की परम्परामें, इतने प्रसिद्ध कविके नामका इतना अशुद्ध अर्थ लगता कैसे चला आया? 'अपि मासं मसं कुर्याच्छन्दोभंग न कारयेत्' इस सिद्धान्तके अनुसार भी 'कालीदास' को 'कालिदास' नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह वाक्य शिष्यवर्गको छन्दोबन्धनकी महत्ता समझानेके लिये है। व्यवहारमें साधारण संस्कृत कविको भी ऐसा अर्थ भंग करके छन्दो-भंग करनेकी अनुमति नहीं है। यह अशक्ति है।

फिर मैंने अर्थ लगाया कि 'कालिनो दास इति कालिदासः।' अर्थात् जो काली (शिव) का दास हो वह कालिदास। इस दृष्टिसे 'कालिदास' शब्दका अर्थ महादेवका दास होता है, काली देवीका दास नहीं। कालिन् शब्द बनकर उसके साथ दास शब्दका समास करने पर 'कालिदास' शब्द बन जाता है। विवक्षा और आवश्यकता होने पर काली (कालिन्) शब्द भी महादेवका वाचक हो सकता है, यह बात तांत्रिक वैयाकरणोंको वैसे ही बुद्धिगम्य है, जैसे कालिदासको रही होगी। जो तांत्रिक नहीं हैं ऐसे वैयाकरणोंको भी शूली (शूलिन्), त्रिशूली (त्रिशूलिन्), कपाली (कपालिन्) आदि शब्दोंसे दास शब्दका समास करनेपर शूलिदास, त्रिशूलिदास, कपालिदास आदि शब्दोंका निर्माण बोधगम्य है। इसी ढंगसे कालिदास सिद्ध हो जाता है।

मुझे ऐसा लगता है कि कविने स्वयं अपना नाम कालिदास रक्खा होगा। चूंकि वे स्वयं इस नामका व्यवहार करते रहे होंगे इसीलिये संस्कृत छन्दोंमें तथा गुरुशिष्यपरम्परा में भी 'कालिदास' नाम ही आज तक चला आता है। इस नामसे उनके कालीका दास होने में भी कोई बाधा नहीं आती, क्योंकि महादेव का दास कहलानेसे महादेवी अप्रसन्न नहीं हो सकतीं। पतिव्रता अपने पतिकी प्रतिष्ठासे अप्रसन्न नहीं, अपितु अधिक प्रसन्न होती है। तंत्रशास्त्रमें तो यह निर्देश है कि नारायणको प्रणाम न करके केवल लक्ष्मीका मंत्र जपनेसे लक्ष्मी अप्रसन्न हो जाती है। इसलिये भगवती

कालीके दासने यदि कोई ऐसा नाम रख लिया जिसका अर्थ भगवान् काली (कालिन्=महादेव) का दास होता है तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह भगवती कालीका दास नहीं।

उच्चारण-सौविध्य और छन्द-सौविध्य की दृष्टिसे भी 'कालिदास' नाम अच्छा लगता है। 'कालीदास' बोलनेमें आलस्य आता है और शैथिल्य भी। इसके उच्चारणमें वह स्फूर्ति और लाघव नहीं जो 'कालिदास' बोलनेमें है।

स्वयं कालिदासने 'कालिदास' नाम रखनेकी इच्छा होने पर व्याकरणकी दृष्टिसे भी नाम-शुद्धिके प्रयत्नमें महादेव शब्दके अर्थमें कालिन् शब्दकी कल्पना वैसे ही की होगी जैसे उसका अर्थ समझनेके प्रयत्नमें यहां मैंने की है, क्योंकि इस नामकी अर्थसंगतिकी दृष्टिसे और कोई व्युत्पत्ति संभव नहीं है।

उल्लासश्रीभवनम्
२४५-बी, गोपालगढ़
भरतपुर (राजस्थान)।

ज्योतिश्शास्त्र और हज़रत मोहम्मद साहब

'ज्योतिष्मती' सोलन, ज्योतिष-सम्बन्धी महत्वपूर्ण लेख छापनेमें सदा अग्रणी रही है। ज्योतिष्मती-पत्रिकाके प्रत्येक अंक संग्रहणीय होते हैं। हाल हीके गताङ्क २१।३ वैशाख-पूर्णिमा के अंकमें पृष्ठ २४ पर डा० भूपसिंह राजपूत का अद्वितीय लेख छपा है—'ज्योतिश्शास्त्र और हज़रत मुहम्मद साहब'। लेख पढ़कर हमारे ज्ञानमें वृद्धि हुई है। एतन्निमित्त डाक्टर साहब बधाईके भाजन हैं और पत्रिकाके सुयोग्य संपादक पण्डित श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी हमारे समक्ष अभिनन्दनीय एवं वन्दनीय हैं।

परन्तु, लेखमें एक-आध भूल न होती तो अच्छा था। जैसे पृष्ठ २५ तथा २३ पंक्तिपर छपा है—२० अप्रैल ५७१। चाहिए—२० अप्रैल ५७० ईसवी। विक्रमाब्द ६२८ ठीक है। यह ६२८—५८=५७० ईसवीके अनुरूप है। आगे चलकर विद्वान् लेखकने लिखा है: "यह पलायनी (हिजरी) पूर्व ५२ वर्षकी घटना है।" सभी मानते हैं, पलायनी संवत् (हिजरी सन्) ६२२ ईसवीसे गिना जाता है। सो, ६२२—५२=५७० ईसवी यथार्थ है। इस एक वर्षके संशोधनसे कुण्डलीमें कितना परिवर्तन संभव है—इस पर विद्वान् लेखकको फिरसे विचार करना चाहिए।

जब इतना लिख दिया, तब छोटी सी बात और भी। सबको विदित है, पुराणशास्त्रों में कलियुगका इतिहास उल्लिखित है। यह एक विचित्र संयोग है कि पुराण-शास्त्र ईसवी सन् ५६८ तक पहुंचकर मौन हो जाते हैं। पुराण-शास्त्रोंका मौन हजरत मुहम्मद साहबके आगमनके उपलक्ष्यमें समझना चाहिए।

माननीय सम्पादक एवं आदरणीय लेखक से क्षमा-प्रार्थनापूर्वक।

—चन्द्रकान्त बाली शास्त्री



सोना चांदी व्यापारका त्रैमासिक भविष्य

[प्रस्तोता :—ज्योतिर्विद् निर्विकार गुप्त, साहित्यरत्न, ३६०/१० सुंदरविलास, अजमेर]

'ज्योतिष्मती' के पाठकों' के लाभार्थ यहां अनुभूत ग्रहयोग दिये जा रहे हैं, इनसे पूरा लाभ उठाने हेतु व्यापारीवर्गसे आशा की जाती है कि वह अपनी जन्म एवं वर्ष कुण्डली से अपना लाभकारी समय लेखकसे पुष्ट करालें।

२१ जुलाईसे १६ अक्तूबर १९७८ तक

२१ जुलाई १९७८—तिथिक्षय भावोंको मंदीकी ओर ले जाता है।

२२ जुलाई—घट-बढ़से मन्दीका रुख रहे।

२४ जुलाई—दोनों धातुओंमें तेजीकी ओर प्रगति।

२५ जुलाई—तेजी बनी रहे।

३० जुलाई—प्रातःकालसे ही मंदीका रुख बनेगा।

२ अगस्त—सोना चांदी दोनों धातुओंमें तेजीका रुख बन जायेगा।

४ अगस्त—मिला जुला रुख बनेगा, मंदी-तेजी दोनों चाँस बनेंगे।

९ अगस्त—अच्छी मंदी हो, पिछली तेजी का लाभ उठाकर डबल खरीद करें।

१२ से १४ अगस्त—एकादशी क्षयको ध्यानमें रखें, मंदी होनेपर माल पोते करें।

१६ अगस्त—सोना चांदीमें तेजी कारक अवसर हैं।

१९-२० अगस्त—घटबढ़से तेजीका रुख बनता है। इस मासके पांच शनिवार भी तेजी का रुख बनाते हैं।

२१ अगस्त—अब कई योग तेजीकारक रुख बनाते हैं। मंदीका अवसर न खोवें।

२४ अगस्त—आज अच्छी घटबढ़ चले। मन्दी तेजी दोनोंके चांस मिलेंगे।

२६ अगस्त—तेजीसे मंदीका चांस मौजूद।

२८ अगस्त—यहां लाइन बदलेगी।

३० अगस्त—सोना चांदी दोनोंमें तेजी आनी चाहिए।

३१ अगस्त—आजका दिन घटबढ़, मंदी से तेजी बनावेगा।

१-२ सितम्बर—तेजीका रुख बना रहे।

५ सितम्वर—चांदी मंदी, सोनामें तेजी का रुख हो। चांदीमें अच्छी मंदी हो

१० सितम्बर—मिला जुला रुख रहे। अच्छी मंदीकी भावना देकर तेजीका रुख बना सकता है।

१३ सितम्बर—दोनों धातुएँ तेजीकी ओर।

१४ सितम्बर—मंदीका रुख। लाइन बदलनेका भी योग है।

१५ सितम्बर—मंदीकारक।

१६-१८ सितम्बर—व्यापारकी लाइनको सावधानीसे बरतें। घटबढ़तेजी मंदी सभी होगी

२० सितम्वर—सोना चांदी दोनोंमें तेजी।

२३ सितम्बर—तेजी मंदी दोनोंके अच्छे चांस मिलेंगे।

१ अक्तूबर—मंदीकारक दिन।

६ अक्टूबर—घटबढ़ तेजीकारक।

१० अक्टूबर—सोना चांदी दोनों धातुयें तेज होंगी।

१४ अक्तूबर—साधारण मंदी संभव होगी

मन (४)

[लेखक :—श्री विक्रमसिंहजी]

पूर्वमें जिस अनधीत ज्ञानका जिक्र आया है वह इसीसे सम्भव है गुरुके प्रति सत्कार भाव से हृदयकी निर्मलता और ज्ञान प्राप्तिकी उत्कट इच्छाने ही उपमन्युको ब्रह्मज्ञानी और एकलव्यकोधनुर्धरश्रेष्ठ बनाया इसमें सन्देह नहीं है।

कहा जाता है कि योगी धारणा ध्यान समाधिसे सर्वज्ञता प्राप्त करते हैं, चित्तको देश विशेषमें बांधनेका नाम धारणा और वृत्तिमें एक तानताको ध्यान कहते हैं. उसी ध्यानमें अपनेको भुलाकर अर्थमात्रकी प्रतीति समाधि कहलाती है। "तज्जयात् प्रज्ञा लोकः" उस समाधि पर अधिकार प्राप्त करनेसे ही प्रज्ञा-लोक या ज्ञानकी प्राप्ति होती है।

विज्ञानने सिद्ध कर दिया है कि शब्द नष्ट नहीं होता है अन्तरिक्षमें संगृहीत रहता है। इसलिये शब्दरूप तीनों वेद ऋक्, यजु साम भी अन्तरिक्षमें समस्त ज्ञान सहित संगृहीत है और रथ नाभिके आरोंके समान मनसे संयुक्त है (देखें पत्र ५) संकल्पके तीव्र संवेग और वृतिकी एकाग्रतासे साधक ज्ञानका साक्षात् कर सकता है यह बुद्धि गम्य तथ्य है। मनकी इस धारणा शक्तिके कारण ही उसका धृतिका विशेषण आया है।

श्रीमद्भगवद्गीता ४।३८ में भगवान्ने स्वयं निर्देश किया है कि ज्ञानके समान पवित्र वस्तु इस संसारमें दूसरी नहीं है और वह ज्ञान योगके द्वारा सिद्ध हुआ समय आने पर अपने अन्दर स्वयं प्रकट हो जाता है।

"नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रं इह विद्यते,
तत् स्वयं योग संसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।"

३. अंतमें निबन्धके तीसरे चरणकी आवश्यकता अनुभव होना स्वाभाविक है कि "मन के इन गुणोंसे लाभ उठानेका तरीका या प्रयोग विधि क्या है?"

यदि एक शब्दमें इसका उत्तर दें तो "सत्वसंशुद्धि" कह सकते हैं लकिन मनकी योग्यता प्राप्तिकी विधि कहें या मनकी अशुद्धि क्षयकी विधि विस्तारसे कहें बिना समझमें आने वाली नहीं है।

महर्षि पतञ्जलिके शब्दोंमें "योगके अंगों के अनुष्ठानसे ही मनकी अशुद्धिका नाश होकर ज्ञानकी प्राप्ति हो सकती है। और वे योगके अंग आठ हैं—१ यम २ नियम ३ आसन ४ प्राणायाम ५ प्रत्याहार ६ धारणा ७ ध्यान ८ समाधि। व्याख्याको समझनेके लिये इस अष्टांग योगकी निम्न संक्षिप्त जानकारी अनिवार्य है।

१. यम—अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रहकी वृतिका नाम यम है। यह समाज धर्म है अर्थात् दूसरे व्यक्तियोंके संपर्कसे संबन्ध रखने वाले नियम है। इनके पालनमें जाति देशकाल और समयका प्रतिबन्ध नहीं है। सभी देशोंकी सब ही जातियोंको सदा सर्वदा इनका पालन करना चाहिये। इसीलिये

मानसिक शुद्धिमें इन्हें प्रथम स्थान दिया गया है।

जो प्रत्येक प्राणीके प्रति प्रेम करता है उसके समीप हिंसक जन्तु भी वैर त्याग देते हैं। जो सत्यका आश्रय लेता है उसकी वाणी अमोघ हो जाती है वह शाप वर देनेमें समर्थ होता है। जो पर-धनको उपेक्षाकी दृष्टिसे लोष्ठवत् देखता है उसे रत्न सुलभ हो जाते हैं। ब्रह्मचर्यकी सिद्धिसे शक्ति प्राप्त होती है। और अपरिग्रहीको जन्मान्तर ज्ञान सुलभ होता है।

२. नियम—शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधानको नियमकी संज्ञा दी गई है। ये व्यक्तिगत शुद्धिके नियम मनकी पवित्रताके लिये है।

शुद्धिकी भावनासे व्यक्तिमें संसर्ग दोष नहीं आ पाता और आत्मदर्शन सुलभ हो जाता है। सन्तोषवृतिसे सुख तपसे यौगिक विभूतियां स्वाध्यायसे इष्टदेव दर्शन और ईश्वर प्रणि-धानसे समाधि सिद्धि होती है। नियमोंमें शिथिलता आने लगे तो प्रतिपक्ष भावनासे दृढ़ करना चाहिये।

३. आसन—जिस स्थितिसे स्थिर सुख उपलब्ध हो वही आसन है। यौगिक क्रिया की दृष्टिसे पद्मासनका विशेष महत्व है, क्योंकि इसमें उड्डियान बन्ध लग जानेसे प्राणका उर्ध्व गमन होता है और मूलाधार पर एडीका दबाव पड़नेसे कुण्डलिनी जागरण शीघ्र होता है।

सिद्धासनया स्वस्तिकासन अल्पश्रम साध्य और हानि रहित बताये जाते हैं। आसन सिद्ध हो जाने पर द्वन्द्व कष्ट नहीं होते।

४. प्राणायाम—श्वास प्रश्वासकी गति में विच्छेद उत्पन्न करनेका नाम प्राणायाम है यह विच्छेद इस प्रकार उत्पन्न किया जाता है कि प्रथम रेचक फिर मध्यमें कुंभक बादमें पूरक फिर रेचक अवधि विशेष तक करें। प्राणायामसे इन्द्रियोंके दोष नष्ट हो जाते है

"दह्यन्ते ध्यायमानानां,
धातूनां हि यथा मलाः।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः
प्राणस्य निग्रहात्॥

५ प्रत्याहार—स्तम्भवृत्तिया वह स्थिति है जिसमें इन्द्रियां अपने आहारके प्रति आकर्षित नहीं होती व उदासीन रहती है। इन्द्रियोंके स्वभावको ही बदल देनेका नाम प्रत्याहार है।

जैसे वायु पानीमें नावको डावांडोल कर देती है उसी प्रकार इन्द्रियां भी मनको अस्थिर कर देती है इसलिये प्रत्याहारकी आवश्यकता है। स्तम्भ वृतिसे मनके पतनका भय नहीं रहता।

६. धारणा—वृति-विशेषके साथ चित्त को बांधनेका नाम धारणा है। धारणासे मन में योग्यता प्राप्त होती है। धारणाका सात्विक और उदार होना आवश्यक है क्योंकि जैसे घड़ेका दीपक केवल घड़ेमें और मकानका दीपक सारे मकानमें प्रकाश करता है उसी प्रकार मन भी हमारे हृदयकी ज्योति है वह जितना उदार होगा उतने ही बड़े क्षेत्रको प्रकाशित करेगा।

७. ध्यान—धारणाकी वृतिमें एक तानता को ध्यान कहते हैं। जैसे सरोवरमें उठने वाली

तरंगोंके कारण सूर्यका प्रतिबिम्ब उसमें स्पष्ट नहीं देखा जा सकता उसी प्रकार चंचल मन भी अपनी वृतिको अन्तरिक्षमें प्रतिबिम्बित नहीं कर सकता। महाप्राणके साथ एक स्वर नहीं हो सकता इसलिये जलके समान ही मन का भी शान्त और निर्मल होना आवश्यक है।

८. समाधि—स्वयंको भूलकर अर्थमात्र की प्रतीतिमें निश्चल हो जानेका नाम समाधि है। इसे वृतिकी तल्लीनताकी अंतिम श्रेणी कहा जा सकता है। सिद्धि इसी अवस्थामें आकर होती है।

उपसंहार एवं सरल प्रयोग—मनके गुण धर्म और कार्योंके साथ अष्टांग विवेचनसे यह नहीं समझना चाहिये की जन सामान्यसे योग साधनाकी अपेक्षा की जाती है।

मनकी दिव्य शक्तियोंसे लाभ उठाने और कर्म कौशल प्राप्त करनेके लिये तपकी आवश्यकता तो है ही इसमें सन्देह नहीं है।

तप नाम है कष्ट सहनका, उद्देश्य विशेष के लिये कष्ट सहने पर आस्था दृढ़ होती है यह प्रकृतिका नियम है।

अन्तःकरणकी शुद्धिके साथ दैवी भावोंको अपनाने पर प्रयत्न सुसाध्य हो जाता है ऐसा भी मन्तव्य है। इनमें आस्तिकता संयम त्याग प्रेम सत्य और श्रद्धा क्रमशः महत्वपूर्ण हैं।

१. आस्तिकता—जो आध्यात्मिक पथसे साधनाका विचार रखता है उसका कर्तव्य है मनसा वाचा कर्मणा सरल हो जाना। यह कार्य किसी दूसरे पर प्रभाव डालनेके लिये नहीं अपितु आत्मशुद्धिके लिये किया जाता है अतः अन्यथा भावना स्वयंको धोखा देनेके समान है। आस्तिकता एक प्रकारका खूंटा है जिससे साधक अपने मनको बांध लेता है। आस्तिकताका अर्थ ब्रह्मा विष्णु महेश जैसे देव विशेष नहीं है, अपितु कोई भी दैवी शक्ति जिस पर साधक विश्वास करता है हो सकती है। यहां तक कि लौकिक गुरु भी हो सकते हैं क्योंकि महत्व देवका नहीं उनमें आरोपित सामर्थ्यका है। इष्ट सर्व समर्थ सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान और मनोरथ पूर्ण करनेमें समर्थ होना चाहिये।

आस्तिक भावसे जो श्रद्धा और सत्कार भावना उदित होती है वही सिद्धिका मूल है।

२. संयम—आस्तिक भावके बाद जो भी संकल्प किया जावे उसे सफल बनानेके लिये संयम अनिवार्य है। ब्रह्मचर्य व अन्य इन्द्रियों का संयम शक्ति प्राप्तिके मुख्य स्रोत हैं। वैदिक उक्ति है "ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत" ब्रह्मचर्यके तपसे देवोंने (अन्य कार्योंकी तो गणना ही क्या है) मृत्यु पर भी विजय प्राप्त की है।

राज्याभिषेकसे पूर्व गुरू वशिष्ठने रामको एक मात्र संयमका उपदेश दिया है "राम करहु सब संजम आजू, जो विधि कुशल निवाहे काजू" । अयोध्याकाण्ड चौ ९। जैन संप्रदायके मुनि गृहस्थोंको कुछ नियम व्रत इत्यादि उनके कष्ट निवारणके लिये ग्रहण कराते हैं वे ऐसे गृहस्थोंको जो दिवालिया हो गए हों या जिन्हें धन्धेमें घाटा लग रहा हो या रोजगारकी तलाश हो उन्हें ब्रह्मचर्यका नियम ग्रहण कराते हैं इसलिये संकल्प सिद्धिमें भी संयमको सर्वोपरि महत्व दिया जाना चाहिये।

३. त्याग—संयमके बाद महत्व त्यागका है। त्यागकी कोई राशि निश्चित नहीं है। त्याग का महत्व दूसरेके लिए दिलमें स्थान होनेका है। वस्तुकी कीमत या किस्मका कोई महत्व नहीं है। यह त्याग अतिथिको भोजन कराने छात्रोंको पुस्तक वस्त्र देनेसे लेकर यज्ञ और ब्रह्मभोज दानादि तक हो सकता है।

त्यागका प्रतिफल त्यक्त वस्तुके अनुरूप ही होता है, अर्थात् अन्न देने वालेको अन्नकी और धन देने वालेको धनकी कमी अनुभव नहीं होती। यही कारण है कि त्यागको सब ही धर्मोंने किसी न किसी रूपमें अपनाया है व्यापारीवर्गने धर्मादा, मुसलमानोंने जकात, ईसाईयोंने रोगियोंकी सेवाके रूपमें इस नियम को अपना रखा है। समृद्धिके लिये इस वृत्तिका पोषण अनिवार्य है।

४ प्रेम—त्यागके बाद प्रेमका महत्व है। ईर्ष्या द्वेषका प्रभाव और प्राणीमात्रके प्रति प्रेमकी भावना मनको उदार बनाती है यह उदार भावना आत्मशुद्धिमें विशेष महत्व रखती है।

५. सत्य—उदारता और निर्मलताके बाद सत्यमें आस्था दृढ़ होकर वचनकी अमोघता और सत्य नियमोंमें श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है।

थोड़ेमें यों कह सकते हैं कि आस्तिकता और संयमके साथ कोई भी संकल्प द्रुतगतिसे सिद्धिकी ओर बढ़ता है व चर्खीमें दिये गन्नेके समान स्वतः मार्ग प्रशस्त होता है, साधक को तो अपने आपको निर्मल मनके साथ उस पथ पर लगा देने मात्रकी आवश्यकता है।

त्रैमासिक व्यापार-दिग्दर्शन

[प्रणेता :—ज्योतिषरत्न श्रीराजाराम जैन पर्जन्य एवं अर्घकाण्ड वाचस्पति]

श्रावण मास

इस मासमें पश्चिमोत्तर कोणकी वायु उ० प्र० पञ्जाब हरयाना राजस्थान म०प्र० में जितनी ज़ोरसे जहां जब-जब चलेगी, तभी उसी क्षेत्रमें तदनुरूप वर्षा होगी, किन्तु जैसे ही दक्षिणी वायु चलेगी वर्षा तुरन्त ही बन्द हो जाती है, जैसे कि आती हुई ट्रेनको लाल झण्डी दिखाई गई हो। शनि सिंह राशि में आनेसे रुई पाट रेशम कालीमिर्च कागज़ नारियलकी जटा रस्सी मूंज (अंबाड़ी) आदि में ७ नवम्बर ७७ की भांति तूफानी चाल देगा। मिथुने गुरुके प्रभावसे इस मासमें किराना गुड़ खांड सोना चांदी सर्वधातुमें मन्दा सम्भव, २० जुलाईको पुष्ये रविसे रुईके साथकी वस्तु में मन्दी, चांदीमें तेजीकी लाइन, अन्य सभी वस्तुयें तेज। कृष्णा १ गुरुवारीके क्षयसे मन्दी का झटका, किन्तु गुरुवारी प्रतिपदा उड़द मूंग तिल तेलके बीज, इस मासमें विशेष तेज होंगे, परीक्षित है। ता० २१ को सायं ४।२२ बजे मार्गी हर्षल सभी वायदों पर गली लगानेकी राय देता है। ता० २२ को रातमें गुरु उदयसे बादल वर्षा वायुवेग, श्रावण मासमें उदय होने से रुईके साथकी वस्तुएँ सोना चांदी सर्वधातु तम्बाकू गुड़ खांड किराना लालमिर्च हल्दीको प्रभावित करेगा। २९ जूनसे चली लाइन यहां निश्चित रूपसे बदल देगा। तिलहन-दलहनमें सरकारी दबावसे विचित्र चाल या मन्दा, ता० २२ से ता० २६ तक पञ्चक नक्षत्रोंमें उपर्युक्त क्षेत्रोंमें जहां वर्षा होगी वहां आगामी वर्षाकाल भी श्रेष्ठ रहेगा। किन्तु कृष्णा ५ को जहां भी आकाश निर्मल रहे, वायु जोरसे चले तो वहां वर्षाकी कमी रहेगी। ता० २५ को कन्या-भौम होते ही राहुसे राशि नक्षत्रयोग (शी० शनि+शुक्र+बुधयोगसे गतवर्ष खाद्याखाद्य तेल मन्दे) अफीम पोस्ता रुईके साथकी वस्तुएं काली व लालमिर्च किराना हल्दी तिलहन-दलहन गुड़ खांड सोना चांदी तांबा जस्ता पीतलमें भयानक चाल या तेजी होगी। ता० २६ को शुक्र नेपच्यून केन्द्रसे चांदीके साथ अन्य वायदे भी मन्दे. ता० २७ को बुध-शनि युतिमें रुई पाट रेशम एरण्डा शेयरर्स तेज, रातसे मिथुनाशे गुरु बुध ५ अगस्तको सवेरे तक बादल वर्षा चांदी दलहन तेज। कृष्णा ११ को रोहिणी नक्षत्रमें बादल वर्षा होना श्रेष्ठ उपज उत्तम होनेका चिह्न है तुरन्त मन्दा भी करेगी। ता० ३० को उफायां शुक्रसे व्यापारकी सभी वस्तुयें मन्दी, मारवाड़ कुरुक्षेत्र पञ्जाब राजस्थानमें घोर वर्षाकारक है। २ अगस्तको उफायां शुक्र का शी० पुनर्वसौ गुरुसे चरणवेध ता० ५ को सवेरे तक बादल वर्षा रुईके साथकी वस्तुयें सोना चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन चावल तेज, आज ही सवेरे कन्या शुक्र होकर राहु+भौम+शुक्र योगमें वर्षा हो तो सभी वस्तुओं में मन्दीका धमाका लाकर तेजी करेगा। इस योगका (समानांश) अंशात्मक योग ही तेजी लानेकी अपूर्व क्षमता रखता है। ता० ३ को कृष्णा ३० की वृद्धिसे रुईके साथकी वस्तुयें मन्दी, तिलहन-दलहन गुड़ खांडमें तेजी होगी।

आज ही सार्पे रविके प्रभावसे किरानेकी वस्तुओंमें अच्छी तेजी, सवेरे ७।४६ बजे मंगल राहुकी युति (युद्ध) से सभी वस्तुओंमें भयानक चाल, महोत्पात होगा। ता० ५ को सूर्य-हर्षल केन्द्रसे नेताओंका पतन वा अवसान गुड़ खांडमें मन्दा, व्यापारकी अन्य सभी वस्तुओंमें तेजी की भयानक चाल देगा, स बधान! आज ही वक्री बुधसे वर्षा प्रकोप, जनजीवन त्रस्त होगा। साथ ही शीघ्री कर्के गुरु होते ही (सूर्य+गुरु) कहीं-कहीं जलप्रलय और सभी वस्तुओंमें खतरनाक तेजी का कमाल होगा। भारतमें स्वर्णयुगारम्भकी नींव दड़ेगी। शुक्ला १ को **दक्षिण भारतमें** शनिवार चन्द्रोदय होनेसे उधर ३।४ मासमें कहीं नर संहार प्रजा-विग्रह समुद्री उफान महान् वर्षा जल-प्रलयसे जीवोंके प्राणनाश, हड़ताल-आन्दोलन गोलीकाण्डसे त्राहि-त्राहि होगी। सभी वस्तुओं में अप्रत्याशित रूपसे भयानक तेजीका चमत्कार होगा। सुपरीक्षित कुयोग है। ता० ७ को शुक्र-राहु युतिसे चांदीके साथ अन्य वायदे भी एकदम मंदे होंगे। ता० ८ शुक्ला ४ मंगलवारी, सप्तमी शुक्रवारी होनेसे चांदी दलहनमें अच्छी तेजी। शुक्ला षष्ठी गुरुवारी दशमी रविवार संयोगीसे रुईके साथकी वस्तुओंमें अच्छी तेजी आवेगी। ता० १० को सिंहे शनि अस्त पश्चिममें सन् १९४९ की भांति घोर वर्षा जल-प्रलय सोना चांदी सर्व-धातु रुई पाट रेशम सूत कपड़ा कागज काली-मिर्च मन्दे सम्भव। तिलहन-दलहस अन्नादि तेज. हस्ते भौम तथा बुध-शनिकी युति भी समर्थक है। ता० ११ को मध्याह्नमें पश्चिमास्त बुधसे बादल वर्षा वायुवेग, ता० ५ को चली वस्तुओंको लाइनको आज एकदम बदल देगा। आज ही शुक्ला ७ (तुलसी जयन्ती) स्वाति संयोगीमें पूर्वोल्लिखित क्षेत्र जहां भी वर्षासे प्रभावित होंगे, वहां आगे देव उठान तक सामयिक वर्षा होती रहेगी। ता० १४ शुक्ला ११ के क्षयसे सभी वस्तुयें तेज, रातसे वृषांशे बुध-शुक्र ता० १७ तक बादल वर्षा और मन्दा, ता० १७ को श्री सूर्यदेव, शनि-बुधसे युक्त होकर सिंह राशिस्स्थ होंगे। फलतः शेयर्स तेज, चांदीमें अच्छी तेजी तिलहन मन्दे, ता० १८ से मिथुनांशे शनि-शुक्र ता० २१ तक तिलहन-दलहनके भावोंको घटाते रहेंगे। श्रावणी पूर्णिमा धनिष्ठा संयोगी ५०% उपजकी सूचना गतवर्षकी भांति दे रही है।

भाद्रपद मास

इस मासमें ५ शनिवारसे अन्नादिमें भयानक तेजी, देशी घी गेहूँ मूंग तेज। १९ अगस्तको सूर्य-बुधकी अन्तर्युतिसे एक सप्ताह पूर्वसे चली आने वाली वस्तुओंकी लाइनमें परिवर्तन, किन्तु आज चांदी दलहनमें तेजी, इस मासमें उ० प्र० पञ्जाब हरयाना राजस्थान म० प्र० में जितनी जोरसे पूर्वी वायु चलेगी, तदनुसार उसी क्षेत्रमें वर्षा होती है, अधिक दिनों पूर्वी वायु चलने पर मक्काके दाने बढ़ने नहीं पाते तथा जिस तिथिसे जिस तिथि तक जहां पश्चिमी वायु जोरसे चलेगी, तो उसी क्षेत्रमें उसी तिथि से उसी तिथि तक आगे माघ मासमें पाला भी पड़ेगा, परीक्षित है। कृष्णा ४ के क्षयसे सभी वस्तुयें मन्दी, ता० २१ को शीघ्री पुष्ये गुरुसे नेत्र रोग, सोना चावल घी तिलहनमें मन्दा, रुई पाट सूत रेशम कपड़ा कागज कालीमिर्च तेज, ११।२१ बजे वक्री होकर पुनः कर्के बुधः

होते ही गुरु+बुध योगसे बादल वर्षा वायुवेग तो कहीं वर्षानाश, रुईके साथ की वस्तुयें मन्दी होकर तेज, सोना चांदी सर्वधातु दलहन तेज। ता० २५ को श्री कृष्णाष्टमीकी वृद्धिसे तेजीका उछाला, ता० २६ को कर्कांशे शनि-भौम ता० ३० तक तिलहन-दलहन शेयर्स तेज, ता० २६ को सिंहार्कसे दसवें दिन पूर्वोदयी बुधसे घोर वर्षा, सभी खाद्य वस्तुओंमें भयानक मन्दी या वस्तुओंकी चलती लाइनको बदल देगा। यहीं से शनिके साथ मंगल भी शीघ्री गति पर आजानेसे बढ़े भावोंको गिराते रहेंगे। राजकीय अंकुशसे व्यापारियों पर संकट आवेगा। ता० २८ को प्रातः नेपच्यून मार्गीसे बादल वर्षा वायुवेग, रातको बुध मार्गीसे बादल वर्षा, ता० २६ को चली वस्तुओंकी लाइन ता० २८ को एकदम बड़े जोर-शोरसे बदल देगा। ता० २९ को सायं अगस्त्योदयसे कहीं सूखा तो कहीं जलप्रलय दिखावेगा। ता० ३० की रातको पूफायां रविसे १३ सितम्बर तक उपर्युक्त क्षेत्रों में जहां भी जितनी ज़ोरसे जब-जब पूर्वी वायु चलेगी तदनुसार उस क्षेत्रमें वर्षा भी होती रहेगी। ता० ३१ को चित्रा भौम वस्तुओंके घटे भावोंको बढ़ा देगा। सोना लालमिर्च किराना गुड़ खांड तेज होंगे। ११।४५ बजे शनि दृष्ट तुला शुक्र (कन्या शीघ्री भौम+राहु) से सभी वस्तुयें तेज करेंगे। २ सितम्बर को शनैश्चरी अमावससे सभी वस्तुमें तीव्र। ता० ६ तक मंगल+राहु योग समर्थक रहेगा।

गुजराती भाद्रपद मास :—शुक्ला १ से आश्विन कृष्णा ३० तक ५ रविवार होनेसे घी तेल चावल अन्न रुई पाट रेशम मन्दे, श्वेत वस्तुओंके संग्रहसे लाभ होगा। ता० ४ को सायं ५।२१ बजे सिंहे बुध होते ही शी० शनि+सूर्य+बुध योग १७ अगस्तसे चली लायन यहां बदल देगा या मन्दा भी हो सकेगा। सायं सोमवारा (४५ मुहूर्ता) उत्तरशृङ्गी चन्द्रोदय सभी वस्तुओंमें मन्दीका धमाका लावेगा। शुक्ला ४ को चित्रा नक्षत्रमें वर्षा होनेसे सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी, शुक्ला ५ को स्वाति नक्षत्र से रुई पाट रेशम सूत कपड़ा कालीमिर्चके संग्रहसे चौथे मास लाभ दिखाई देगा। शुक्ला ४।५।७।८।१५ को बादल बिजली गर्जना हो तो उपज श्रेष्ठ, आगे अन्नादिमें अच्छा मन्दा, शुक्ला ६ शुक्रवारीसे १ मासमें रुईके साथकी वस्तुयें मन्दी होती जावेंगी। शुक्ला ७ को उपर्युक्त क्षेत्रोंमें अनुराधा नक्षत्रमें वर्षा न हो तो वर्षाकाल समाप्त होकर सभी खाद्य वस्तुओं में एकदम घोर तेजी आवेगी. वर्षा हो तो मन्दी परीक्षित है। ता० ६ को सायंसे पुष्ये गुरुको पूफायां रविका चरणवेध ता० ६ तक तिलहन दलहनमें अच्छा मन्दा, ता० ८ मन्दी, ता० ६ तेजी, ता० १० तुला शीघ्री भौम होते ही शनि दृष्ट शुक्र+भौमसे गेहूं चना दलहन मन्दे, तिलहन चांदीमें तेजी होगी। शुक्ला ८ को जो-जो लक्षण जिस-जिस क्षेत्रमें बादल वर्षा वायुवेग आदि होंगे, वे ही उस-उस क्षेत्रमें आगामी पूर्णिमाको चन्द्रग्रहण कालमें भी दिखाई देंगे। सुपरीक्षित है। ता० १३ को उफायां रविमें ता० २६ तक पूर्वोत्तरकी वायु उपर्युक्त क्षेत्रों में जहां भी चलेगी, वहां वर्षा श्रेष्ठ, उड़द-मूंग तिलहन-दलहन सोना चांदी तेज, रुई पाट रेशममें मन्दीका झटका, ता० १४ को सवेरे पूफायां बुधसे अन्नादि मन्दे, शुक्ला १३ के क्षय

से देशी घी सोना चांदी तिलहन-दलहन तेज, रुई पाट रेशम मन्दे। सायं ३।२० बजे पूर्वोदयी शनिसे सन् १९४९ की भांति घोर वर्षा जल प्रलय भी सम्भव। १० अगस्तसे चली लाइन बदले या मन्दा ही होगा ता० १५ को २।२५ बजे पूर्वास्त बुधसे बादल वर्षा सभी वस्तुओंमें भयानक उलटफेर, खाद्य वस्तुओंमें अच्छा मन्दा, रुई पाट रेशम तेज होंगे। ता० १६ कन्यांशे गुरु-बुध कल तक बादल वर्षा, चांदी तेज। पूभायां ४ केतुसे सोना चांदीके साथ अन्य सभी वस्तुयें भी तेज, रुई पाट रेशम सूत कपड़ा कालीमिर्चमें तेजीकी आशा है। शुक्लपक्षमें दो योगोंका क्षय देशी घी तेज करेगा। भाद्रपदी पूर्णिमाको पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रसे आगे मन्दा, आज ही शनिवारकी रातको खग्रास (पूरा) चन्द्रग्रहण होगा। मासफलसे सभी खाद्य वस्तुयें तिलहन-दलहनमें घोर मन्दा, बार फलसे काली वस्तुयें लोहा उड़द अफीम ज्वार बाजरा तेल के बीजोंके संग्रहसे ६ मास बाद लाभ, सोना चांदी अन्नादि बेचकर मन्दी आ जाने पर रुई पाट रेशम तेल दलहन गुड़ घी खरीदें। पश्चिमी पर्वताय प्रदेशों पर सङ्कट। नक्षत्र फलसे विद्वानों को कष्ट, लालपीले वस्त्र तांबा लालमिर्च हल्दी गुड़ खांड चनाके संग्रहसे तीसरे मासमें लाभ, कुम्भ-मीन राशिके ग्रहणसे जलजीवी सोडा लैमन बर्फ फैक्ट्री, नहर ट्यूबवैल विभाग, नाविक जलयान चालकों पर सङ्कट आवेगा। कर्क-सिंह-वृश्चिक-धनुराशिवालोंको रोग कष्ट हानि होगी। ग्रहणकालमें सिनेमा देखना वर्जित है। सगर्भा महिलायें तथा उपर्युक्त राशि वाले खुले आकाशमें नहीं निकलें। ग्रहणसे ४ दिन पहले पीछे विशेषकर ग्रहणकालमें ही बादल-वर्षा हो कि ग्रहण दिखाई ही न दे जैसी कि आशा भी है तो सारे अशुभ फल समाप्त होकर घोर सुभिक्ष (भयानक-मन्दा) होगा, सुपरीक्षित है। ता० १७ शनिवारकी रातको १२।४१ बजे श्रीसूर्यदेव राहुसे युक्त होकर कन्या राशिस्थ होंगे फलतः खनिज तेल रुई पाट रेशम सूत ऊन कपड़ा कागज़ कालीमिर्चमें अच्छा मन्दा। ग्रहणकालमें बादल होने पर तिलहन-दलहन गुड़खांडमें भयानक मन्दा, सोना चांदी सर्वधातु में गतवर्षकी भांति अच्छी तेजी आ सकेगी। यहांसे आगे दक्षिण-पूर्वकी वायु चले तो घोर गर्मी होने पर भी वर्षा नहीं होती। पूर्वोत्तर की वायु चले तो वर्षा अवश्य ही होगी।

आश्विन मास

इस मासमें ५ रविवारसे गेहूँ मक्का चावल मन्दे, तुअर मटर (बटला) तिलहन गुड़ खांड तेज, किन्तु यहां ग्रहणका फल बलवान् है। श्राद्ध पक्षमें उपजकी कमी-वेशी पर तेजी-मन्दी का अच्छा दौर चला करता है। १८ सितम्बर से मकरांशे राहु-सूर्य कल तक सोना चांदी तेज, तिलहन दलहन रुई पाट रेशम मन्दे, पूफायां बुधका पुष्ये गुरुसे चरण वेध कल तक बादल वर्षा, सोना चांदी सर्वधातु तेज। वर्षा होते ही खाद्य वस्तुमें मन्दी। ता० १९ बुध नेपच्यून केन्द्रसे सभी वायदे मन्दे, ता० १५ को चली वस्तुओंकी लाइन आज बड़े ही जोर-शोरसे बदलेगी। ता० २० को शीघ्री पूफायां शनि (सिंहांशे) से मूंग उड़दकी उत्पत्ति श्रेष्ठ, मूल्यवान् वस्तुओंके मूल्य घटावेगा। बाजार का प्रसङ्ग देखकर चलते रुखका कार्य करें। शी० स्वात्यां भौमसे तिलहन-दलहन गुड़ खांड लालमिर्च किराना सोना चांदी सर्वधातु सुपारी

तेज, आज कहीं-कहीं बादल वर्षा भी होगी। सूर्य राहु युतिसे महान् दुष्काण्ड, सभी वायदे मन्दे। सायन वृश्चिकके भौम अच्छी चाल देगा। ता० २१ कृष्णा ५ गुरुवारी ४ मासमें संवत् २०१५ की भांति गुड़ खांड तेज। सायं ३।१४ बजे उफायां बुधसे सभी वायदे मन्दे, सोना चांदी सर्वधातु मन्दी होगी। ता० २३ को शीघ्री कन्या बुध होते ही राहु+सूर्य+बुधयोग सोना चांदी सर्वधातु गुड़ खांड दलहन-तिलहन में तेजीकी अच्छी लाइन देगा। ता० २५ को मंगल-गुरु केन्द्रसे चांदी शेयर्स साथ अन्य वायदे भी मन्दे होंगे। ता० २६ गुक्र नेपच्यून क्रान्तिसाम्य (युति) से वर्षा और सभी वायदे मन्दे, ता० २७ कृष्ण ११ की वृद्धिसे खाद्य वस्तुयें तेज, किन्तु चन्द्र-गुरु युतिसे आज वर्षा, गुड़ तेज, शेयर्स तिलहन मन्दे, आज ही हस्ते रविसे वर्षा श्रेष्ठ, तिलहन-दलहन गुड़ खांड किराना हल्दी रुई पाट रेशम तेज करेगा। ता० २८ की रातको शी० हस्ते बुध (सूर्य-बुधका नक्षत्र योग ५ अक्टोबर तक) तिलहन-दलहन चांदी मन्दीमें खरीदें। ता० ३० की शामसे वृषांशे सूर्य-बुध २ अक्टोबर तक तिलहन दलहन मक्का मन्दे, किन्तु रातको सूर्य-बुधकी बहिर्युति १ सप्ताह पूर्वसे सभी वस्तुओं में तेजीकी चाल देगी। २ अक्टोबरको सोमवती अमावस (१ चरणसे कम) ओछी घड़ीकी आगे मार्गशीर्ष और माघमासमें तदनुसार मन्दी ला देगी। ता० ६ को बुध प्लूटो युतिसे चांदीके साथ अन्य वायदे भी तेज, १२ बजे चित्रा बुधसे खाद्य वस्तुयें मन्दी, ता० ७ शुक्ला ६ के क्षयसे सभी वस्तुय तेज, रुई पाट रेशम सूत ऊन कपड़ा कालीमिर्च मन्दीके झटकोंमें खरीदो, आगे तेजी होगी। ता० ९ को शी० विशाखायां भौमसे गेहूँ चना तिलहन-दलहन किराना लालमिर्च सोना चांदी तेज होंगे। ता० १० को तुला बुध होते ही शनि दृष्ट शुक्र +मंगल+बुध योगसे सोना चांदी सर्वधातुके साथ तिलहन-दलहन गुड़ खांडमें भी मन्दा, साथ ही राहु+सूर्ययोगसे सोना चांदी सर्वधातु में तेजी भी संभव, रुई पाट रेशम कपड़ा कागज़ कालीमिर्च ऊनके साथ तिलहन-दलहन में भी मन्दा, सम्भव है। तुलांशे गुरु-बुध दोपहर से २ दिनमें चांदी तेज, वर्षा होते ही सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी करेगा। सूर्य-प्लूटोसे महोत्पात शुक्ला ९ मंगलवारी उड़द मूंग मोठ रमास (लोबिया) रुई चावल धान बाजारमें आते ही खरीदनेसे आगे दिनोंदिन लाभ, चैत्र मासमें विशेष लाभ होगा। ता० ११ विजयादशमी बुधवारी श्रवण संयोगीसे सभी खाद्य वस्तुओं में आकस्मिक विशेष मन्दा, १ बजे भौम हर्षल युतिसे महोत्पात, सभी वायदोंको हिलाकर धर देगा। ता० १४ को ढाई बजे स्वात्यां बुध से सभी वस्तुयें मन्दी, ता० १६ को सायंसे मकरांशे राहु बुध १८ तक चांदीको मन्दा करेगा। लाभ-हानिका पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता महोदय अपने ही ऊपर जानकर बाजारकी स्थितिको भी देखते हुये अपनी शक्तिके अनुसार ही व्यापार करें।

संस्कृतके महाकाव्य 'बुद्धविजय'का
साहित्य-अकादमीके द्वारा संमान

गत ११ मार्च १९७७ को साहित्य अकादमीका एक महोत्सव हैदराबाद (दक्षिण) में हुआ। इस अवसर पर जो ग्रन्थ पुरस्कृत हुए उनमें बुद्धविजय काव्य' एक है। इस काव्यका परिचय मैं (वर्ष ९ संख्या १) में दे चुका हूं। इस उत्तम काव्यका संस्कृत समाजमें बौद्ध धर्म, दर्शन तथा तथागतके जीवनकी अभिरुचि जगानेमें महत्वपूर्ण स्थान रहेगा। इस ग्रन्थके लेखक तथा ग्रन्थके परिचयके विषयमें अकादमी के सचिवकी यह प्रस्तावना थी—

"संस्कृतके लब्धप्रतिष्ठ कवि तथा अध्येता श्री शांतिभिक्षु शास्त्रीका जन्म १९१२ में उत्तर प्रदेशके बीबीपुर नामक स्थानमें हुआ था। उन्होंने १९३८ में साहित्याचार्यकी उपाधि अर्जित की और एक स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। प्रोफेसर फ्रोडरिष वेलरके निर्देशनमें लाइप्त्सिश से उन्होंने डी० फिल० उपाधि प्राप्त की। १९४६ से उन्होंने श्रीलंका, शान्तिनिकेतन तथा जर्मन जनवादी गणतत्रमें अध्यापन किया और श्रीलकाके विद्यालंकार विश्वविद्यालयके संस्कृत विभागके प्राध्यापक तथा विभागाध्यक्ष पदसे सेवा-निवृत्त हुए। सस्कृतमें बौद्ध-अध्ययन पर उनकी अनेक कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके कई शोध-निबन्ध सुप्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। वे संस्कृत, अंग्रेजी तथा हिंदीमें लिखते हैं और भर्तृहरिके वाक्यपदीय ब्रह्मकांड पर उनका शोध-प्रबंध १९६३ में लाइप्त्सिशसे प्रकाशित हुआ है।

'बुद्धविजयकाव्यम्' को अपनी सरल, सीधी शैली, सुचारु भाषा तथा महात्मा बुद्धके जीवनकी घटनाओंके संतुलित एवं गरिमामय चित्रणके लिए संस्कृत साहित्यको एक विशिष्ट देन माना गया है।'

पुरस्कारको ग्रहण करनेके अनन्तर संस्कृत में संस्कृतके पुरस्कार-विजेता श्री शान्तिभिक्षु शास्त्रीका भाषण हुआ। उसका हिन्दी रूपान्तर यों है—

"संमान्य अध्यक्ष महानुभाव! देवियों और सज्जनो!

मेरी जीवनयात्रा बहुमुखी नहीं है। विद्यार्थीका जीवन, अध्यापकका जीवन तथा गृहीत-विश्राम अध्यापकका जीवन, यह सब स्वाध्याय तथा प्रवचनसे युक्त रहा है, अब भी वैसा ही है। मेरे अध्यात्मिक भावका परम आलंबन तथागतकी भक्ति है, बौद्ध-सूत्र एवं शास्त्र मेरे अनुशीलनके क्षेत्र हैं, संस्कृत वाङ्मय मेरे अध्ययन तथा अध्यापनका विषय है।

तथागतकी अनुस्मृतियोंसे पूर्ण मेरे मनमें भगवान् बुद्धका जैसा चरित्र प्रतिबिंबित हुआ है, वैसा मैंने 'बुद्धविजयकाव्य' में गूंथा है। भगवान्के चरित्रसे मेरा हृदय लोककल्याणके लिए उत्कंठित हो जाता है, प्राणियोंके प्रति मैत्री बढ़ती है, अहिंसाका बल अधिक होने लगता है, कलह एवं विवादोंकी शान्ति होती है, मानवोंके अभेद-भावकी व्यापकतासे पृथ्वी-तल एक अखड जान पड़ता है। जैसा मेरा चित्त

होता है, वैसा ही सबका हो—इस प्रकारके, विपुल, उदार, आकाशके सदृश व्यापक, महान् चित्तोत्पादके साथ मैंने 'बुद्धविजयकाव्य' की रचना की है।

काव्यकी भाषा सरल रखी है। निरंकुशता का सत्कार नहीं किया है। किंतु तीन-चार स्थानों पर सहृदयोंके विनोदके लिए विलक्षण भी कह डाला है। धर्म तथा दर्शनसे युक्त भगवान्‌के संपूर्ण जीवनको वैसा गुंफित किया है जैसा सब लोगोंको सरलतासे समझमें आ सके। इस समय काव्यके क्षेत्रमें धर्मकवि अश्वघोष अथवा ललित कवि कालिदाससे स्पर्धा करनेकी किसीमें क्षमता नहीं है, फिर भी काव्यके द्वारा सब प्रकारके भावोंकी अभिव्यंजना संस्कृतके द्वारा आज भी की जा सकती है। आज भी संस्कृत समझने वाले बहुत हैं। पर संस्कृतमें गद्य-पद्यके रचयिता विरल होते जा रहे हैं।

ऐसा होते हुए भी भारतीय भाषाओंमें संस्कृत भाषा एक गिनी जाती है। इसमें आज भी बहुत शक्ति है। भगवान् बुद्धके चरित्र द्वारा यह शक्ति और भी बढ़े, यह भी मेरी अभिलाषा रही है। इसके अतिरिक्त हास्य एवं रोदनसे पागल हुई दुनियाको तथागतके आलंबन वाला तथा उनके चरित्रसे उद्दीप्त हुआ भक्तिरस होशमें लादे, यह बलवती आशा भी मेरे हृदयमें विराजती रही हैं, इसीलिए लोक-कल्याणको संपन्न करने वाले विविध प्रयोजनोंके वश, काव्य के बहाने, मैंने भगवान्‌की उपासना की है।

इस मेरी उपासनाको यह साहित्य संस्थान पुरस्कृत कर रहा है, इससे मेरे हृदयमें आनन्द है। सब सहृदयोंको भी प्रसन्नता है। उन श्रेष्ठ विद्वानोंको भी हर्ष है, जिन्होंने मेरी रचनाका अभिनन्दन किया है। सब गुणोंमें कृतज्ञता मुझे बहुत अधिक पसंद है। इस अवसर पर अपनी कृतज्ञताको प्रकाशित करता हूँ। अधिक क्या? जो साहित्यकी उपासना करते हैं, उनकी समृद्धि हो। इस साहित्य संस्थानकी अभिवृद्धि हो जो सुभाषित प्रणेताओंका संमानकारी है। भवतु सर्व मंगलम्।"

संस्कृत-भाषामें काव्यप्रणयन तथा शास्त्र रचनाकी क्षमता अब भी बनी हुई है। 'बुद्ध विजयकाव्य' इसका साक्षात् प्रमाण है। आशा करता हूँ कि यह ग्रन्थ सुप्रचरित हो तथा अधिकाधिक संमानित हो।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

त्रैमासिक व्यापार भविष्य

[श्री पं० ओंकार प्रसाद दैवज्ञभूषण, हापुड़ उ० प्र०]

ता० २१ जुलाई १९७८ से १६ अक्तूबर तकके मध्य श्रावणसे भाद्रपदमें कुछ जिन्सोंमें अच्छी तेजी आयेगी, क्योंकि श्रावणमें ५ शुक्रवार चांदी जूट पाट बारदाना बोरी मिर्च धनिया जीरा व मेवोंमें मंदीकारक है, पर भाद्रपदमें ५ शनिवार तिलहन तेल गुड़ खांड खडसारी तीसी कालीमिर्च हल्दी अन्य काली व पीली वस्तु कुछ तेजी पर जायेगी, पर शनि के अधिकारकी वस्तुओंमें जोरदार तेजी चमकेगी और आश्विनमें ५ रविवार साथ ही बुधास्त भयंकर मंदीका सिर तोड़कर एकदम तेजीके चांस सम्पन्न होंगे, अतः सावधानीसे बात पर जमे रहनेकी आवश्यकता नहीं है बल्कि तारुणी करना वायदे सट्टोंमें तथा हाजिरमें भी अच्छा रहेगा। चनाकी दाल वेसन जुवार गुवार मटर तथा गुड़में तेजी अच्छी चमकेगी फसलके भावोंसे सवाये ही नहीं दुगने तक रेट बननेकी पूरी संभावना है। इसके अलावा व्यापारपति बुध ता० २१ जुलाई १९७८ से सुपीरियर कुछ वस्तुओंके भावोंको बढ़ाने वाला चलेगा। ता० २१ को १६ वें चटे पर इसी दिन हर्षल प्रजापति ब्रह्मा मार्गी होगा अतः आज उपरोक्त घंटेसे कुछ वस्तुओंमें भारी मंदी धातुवानेमें आयेगी, पर आगे बुध वक्र जब गुरु अगस्तमें होगा तो ता० ४ व ५ अगस्तसे 'बुध वक्रे रसःक्षयः' यह कहावत चरितार्थ होगी। ता० ६ अगस्त पर शनि अस्त भी इसके सहायक होंगे। ता० १८-८-७८ पर बुधदेव भी सूर्यभगवान्से पीछे चलेंगे तब दिल्ली लाइनें पलटना शुरु हो जायेंगी। वर्षात् होते हुए भी खाद्य वस्तुओंके अगाऊ सौदोंमें तेजी बार बार भड़केगी। सूर्य-राहुका युद्ध ता० २० सितम्बर पर अच्छी तेजी लायेगा और पितृपक्षके बाद ता० २ अक्तूबरसे हर वस्तुमें तेजीका दौर प्रारम्भ होगा। जूट पाट शेयर व चांदी सोनामें तेजी, साथ ही चना मटर मिर्च जीरामें तेजी, और मेवोंमें धीमी गतिसे मंदी समाप्त होगी।

अब आगे हम महीनेवार खुलासा चांसो का पथ-प्रदर्शन करते हैं, आशा है व्यापारी भाइयोंको इस लेखसे लाभ होगा, तो भी हम यह चेतावनी देते हैं कि मिती या तारीख पर अगर लिखे अनुसार मार्केट न चले तो सौदा फौरन डबल कर देना चाहिये, यानि दादाकी लकीर पर फकीर नहीं बनना चाहिये।

श्रावण मास सं० २०३५

संवत् २०३५ श्रावण वदी ३ में गुरु उदय होनेके असरसे अनाजोंमें व नशीली वस्तुओं में मन्दा होगा। गुरु शक्कर खांडमें चटकी आयेगी। श्रावण वदी पंचमीको चन्द्रवार होनेसे २ महीनेमें ही मूंग लहसन चावल चांदी जूट पाट बारदाना तथा शेयरोंमें तेजी होगी तथा रुई कपास सूतमें मन्दी होगी। श्रावण वदी साते बुधवारको १८ दिनमें ही रुई, सूत, सूती कपड़ा, तिल, तेल, घी, गेहूँ, चना, चौ, राई चावल मसूर मोठ तेल होगी। श्रावण वदी एकादशी उ०फा० शुक्र होनेसे १४ दिनमें ही गेहूँ चना चावल तिल तेल तिलहन गुड़ खांड

में तेजी होगी। श्रावण वदी त्रयोदशीको मंगल वार होनेसे ४५ दिनमें धान्य चन्दन केशर कपास सूत रुई चांदी तेज होगी। नशीली वस्तुएं मन्दी होंगी। श्रावण वदी चौदशको वक्री बुध होनेसे १५ दिनके अन्दर धान्योंमें मन्दी तथा घी तेल तिलहन अरन्डा सींगदाना अलसी सरसों चांदी कपड़ा सूतमें तेजी होगी। पीतल होहा शेयर टाट आर्डनरीमें तेजी होगी। श्रावण सुदी पड़वाको शनिवार होनेसे २० दिन में घी देशी, सूत कपास सूती वस्त्रोंमें तेजी होगी। तथा लोहा पीतलमें तेजी होगी। श्रावण सुदी ५ को शनि अस्त होनेसे ८ दिनमें सोना चांदी रुईमें तथा कपास विनोंला जूट पाट वारदानामें घटावढ़ी होगी। श्रावण सुदी सातेको बुधास्त होनेसे ११ दिनमें घी गुड़ खांडमें मन्दी होगी। घी तेल तिल तिलहन सींगदाना अरन्डा तथा सरसोंमें घटाबढ़ी होगी। श्रावण सुदी १३ को सिंहे अर्क होनेसे १२ दिनमें चांदी सोना लोहा तांबा पीतल शेयर तथा रुई कपास चावल सूती वस्त्रोंमें मन्दी आयेगी। सिंहकी संक्रान्ति होनेसे १ मासमें ईख गुड़ शक्कर तथा लाल पदार्थोंमें सोना चांदी तेल घी धान्योंमें मंदी होगी। सलूनोंसे १४ दिनमें ज्वार मूंग चांदी दाढा मिर्च अफीम तेज होगी। कपास घी शक्कर. गुड़ नमक तेल तिल अरन्डा सींगदानामें तेजी होगी। श्रावण सुदी पूर्णमासीसे १४ दिनमें सूती वस्त्रोंमें तेजी होगी। इसके अलावा सन पाट जूट वारदानामें लास्ट तेजी होगी, ऊँचेमें बेचकर आगे मन्दी आने पर स्टाक नहीं करें।

भाद्रपद मास सं० २०३५

भाद्रपद वदी पड़वामें पुष्ये १ गुरु होनेसे १० दिनमें चांदी सोना पीतल तांबा लोहा टाटा आयरनमें तेजी होगी। भाद्रपद ४ घटनेसे ८ दिनमें उड़द मूंग गुड़ चीनी शक्कर आदि मीठोंमें मन्दी होगी। भादो वदी ६ कों मघा ४ पादे शनि २० दिनमें सोना कपड़ा चावल गेहूँ सरसों तिल घी तेज होंगे। आवरेज मन्दा होगा, भादों वदी १० को मार्गी बुध होनेसे १४ दिनमें सोना चांदी कपास रुई सूती कपड़ा चावल गेहूंमें तेजी होगी। भादों वदी एकादशी को चित्रा भौम होनेसे ८ दिनमें गेहूँ सैंचूरी चना मटर मोठ तिल तेल तिलहन आदिमें तेजी होगी। भादों सुदी ३को सिंहमें बुध होनेसे गेहूँ जौ चना ज्वार वालरा तिल अरन्डा सींग-दाना अलसी सरसों गुड़ खांड आदि सभी वस्तुओंमें मन्दीका रियक्सन रहेगा। भादों सुदी ८ को तुला भौम होनेके कारण १४ दिन में सोना चांदी लोहा तेल घी सरसों मूंग बांस अफीम रेशम कपास तेज होगी। भादों सुदी ११ को उ०फा० सूर्यसे तथा तिथि घट जानेके कारण १८ दिनमें कपास सूत रुईमें तेजी, बाकी वस्तुओंमें मन्दी होगी। भादों सुदी द्वादशीको शनि उदय होनेसे एक महीनेमें नारियल तिल तेल कपास धीमें तेजी होगी। भादों सुदि त्रयोदशीको बृहस्पतिवार होनेसे ५ दिनमें सोना चांदी मोती मूंग पीतल तांता जस्ता सिलवर आदि धातु पदार्थोंमें मन्दी होगी। भादो सुदी चौदशको शुक्रवार होनेसे एक मासमें ही चना गेहूं रुई कपास सूत सन तेज होगा। पूर्णिमा शनिवारी व्यापारों पर अंकुश लगाने वाली है।

आश्विन मास २०३५ वि०

आश्विन वदी ३ को पू०फा० शनि होने

से गेहूं चना मटर गुड़ खांड चीनीमें तेजी होगी। आश्विन वदी ४ स्वा० भौम होनेसे सोना चांदी गुड़ खांड रस रुई शेयरमें मन्दी होगी। आश्विन वदि सातेको कन्या बुध होने से १४ दिनमें गेहूं ज्वार गुड़ खांड सन जूट पाट कपास हल्दी लवणमें तेजी होगी। आश्विन वदी आठें पुष्य गुरु होनेसे ४५ दिनमें गेहूँ कपास रुई जौ चनामें तेजी आकर मन्दी होगी। आश्विन वदी ११ को बुधवार होनेसे १४ दिन में धान्य गेहूँ चना कपास अरहर सूत केशर लाख चपड़ा रुई तेज होगी। आश्विन वदी ११ को वृहस्पतिवार होनेसे १२ दिनमें ही चांदी सोना पीतल तांबा शेयर अरन्डा सींगदाना रुईमें घटाबढ़ी रहेगी, तथा गुड़, खांडमें तेजी होगी। आश्विन सुदी पड़वाको चन्द्रदर्शन होनेसे १० दिनमें धान्यों तथा मोटे अनाजों व गुड़ जूट पाटमें मन्दी आयेगी। आश्विन सुदी ६ को तिथिक्षय है इसलिए एक मासमें गेहूं चना चावल जौ मटर मसूर अरहर आदि दालोंमें तेजी होगी। तथा रुई कपास ज्वार वाजरा, गुड़में घटाबढ़ी चलेगी। आश्विन सुदी ९ मंगलवारी होने से ४५ दिनमें सर्व धान्य उड़द मूंग रुई सन कपासमें तेजी होगी। इसी दिनसे १५ दिनमें ही सोना चांदी रुईमें घटाबढ़ी चलेगी। आश्विन १० को बुधवार होनेसे १२ दिनमें चांदी सोना रुई कपास सूत शेयरमें घटाबढ़ी रहेगी। गेहूं लोहा नारियल जूट पाटमें साधारण तेजी होगी। आश्विन सुदी १० को चित्रामें रविके होनेसे २५ दिनमें गेहूं चना सोना चांदी लोहा तांबा पीतल जस्तामें तेजी होगी। रुई कपास गुड़ खांडमें तेजी होकर मन्दी होगी। आश्विन सुदी १२ को स्वा० बुध होनेसे १४ दिनमें चांदी सोना तांबा पीतल जस्ता शेयर मेगनीज लोहा आयरन टाटा आर्डेनरी आदि धातु पदार्थोंमें तथा गुड़ खांड तेल हल्दी रुई सन जूट पाटमें तेजी होगी। आश्विन सुदी १५ सोमवारकी होनेसे ८ या १० दिनमें ही गेहूं चना मटर तथा दालोंमें तेजी होगी। तथा चावल हल्दीमें घटाबढ़ी चलेगी, पर मंदीमें आगे स्टाक लाभ देगा।

व्यापार वाणी

श्रावण, भाद्रपद, आश्विन सं० २०३५ वि०

[श्री शंकरलाल गौड़ "शम्भु कवि" तपस्थली दूरा (आगरा)]

श्रावण मास

श्रावण मासमें पांच शुक्रवार हैं जिसका फल इस प्रकार है "शुक्रस्य पंचवाराश्च यत्र मासे निरंतरम्। प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥" अर्थ स्पष्ट है कि पांच शुक्रवार [illegible]में सुख तथा सुभिक्षकारक हैं। केतकी गणितानुसार श्रावण कृष्णा १ का क्षय है, अतः ३ दिन तक धातुवानेमें तेजीका रुख प्रायः बनता है। श्रीविश्वविजय-पंचांगके गणितानुसार पूर्व दिशामें गुरुका उदय श्रावण कृष्णा ३ शनिवारको हुआ है, जो एक पक्ष तक एक तरफा ही तेजीका चांस बनता दिखाई देता है।

परन्तु कन्या राशि पर मंगलका प्रवेश एकदम तेजीको रोकते ही भीषण मंदीका सूचक है। दैनिक नक्षत्र गतिके अनुसार आर्द्रा नक्षत्र श्रावण कृष्णा १३ मंगलवारको होना चणा, हल्दी, जीरा, धनिया पर एकदम मंदीका रुख बताता है। अमावस्या गुरुवारको ६० घड़ी, शुक्रवार को अमावस्या १।५०, आश्लेषा नक्षत्र पूर्ण ६० घटी तथा इस दिन वक्री बुधका होना अनाज गल्ला, गेहूं, चणा, दाल, किराना वस्तुओंमें अच्छी तेजी होती है। श्रावण शुक्ला १ शनिवारको कर्क राशि पर गुरुका आना महावृष्टि, देशभङ्ग, (अर्थात् केन्द्रीय मंत्रिमंडल में परिवर्तन) तथा तेजीका सूचक है, यथा— "कर्के गुरौ महावृष्टिर्देशभङ्गो महार्घता।" शुक्लामें शनिका अस्त जन-क्रान्तिका द्योतक है। द्वितीया तिथिको चन्द्रदर्शन मुहूर्त ३० गल्ले की स्थितिको समभावमें ले जाते हैं। पंचमी बुधवारको शनिका पश्चिम दिशामें अस्त होना गल्ले धातुवाने किरानाके भावोंमें गिरावट लाता है। सूर्यशुक्र मंगलका एक राशिमें रहना घी, तेल मसूर मक्कामें तेजी तथा महाभय उत्पन्न होता है।

भाद्रपद मास

इस मासमें पांच शनिवार हैं, इसका फल भारतीय ज्योतिष फलित ग्रन्थोंमें इस प्रकार है। यथा :—शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी, ईशानदेशभङ्गश्च वह्निदाहो महार्घता॥ वदी पक्षमें तिथिका क्षय होकर वृद्धि होना नेष्ट तथा भयप्रद है। मासका प्रारंभ शनिवार से हुआ है। शनिवारकी अमावस्या तथा पूर्णिमा है, अतः दुर्भिक्ष जनविद्रोह तथा विश्वके राष्ट्रों में संघर्ष होनेकी प्रायः संभावना बनी रहती है। कन्या राशि पर भाद्रपदमें सूर्यका होना वर्षाको रोक देता है। "कन्यार्कतो भाद्रपदेऽल्पवृष्टिः" धान्यभाव प्रायः तेज होते हैं। बाढ़ भूकम्पकी सम्भावना महाराष्ट्र, आंध्र तथा उत्तरप्रदेश राजस्थानमें बनी रहती है। धातुवाने पर भीषण तेजीके योग प्रायः बनते हैं।

आश्विन मास

कृष्णपक्षमें तिथिकी वृद्धि तथा शुक्लपक्ष में तिथिका क्षय बढ़ती हुई तेजीमें मंदीका धमाका लाते हैं। यथाह :—कृष्णपक्षकी तिथि बढ़े, शुक्लपक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे सभी वस्तु घट जाय॥" वदी पक्षमें कन्याका बुध तिल, तैल, घी, गेहूं, चना, मटर अरहर जौ पर तेजी लाते हैं। तथा सुदी पक्षमें तुला राशि पर बुधका जाना एकदम मंदीका रुख दिखलाते हैं। मंगल ग्रहका अतिचार वायुचार अल्पवृष्टि तथा महाभय, अग्निभय का सूचक है वृष्टि विज्ञान ग्रन्थोके पर्यवेक्षणानुसार उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बंगाल दिल्ली के आसपास स्वल्प वृष्टि होती है। इस मासमें कोई भी ग्रह वक्री दिखाई नहीं दे रहा है अतः विशेष भयप्रद नहीं है। मंगलवारको चन्द्र दर्शन ३० मुहूर्त अराजकता पैदा करने वाला सिद्ध होता है। दशहराके आसपास प्रायः वर्षाके छुटपुट योग व शीतलहरसे विषम ज्वर, कास, प्रतिश्याय रोग संभव होते हैं, ऐसा स्पष्ट है। इस मासमें मजीठ, नारियल, तिल, तेल, घी, पाट, जूट, शेयर, ऊन, अनाज, अफीम, कपूर, चन्दन, हल्दी, हरड़, हींग रेशम उड़द, शक्कर पर अच्छी तेजी आती है। आश्विन कृष्णा एकादशी पूर्ण घटी है। [illegible]

अनुभव सिद्ध मंत्र तंत्र प्रयोग

[लेखक :— श्री मोतीलाल जैन ज्योतिषी]

(१) युद्धमें विजय पानेका मंत्र—"ॐ नमो भगवती ज्वालामालिनी गृद्धगण परिवृते ठः ठः नमः।"

विधि--इस मंत्रको एक लक्ष जपिये। विधि पूर्वक जाप करके सिद्ध कर लेवे। फिर युद्धके लिये इस मत्रको जपता हुआ यात्रा करने वाला युद्धमें स्वयं ही विजयलक्ष्मीका स्वामी होता है।

(२) स्तम्भन तंत्र—सफेद सरसोंकी जड़को मुँह या सिर पर रखकर युद्धमें जाने पर वाणोंका स्तंभन होता है, यानी उस प्राणी के बाण नहीं लगते।

(३) लक्ष्मी प्राप्ति तथा सिद्धि अक्षय मंत्र—ॐ नमो आदि योगिनी परम योग श्री परममाया महादेवी शत्रु टालनी दैत्य मालिनी मनवांछित पूरणी धन आण वृद्धि आण जस सौभाग्य आण न आन तो आदि भैरवी तेरी आज्ञा फुरै गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

विधि—पहले इस मंत्रका सवा लक्ष जाप दीप धूप पुष्प नैवेद्यादि विधिसे पूर्ण कर सिद्ध कर लेवें। फिर १०८ वार नित्य जाप किया करें और १०८ या २१ बार चावलको मंत्रित करके भोजन वस्तु भंडारमें रखे तो अक्षय (बढ़ोत्तरी) होय तथा लक्ष्मीका अटूट भंडार भरा रहे।

नोट—ऊपर लिखे मंत्रादि व्यापारी भाइयोंके लाभार्थ लिख दिये हैं, जो सज्जन इनके प्रयोग द्वारा विधान करके लाभ उठावें वो कृपा करके हमको इत्तला जरूर करें कि हमने अमुक विधान द्वारा अमुक लाभ उठाया है ताकि हम अपनी मेहनतको सफल समझ कर अगले वर्षके अंकोंमें और अनुभवी विद्वानोंके द्वारा आपकी अधिकसे अधिक सेवा कर सकें।

नोट :—मंत्रादि विधि विधानके अतिरिक्त जो सज्जन जीवनमें काम आने वाले दुःख सुख रोग नौकरी लक्ष्मी प्राप्ति आदि आदि कार्यके प्रश्न भी करेंगे तो उनका उत्तर भी जवाबी पत्र आने पर बिना फीसके तुरंत जबाब सहित पिया जायेगा। परन्तु वह सज्जन हमारी अनुभव योग चांस पुस्तकका ग्राहक होना जरूरी है, शेष जानकारी जबाबी पत्र द्वारा करें।

गाय भैंस आदि चौपायोंके भाव बढ़ जाते हैं। यथा :—आश्विन्येकादशी कृष्णा वारयोबुध सोमयोः। महोषीणां गवांमूल्यं महत्संजायते जने॥" चन्द्र शनिकी युति इस मासमें सभी वस्तुओंमें अच्छी तेजी करने वाली हैं। शुक्ला नवमी मंगलवारकी होनेसे कपास, सूत, सण उड़द, मूंगका स्टाक करनेसे भविष्यमें लाभ होता है।

ज्योतिष अध्ययनके संदर्भमें

ज्योतिषीय-भविष्यवाणी

[लेखक :—श्री पं० जयसिंह शर्मा ज्योतिषी]

पाठकोंने 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' दिनांक ७ से १३ मई ७८ की भविष्यवाणियोंका रसास्वादन किया होगा, उसी क्रममें अपने विचार प्रस्तुत करता हूँ।

जब-जब सिंह राशिमें शनि मंगलकी युति हुई है संसार तथा भारत भूखण्डमें अशांति उपद्रव क्रांतियां, युद्ध झगड़े हुए हैं, उथल-पुथल तथा विप्लव हुए हैं। प्रकृति-प्रकोप हुए हैं। इन प्रकोपोंसे जनता त्राहि त्राहि कर उठी है। ऐसा ही योग इस वर्ष १९७८ सं० २०३५ में बन रहा है। यह वर्ष जनताके लिये शुभ-फलप्रद नहीं है। देशमें अराजकता, गुण्डापन, तथा अशांति हिंसाका ताण्डव नृत्य होगा। गृहयुद्ध जैसी स्थिति होगी। जनता सरकारको चेतावनी है कि वह समयसे पूर्व ही सतर्क एवं सावधान होकर व्यवस्था करले। चाहे मीसा जैसा कानून ही लागू करना पड़े। जनता को भी सावधान एवं सतर्क होना अनिवार्य है। शांति स्थापनामें सहयोग करना अत्यावश्यक होगा। देशमें आंतरिक स्थिति अभी से ही दिन पर दिन विकृत हो रही है। देशमें लूटपाट, मारकाट, डकैती, दुर्घटनाओंका जोर बढ़ेगा। अपहरण तथा नारीजातिको अपमानित करनेके मामलोंमें वृद्धि होगी। प्रधानमंत्री श्रीमुरारजी भाईकी "निर्भय बनो" की घोषणा देशमें अशांति एवं अराजकता बढ़ानेमें वृद्धि कर रही है, कारण गुण्डेजन तथा राजकतत्व और कांग्रेस (इ) विरोधी पार्टी हर हथकडेसे देशमें अशांति पैदा कर जनता सरकारको असफल बनानेमें संलग्न है तथा रहेगी। इस वर्ष देशमें कई प्रकारके आंदोलन, तथा हड़तालें चलती रहेंगी। अराजकतत्व स्वतंत्रताका नाजायज़ लाभ उठावेंगे। अशांति फैलाने वाले निर्भय होकर खेलेंगे। शासन नामकी कोई वस्तु न रहेगी। नारी जाति तथा छात्रों के लिये यह वर्ष शुभ नहीं है। शासन पंगु होगा। किंकर्त्तव्यविमूढ़ होगा। जनताजनार्दन जनता सरकारको कोसेगी। जनता पार्टीमें मतभेद उग्ररूप धारण करेंगे। पार्टीके टूटनेका खतरा चरम बिन्दु तक पहुंचेगा। कदाचित् कोई अदृश्य शक्ति ही जनता पार्टीको संगठित रख सकेगी। यह वर्ष जनता सरकारके लिये अग्नि परीक्षा वा कसौटीका होगा। वर्षका पूर्वार्द्ध चौधरी श्री चरण सिंहेके लिये शुभ नहीं है। श्रीजगजीवनरामको भी अरिष्ट योग है। श्रीमान् राष्ट्रपति महोदयको स्वास्थ्यका ध्यान रखना सर्वोपरि है। जनतापार्टीकी फूटकी उग्रतासे श्रीमान् प्रधानमन्त्री महोदय परेशान होकर त्यागपत्रका विचार करेंगे। श्रीचन्द्र-शेखर असफल व्यक्ति सिद्ध होंगे। इस वर्ष २-३ प्रान्तोंमें मुख्यमंत्रियोंके बदलनेकी संभावना है। केन्द्रमें भी कुछ परिवर्तन योग है।

आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, जातीयता, साम्प्रदायिकता आदिकी विषमताएं तथा-स्थिति देशमें चिन्तनीय एवं परेशान करने वाली होगी। महर्घता बढ़ेगी, कर्मचारियों व छात्रोंकी हड़तालें चालू रहेगी। प्रकृति-प्रकोप तथा भूचालकी भी संभावना है। कई भयंकर अग्निकांड, रेलदुर्घटना, तथा यान दुर्घटना होनेकी संभावना है।

श्रीमती इंदिरागांधी व उनके पुत्र संजयके लिये यह वर्ष शुभ नहीं है। दोनोंको ही कारागारका योग है। विशेषकर संजयके लिये। श्रीमती इंदिरा गांधी देशमें अराजकतत्वोंको हिंसाके लिये प्रोत्साहित करेंगी। देशमें शांति बनाये रखने हेतु इन्हें नजरबन्द कर दिया जानेकी संभावना है। इस वर्षमें २-३ नेताओं के निधनकी भी संभावना है।

पाकिस्तानकी स्थिति भी गंभीर होगी। सैनिक शासन चालू रहेगा। श्रीभुट्टोको यह वर्ष प्राणलेवा सिद्ध होगा। फांसी हो जानेकी संभावना है। अफगानिस्तानमें भी जनता नये शासनको स्वीकार नहीं करेगी। मुस्लिम देशों में महान् संकट, गृहयुद्ध व क्रांतियां होंगी। बंगलादेशमें भी अशांति रहेगी। इजरायलियों और फिलस्तीनियोंमें युद्ध चलता रहेगा।

श्रीसादातके लिये यह वर्ष शुभ नहीं है। मिश्र देशमें भी अशांति व परिवर्तनका योग है। श्री कार्टरको भी यह वर्ष शुभ नहीं है। उनकी सुरक्षाकी पूर्ण व्यवस्था होनी चाहिये। तात्पर्य यह है कि संसारके कई देशोंमें क्रान्तिकारी परिवर्तन होंगे। हलचल व अशांति तथा गृह-[illegible] होंगे। भारतमें भी अव्यवस्था फैलेगी।

भारतके प्रधानमंत्रीको रक्तरोगकी संभावना है। इनकी विदेश यात्रा सफल होगी। वर्षमें भाग्यभावमें गुरु इनको सफलता प्रदानकर भाग्यवृद्धि कर रही है। यशस्वी बनावेगी, जनता सरकारकी नावको तूफानों एवं झंझावातोंसे प्रधानमंत्री निकालकर ले जानेमें सफल होंगे, समय अनुकूल है।

भारतदेशका उत्पादन बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी। पुरानी कांग्रेसका भविष्य उज्ज्वल नहीं है। असली कांग्रेस तो १९६८ में ही समाप्त हो चुकी थी। १९७७ में संगठन कांग्रेस जनता पार्टीमें विलय होकर समाप्त हो गई। रही इंदिराकांग्रेस वह अब १९७८ में इंदिराकांग्रेस व रेड्डी कांग्रेस बन गई। अब असली कांग्रेस कोई नहीं, दोनों कांग्रेसके विलय का प्रयास होगा। किन्तु सफल न होगा। दोनों कांग्रेसका भविष्य स्पष्ट नहीं है। इंदिरा-कांग्रेस पुनः चौगुटेके प्रभावमें आजावेगी तथा संजयसे प्रभावित होगी। श्रीमती इन्दिरा पुनः प्रधानमंत्री नहीं बन सकेंगी। इनको घातक योग भी चल रहा है। वर्षमें अष्टमभावमें शनि हानिकारक है। मानसिक आघातकी संभावना चं० के० युतिसे है। भाग्यमें राहु भाग्यहीन बना रहा है। संतानभाव पर राहु शनिकी दृष्टि संतानके लिये हानिकारक तथा चिंता प्रकट करती है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयीकी जन्मपत्री प्राप्त नहीं है, फिर भी नामराशिसे इनका भविष्य उज्ज्वल है। आगे इन्हें यश प्राप्त होगा। सफल विदेशमंत्री सिद्ध होंगे।

[शेष पृष्ठ ५७ पर]

अनुभवसिद्ध विशेष चांस

[लेखक :—श्री पं० नरोत्तमदेव दीक्षित ज्योतिषी]

श्रावण मास

२२ जुलाई बृहस्पतिके उदयसे किराणा चावल, गेहूं, दालवाना व खांडवाना पर तेजी आवेगी। सोना तेज होकर मंदा हो जायगा। चांदी, घृत, तैल, वेजीटेविल भी तेज हो जायेगा। २४ जुलाई, अलसी गेरु, लालमिर्च, सोना, चांदी व रुई पर तेजीका उछाल बनेगा। ऊन और सूत भी तेज होगा। ७ अगस्तसे ६ तक तिलहन गेहूँ उर्द, मूंग व चावलों पर तेजी आवेगी। तिलहन सभी तेज होंगे। ६ अगस्त में चांदी व सोनेकी मंदी फलेगी। ६ अगस्तकी शामसे १० तकमें तिलहनों पर तेजीका उछाला आवेगा। ६ अगस्तमें शनि अस्त होगा यह विशेष ध्यान देने योग्य है। शनि अस्त होकर सोना चांदीमें अच्छी मंदी लाता है। यहां चांदी व सोने पर ६ अगस्तमें जोरदार मंदी आवेगी, रुई व शेयर भी मंदे होंगे। ११ अगस्त में वक्री बुधास्त तिलहन चांदी तेज करेगा। खांडवाना, किराणा, गोला मेवा भी तेज होंगे।

भाद्रपद मास

ता० २० अगस्त आज चांदीकी मंदी फलगी। रुई व लालमिर्च मंदी होंगी। तिलहनों पर तेजी आवेगी। २५ से २६ अगस्तमें तिलहन घृत व वैजीटेविल पर तेजीका उछाला आवेगा। धनिया, जीरा, मेवा, गोला तेज होंगे, खटाई भी तेज होगी। २८ अगस्तमें चांदी व तिलहनोंकी मंदी फलेगी। ३० अगस्तमें पूर्वाफाल्गुनीके सूर्यसे १५ दिनमें हल्दी, जीरा, खटाई धनियां, गोला, मेवा दालवाला, चावल गेहूं तिलहन, गुड़, खांड, ऊन व सूत पर तेजीके उछाले आते रहेंगे २ सितम्बरमें चांदी व तिलहनोंकी तेजी फलेगी। ६ से ७ सितम्बरमें तिलहनों पर मंदीका प्रभाव हो जावेगा। १० सितम्बरमें चांदीकी मंदी फलेगी। मूंगफली व खांड पर तेजी आवेगी। १२ सितम्बरसे १६ तकमें अलसी मूंगफली, सरसों आदि तिलहनों पर तेजीका प्रभाव रहेगा १५ व १६ सितम्बरमें चांदीकी मंदी फलेगी। १६ सितम्बर में चंद्रग्रहण है चांदी सोना पर मंदी आवेगी। अनाज व तिलहनों पर तेजी आवेगी किराणा, खांडवाना भी तेज होगा।

आश्विन मास

दि० १८ से २१ सितम्वरमें तिलहनों पर मंदीका प्रभाव आवेगा। २१ सितम्बरमें चांदीकी मंदी फलेगी। २२ सितम्बरसे २४ तकमें चांदी पर मंदी जोरदारका ध्यान है। २६ व २७ सितम्बरमें सरसों पर मंदी आ जायगी। मूंगफली भी मंदी होगी, एरंडा व अलसी पर तेजी आवेगी। २ अक्टूबरमें चांदी की मंदी फलेगी। ५ से ७ अक्टूबरमें घृत, तिल, तेल, वैजीटेविल व तिलहनोंमें तेजी आवेगी। १२ अक्टूबरमें तिलहन, चांदी मंदे हो जायंगे। १४ अक्टूवरमें रुईकी मंदी फलेगी। १६ अक्टूबरम तिलहनोंकी मंदी फलेगी। १७ अक्टूबरमें भी सोना व चांदीकी मंदी फलेगी तिलहन थोड़े मंदे हो जायंगे।

ज्योतिषकी दृष्टिमें–

प्रधानमंत्री श्रीदेसाई, कांग्रेस और महाराष्ट्र सरकार

[लेखक :—श्री रमेशचन्द्र शर्मा एम.ए.बी.एड्]

श्री मोरारजी भाईका जन्म २९-२-१८९६ में हुआ। इस समय ये ८२वें वर्षमें चल रहे हैं। इन्हें वर्तमानमें बुधकी महादशा चल रही है। श्री देसाईका राजयोग इनकी आयुके ८६-८७ वर्ष तक परिलक्षित है । राजनेतृत्व कर्त्ताके रूपमें केन्द्रमें प्रधानमंत्री पद पर सन् ८० तक कार्य करते रहेंगे । सन् ७८ के बाद का समय स्वास्थ्यकी दृष्टिसे चिंताकारी है। सन् ७८ का वर्ष इनके लिए मानसिक चिंता और उलझावका रहेगा। निर्णय अवरुद्ध प्रायः रहेंगे। परन्तु शुक्र ग्रहकी प्रबलताके कारण अंततः श्री मोरारजी भाई सफलता प्राप्त करेंगे।

८२ से ८६ तक उम्रका आगामी ४ वर्ष का समय कुल मिलाकर श्री देसाईके लिए यशमूलक है । उसी अवधिमें वे विश्वयात्रा कर भारतका नाम रोशन करेंगे । भारतकी विदेश नीति सर्वत्र प्रशंसनीय होगी। इस वर्ष में मतभेद शासकीय दलमें उभरेंगे। सन् ७९ में मंत्रीमण्डल परिवर्तित होगा । सन् ८० का परिवर्तन भारतीय राजनीतिमें युगान्तर लायगा । प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई भारतके योग्यतम प्रधानमंत्री साबित होंगे। जनतापार्टीका उद्‌भव गुरु और मंगलकी ऐसी स्थितिमें हुआ है, जिससे वर्तमान जनता सरकार को शक्ति प्राप्त होती जायगी, परन्तु वर्तमान सरकारमें अस्थिरता सन् ८० में शुक्रकी अन्तर-दशाके उतारके साथ उत्पन्न होगी, तथा इस वर्षमें यानी २१ जून ७८ के बाद जनतापार्टी में शुद्धीकरण होगा। २१ जूनसे २३ जुलाई ७८ के मध्य मन्त्रिमण्डलमें परिवर्तन और १९७९ के उत्तरार्ध एवं ८० के प्रथमार्धमें प्रधानमंत्रीके प्रश्नको लेकर परिवर्तन। १९८० का परिवर्तन भारतीय राजनीतिमें युगान्तर लाएगा । इस काल अवधि में दो मतभेद शासकीय दलमें उभरेंगे तथा प्रतिपक्षी कांग्रेस दलकी ओर जनताका रुझान बढ़ेगा। कांग्रेस दलकी कुण्डलीके ग्रहोंको अवलोकन करने पर २५ जून ७८ के बाद कांग्रेस तथा कांग्रेस (आई) का विलयका योग बन सकता है। तथा ३ माह तक संघर्ष रह कर अक्टूबर ७८ तक कांग्रेस नये दलके रूपमें

[पृष्ठ ५५ का शेष]

आगामी वर्षोंमें इनके प्रधानमंत्री बननेकी संभावना है। कन्याका शनि बाजपेयीजी तथा चौधरी चरणसिंहके लिये श्रेष्ठ फलदायक प्रमाणित होगा।

जनतापार्टीका शासन सन १९८२ तक चलेगा। देशका भविष्य उज्ज्वल है। कदाचित् वर्तमान् राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री अपना कार्य-काल पूरा न कर सकें । जनतापार्टी दिनपर दिन बल पकड़ेगी। टूटनेकी संभावना नहीं है।

यह भविष्यफल यथामति लिखा, आगे प्रभु इच्छा बलीयसि।

उभरेगी। इस पार्टीको खड़ा करनेमें बी. डी. ए. एस. एम. के नाम प्रथमाक्षर धारी लोगों का पूर्ण योग रहेगा। मंगल-शनिकी युतिमें (यानी २ जूनसे २३ जुलाईमें) एक महान् व्यक्तिके दिवंगत होनेकी संभावना है। एक कन्याके मंगलमें योग बनता है।

महाराष्ट्र सरकारका भविष्य

१. अक्तूबर ७८ तक महाराष्ट्र सरकार बराबर संघर्षरत कार्य करती रहेगी, तथा जून ७८ के अन्तिम सप्ताहमें सरकारकी कार्य-प्रणालीमें बड़ा भारी योजनाबद्ध सुधार होगा।
२. २५ जून ७८ के बाद कांग्रेस तथा कांग्रेस (आई) में विलयका योग बनेगा। तथा जुलाई तक राष्ट्रीय लेवल तक बड़ा भारी संगठन या नया दल बनाकर अक्तूबर ७८ तक कांग्रेस नए दलके रूपमें विराट स्तर पर उठेगी।
३. कांग्रेस दलकी ओर जनता जनार्दनका रुझान बढ़ेगा, तथा इसमें पार्टीको खड़ा करनेमें ग्रह गोचरकी दृष्टिसे बी. डी. एस.एम. तथा के. अग्राक्षर नामधारी लोगोंका पूर्णतया हाथ रहेगा। भू०पू० प्रधान मंत्री श्रीमती गांधीका सक्रिय योग रहकर लोकनायिकाके रूपमें चमकेगी।
४. महाराष्ट्रके मुख्य मंत्री बसंतराव पाटिल अक्तूबर ७८ तक आन्तरिक द्वन्द्वोंसे मुक्त होकर कुछ महत्वपूर्ण मंत्रीमण्डलीय हेर-फेरके साथ शनैः शनैः लोक-प्रियताकी ओर अग्रसर होते रहेंगे।
५. मुख्य मंत्री श्री बसंतराव पाटिल चाहे जैसी भी राजनैतिक उथल-पुथल हो वह तो १९७९ तक जनता शासनको गतिवान् करते रहेंगे। १९८२ के बाद ही इनका भविष्य उज्ज्वल है।
६. इतना निश्चित है कि कांग्रेस दलकी मजबूतीका राष्ट्रीय स्तरका आन्दोलन आन्ध्र-प्रदेश, महाराष्ट्रसे २५ जून ७८ के बाद आरम्भ होगा, ३ मास संघर्षरत रहकर अपने दलको राष्ट्रीय स्तर तक मजबूत बना लेंगे।
७. महाराष्ट्रके ५ जिलोंमें बड़े उद्योगोंकी स्थापना होगी तथा उसमें विदेशी सहायता मिलनेकी पूर्ण सम्भावना है।
८. कांग्रेस सरकार तथा भारतके लिये निम्नांकित तारीखोंमें आश्चर्यजनक मोड़ लेते हुए घटित होंगी। २५ जून, ७ जुलाई, २३ जुलाई, ७ अगस्त, १५ अगस्त, तथा ७ सितम्बर, १२ अक्तूबर, १४ नवम्बर और २० दिसम्बर १९७८।

डी—६ कालाजी गौराजी कालोनी
उदयपुर (राजस्थान)

त्रैमासिक राशि भविष्य

अगस्त-सितम्बर-अक्तूबर १९७८

[लेखक :—श्री ओंकारनाथ त्रिवेदी, बाराबंकी (उ०प्र०)],

मेष

अगस्त—यह मास मिश्रित फल वाला है। मूलरूपसे आपकी प्रवृत्ति व्यसनों और विलासों की ओर रहेगी। अधिक श्रम करना पड़ेगा पर उसमें मन न लगेगा। गुप्त चिन्ताएं भ्रमित करेंगी। छठे स्थानमें बैठकर मंगल-राहु शत्रुओं-बाधाओं पर विजय देते रहेंगे। सगे-सम्बन्धियों से वैमनस्य अवश्य होगा। सफलता पानेके लिये ८-९-१७-२६ ता० अनुकूल हैं। धन लाभके लिये १०-१८-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि १-११-१९-२८ भी अच्छी रहेंगी। २०-२१-२२ में विशेष व्यय, ५-१४-२३ में भी सावधान रहना चाहिये। व्यापारको बढ़ानेके लिये नकद या मालके रूपमें ऋण लेंगे। टैक्स विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित है। समाज में प्रतिष्ठा बनी रहेगी किन्तु जनप्रियताकी कमी खटकेगी। घर-परिवारकी समस्याएं। स्वास्थ्य सन्तोषजनक, किन्तु थकानका अनुभव। दौड़धूप। १२ ता० नेष्ट।

सितम्बर—यदि आप चाहें तो इस मास को सफलता, विजय और धन लाभ देने वाला बना सकते हैं। एकाध समस्याका समाधान तो आप-ही-आप हो जायगा। किन्तु ऐसी सम्भावनाएं विद्यमान हैं कि आपका पर्याप्त समय व्यसनों-विलासोंमें या उनकी कामना करनेमें बीत जायगा। हो सकता है कि आपकी इन प्रवृत्तियोंके कारण घर-बाहर कलह-विवाद के अवसर भी आ जायं। सगे-सम्बन्धियोंसे वैमनस्य। समाजमें प्रतिष्ठा बनी रहेगी। व्यापारको सुधारने या कोई नया कारोबार आरम्भ करनेके लिये नकद या मालके रूपमें ऋण लेंगे। प्रयासोंमें सफलता पानेके लिये ५-१३-२२ ता० अनुकूल है। धन लाभके लिये ६-१४-२३ ता० श्रेष्ठ हैं। विशेष व्ययके योग चलते रहेंगे। दौड़धूप अवश्य। ९-१७-२७ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी इस मासको आपके लिये अच्छा नहीं कह सकते हैं। तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो प्रथमार्द्ध कुछ अधिक अच्छा है। अपने आवश्यक और महत्वपूर्ण काम इसी भागमें बना लेना चाहिये। कोई गम्भीर संकट न होने पर भी छुटफुट समस्याएं और असुविधाएं साथ लगी रहेंगी। मन अशान्त रहेगा। बहुत सम्भव है कि शान्ति पानेके लिए व्यसनों-विलासोंका सहारा लेनेको सोचें। घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आवेंगे, जिनमें आपको दबना पड़ सकता है। नारीवर्गके झगड़ोंसे सावधान रहना चाहिये। धन लाभ साधारण होगा, इस सम्बन्धमें ३-१२-२१-३० ता० अच्छी हैं। लाभसे अधिक व्यय होगा। व्यापार मन्द गतिसे चलेगा। दौड़धूप करनी पड़ेगी। ६-१४-२४ ता० नेष्ट।

वृषभ

अगस्त—यह मास कुछ परिवर्तन लेकर आया है जो आपकी व्यक्तिगत ग्रहस्थितिके अच्छे भी हो सकते हैं और बुरे भी। सम्भव है कि आपको कोई अप्रिय निर्णय लेना पड़े। बौद्धिक उलझनें बार-बार आवेंगी और उनके कारण व्यसनोंमें वृद्धि भी होगी। श्रम और उद्योग करनेमें मन न लगेगा। दिनचर्या एक नयामोड़ लेगी। धन लाभके लिये ४-६-१३-१५-२४ ता० श्रेष्ठ हैं। सम्भव है कि ३-१२-२१-३० भी अच्छी रहें। कुछ नये व्यय उठ खड़े होंगे। नौकरीमें स्थानान्तरण। चल रहे व्यापार में अवरोध। किसी नये कारोबारमें मन लगावेंगे। समाजमें प्रतिष्ठा कुछ घटेगी। भ्रमण मनोरंजनके अवसर। किसी उत्सवमें सम्मिलन। एक नया आकर्षण जीवनमें आ सकता है। आलस्य और थकानका अनुभव। यात्रा अवश्य। १० या ११ ता० नेष्ट।

सितम्बर—गत मास आपके जीवनमें जो समस्याएं आ गयी थीं उनका समाधान धीरे-धीरे होने लगेगा। किन्तु व्यक्तिगत रूपसे अपनेको असुविधापूर्ण स्थितिमें ही अनुभव करेंगे। असावधान रहने पर अपने ही लिये अहितकर कोई काम कर सकते हैं। अस्वाभाविक भोगों की कामनाएं आपको भ्रमित करेंगी। बौद्धिक उलझनोंके कारण प्रियजनोंसे कलह-विवाद होगा। समाजमें मान और जनप्रियताके अवसर कम ही मिलेंगे। व्यापारको सुधारनेके लिये ऋण लेंगे। यह निश्चित है कि सामान्य से अधिक श्रम करना पड़ेगा। यात्रा और दौड़धूप अवश्य। धन लाभके लिये ३-११ या १२-२०-३० अनुकूल तो हैं पर विश्वसनीय नहीं है। प्रष्टप्रद व्यय और हानि। ६ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—यह मास आपके लिये मिश्रित फल वाला है। अपनेको एक घिराव जैसी स्थितिमें अनुभव करेंगे। व्यसनों-विलासोंमें आपका मन भटकता रहेगा। संघर्ष और विवाद आवेंगे। उन पर विजय भी मिलेगी। कभी कठिन व्यस्ततामें और कभी अकर्मण्यता में दिन बीतेंगे। प्रयासोंमें सामान्य सफलता मिलती रहेगी। व्यापारको नया स्वरूप देनेके लिये नकद या मालके रूपमें ऋण लेंगे। धन लाभके मार्गमें कई प्रकारके अवरोध हैं, पर आवश्यकताओंकी पूर्ति हो ही जायगी। विशेष व्ययके योग चलते रहेंगे। धन लाभके लिये ९-१७-२७ ता० कुछ अच्छी हैं। समाजमें मान और जनप्रियताकी कमी खटकेगी। दिनचर्या अस्तव्यस्त रहेगी। यात्राएं और दौड़धूप अवश्य। उत्तरार्द्धमें उदर विकार। ३-४ ता० नेष्ट।

मिथुन

अगस्त—यह मास पर्याप्त अच्छा है। चार या पांच ता० से जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा, शुभ फलोंमें वृद्धि होती जायगी उत्साह और आत्मविश्वासमें वृद्धि। महत्वाकांक्षाके साथ उद्योग करेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। कोई विशिष्ट सफलता या विजय भी मिल सकती है। मित्र और परिजन सहयोग देंगे। स्थायी साधन और कुछेक अन्य रास्तोंसे धन लाभ, इस सम्बन्धमें ४-५-६-१३-

१४-१५-२२-२३-२४-३१ ता० श्रेष्ठ हैं। एक अच्छी रकम हाथ आवेगी। नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा। प्रयत्न करने पर बचत भी हो सकती है। नयी योजनाके साथ व्यापार बढ़ेगा। अपने घर या किसी कुटुम्बीके यहां मंगल कार्य। समाजमें मान, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, छोटी यात्राएं। ७ ता० नेष्ट।

सितम्बर—प्रयासोंमें सफलता, प्रियजनों से भेंट, उत्सवादिमें सम्मिलन, पर्याप्त धन लाभ, हर्षदायक समाचार प्राप्त होंगे। अपने घर या कुटुम्बमें होने वाले किसी मंगल कार्य में भाग लेंगे। उत्साह और आत्मविश्वासमें वृद्धि, कामनाएं पूर्ण होंगी। मनोरंजनोंमें आपकी रुचि बढ़ेगी। पत्नी पुत्रादि स्वजनोंसे कलह हो सकता है, यात्रा होगी। परदेशमें हैं तो घर आ जायंगे। व्यापार बढ़ेगा। धन लाभ के लिये १-२-३-१०-११-१२-१८-१९-२०-२८-२९-३० ता० श्रेष्ठ हैं। किसी शुभ कार्यमें व्यय। पत्नीसे सहयोग सुखोंकी प्राप्ति। उदर विकारसे असुविधा। ४ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—कुछेक नेष्ट फलोंसे युक्त होने पर भी यह मास आपके लिये पर्याप्त अच्छा है। बौद्धिक उलझनें रहेंगी और संघर्ष भी आवेंगे। इन्हें नियन्त्रणमें रखते हुए यदि आप उद्योग कर सकें तो अच्छी उपलब्धियां हो सकती है। प्रयासोंमें सफलता और शत्रुओं-बाधाओं पर विजय देने वाले योग अल्पाधिक रूपमें पूरे मास चलते रहेंगे। व्यापारको बढ़ाने के लिये ऋण या अन्य रूपोंमें दूसरोंसे सहायता मिल जायगी। धन लाभके लिये ६ से ९, १४ से १७ और २४ से २७ ता० श्रेष्ठ हैं। समाज में मान, भ्रमण-मनोरंजनके अवसर, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार और पत्र, वैवाहिक सुख, सन्तोषजनक स्वास्थ्य आदि सुफल मिलेंगे। १-२८ ता० नेष्ट।

कर्क

अगस्त—यह मास संघर्षपूर्ण और उतार-चढ़ाव आनेकी सूचना देता है। यह अवश्य है कि समस्योंके समय आपमें साहस और स्वबाहु बल पर विश्वास जाग उठेंगे। आशा है कि प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। कुछ व्यक्ति सह-योग देंगे। आपको दो-तीन मास निरन्तर सावधान रहना चाहिये। सफलता पानेके लिये ६-१५-२४ ता० अनुकूल हैं। धन लाभके लिये ८-९-१७-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि ७ १६-२५ भी अच्छी रहें। एक छोटा आक-स्मिक लाभ। विशेष व्ययसे बच न सकेंगे। १-२७-२८-२९ ता० चिन्तनीय हैं। व्यापारिक योजनाओंमें प्रगति। समाजमें जनप्रियता, उत्सवों-गोष्ठियोंमें सम्मिलन। एक नया प्रेमा कर्षण जीवनमें आ सकता है। छुटपुट यात्राएं। ५ ता० नेष्ट।

सितम्बर—यह मास आपके लिये अच्छा है। मासान्त होते-होते जीवनमें कई मनोवांछित सुधार होंगे। उत्साहपूर्वक उद्योग करेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी, इस दृष्टिसे ३-११ या १२-२०-३० ता० अनुकूल है। धन लाभके लिये ५-१३-२२ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ३-१०-११ या १२-१८-२०-२१-३० भी अच्छी रहेंगी। एक छोटी रकम या सम्पत्ति हाथ आ सकती है। उत्तरार्द्धमें व्ययमें विशेष वृद्धि

होगी। व्यापारमें सुधार करेंगे। भ्रमण-मनोरंजनके अवसर, प्रियजनोंका समागम, उत्सवादिमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार, पारिवारिक सुख, छोटी यात्राएं आदि शुभ फल प्राप्त होंगे। १ और २९ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—यह मास आपके लिये मिश्रित फल वाला है। तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो प्रथमार्द्ध अधिक अच्छा है। उत्तरार्द्धमें कुछ बौद्धिक उलझनें जन्म लेंगी और सम्भव है कि स्वजनोंसे विवादके अवसर भी आ जायं। एक दो व्यक्ति अकारण विरोध करते रहेंगे। दो सगे-सम्बन्धी भरपूर सहयोग भी देंगे। धन लाभके लिये २-९-११-१७-२०-२७-२९ ता० श्रेष्ठ हैं। सम्भव है कि १-१०-१५-२५ भी अच्छी रहें। गार्हस्थिक वैभव-सम्पदाकी प्राप्ति। किसी मंगल कार्यमें व्यय। टेक्सविभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित है। समाजमें मान-भ्रमण-मनोरंजनके अवसर। घरमें कोई उत्सव हो सकता है। सामान्य गृहस्थ सुखोंकी प्राप्ति। २६ ता० नेष्ट।

सिंह

अगस्त—यह मास कोई परिवर्तन लेकर आया है। नये निर्णय करनेमें बहुत सावधानी की आवश्यकता है। कोई जटिल समस्या उत्पन्न होगी। १६ ता० को आपकी राशि लग्नके स्वामी सूर्य स्वगृहमें प्रवेश करके आपको नया आत्मविश्वास देंगे। आशंकाएं विचलित करेंगी। अनिद्रा और दुःस्वप्न। आजीविकाके काममें अवांछनीय परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। जैसे नौकरीमें स्थानान्तरण और व्यापारमें उतर-चढ़ाव। पुलिस और टैक्स-विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित हैं। किसी प्रकारका बड़ा व्यय सामने आवेगा और आर्थिक दबाव बढ़ेगा। सामाजिक प्रतिष्ठाको जैसे-तैसे संभाले रहेंगे। दिनचर्या अस्तव्यस्त, किसी मंगल कार्यकी योजना बना सकते हैं। यात्रा होगी। २-३-२९-३० ता० नेष्ट।

सितम्बर—जीवनमें जो उतार-चढ़ाव या अप्रिय परिवर्तन गत मास आ गये थे वे निर्मूल तो न होंगे पर यह निश्चित है कि उनका दुष्प्रभाव धीरे-धीरे घटता जायगा। आप अनुभव करेंगे कि एक नये उत्साहमें आपने प्रवेश किया है और आप कठिनाइयोंकी परवाह न करके उद्योग कर सकते हैं। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। सहयोग देने वाले भी मिल जायंगे। जीवनका नव-निर्माण करनेके लिये ग्रह-स्थिति अनुकूल है। धीरे-धीरे व्यापारकी स्थिति दृढ़ बनेगी। समाजमें आपका प्रभाव बढ़ने लगेगा और जनप्रियता मिलेगी। भ्रमण-मनोरंजनके अवसरों और सुसमाचारोंकी प्राप्ति। विशेष व्ययके योगोंके बीच पर्याप्त धन लाभ भी होगा। यात्राएँ अवश्य। २६ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—यह मास आपके लिये अच्छा है। एक-दो स्थायी समस्याएं पूर्ववत् बनी रहेंगी और सम्भव है कि एक-दो बार जटिल रूप भी धारण कर लें। फिर भी अन्य रूपोंमें क्रमिक सुधार होते जायंगे। उत्साह और स्वबाहु बल पर विश्वामें वृद्धि होगी। आशंकाओंका त्याग करके यदि आप समुचित उद्योग कर सकें तो सफलता भी मिलेगी और

प्रगति भी होगी। निराशा घटेगी। नयी आशाओंका उदय होगा। सहयोग देने वाले कुछ स्वजन मिल जायंगे। समाजमें प्रभाव बढ़ेगा। भ्रमण-मनोरंजनके अवसर, उत्सवादि में सम्मिलन, सुसमाचार। व्यापारमें लाभ और वांछित सुधार। विशेष व्ययके योग चलते रहने पर भी पर्याप्त धन लाभ होगा। घर-परिवारके सुखोंमें थोड़ी वृद्धि। छोटी यात्राएं। २३-२४ ता० नेष्ट।

कन्या

अगस्त—यह मास अच्छा है। ५ ता० को वृहस्पति लाभ स्थानमें उच्च राशिमें प्रवेश करके धन लाभ, विजय, कामनाओंको पूर्ति आदि शुभ फल देंगे। वे यहां एक वर्ष रहेंगे और उक्त फलोंके साथ कोई कठिन अव्यवस्था भी उत्पन्न करगे। एक पुराना मित्र भरपूर सुख-सहयोग देगा। बार-बार क्रोध और खीझ का अनुभव। दिनचर्यामें एक नया मोड़ आ जायगा। गत एक-दो मासोंमें कोई नया सरस सम्बन्ध आरम्भ नहीं हुआ है तो इस मास होगा। गुप्त शत्रु या विरोधी सक्रिय रहेंगे। नौकरीमें परिवर्तनकी सम्भावनाएं हैं। नयी योजमाओंके साथ व्यापार वढ़ेगा। धन लाभ के लिये ४-१३-२२-३१ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि २-११ या १२-२०-२६ भी अच्छी रहेंगी। सामाजिक वातावरण उल्लासपूर्ण रहेगा। यात्रा और दौड़धूप अवश्य। २७ ता० नेष्ट।

सितम्बर—यह मास आपके लिये मिश्रित फल वाला है। लाभके साथ व्यय और हानिके योग भी हैं। निकट सम्पर्क वालोंसे कलह-विवाद भी होगा और कई श्रेष्ठ मित्रोंका उत्तम समागम भी प्राप्त होगा। धन लाभके लिये ३-८-१०-११ या १२-१६-१८-२०-२५-२६-२८-३० ता० श्रेष्ठ हैं। आकस्मिक लाभ की भी आशा है। गार्हस्थिक वैभव-सम्पदामें वृद्धि। कष्टप्रद व्यय और हानिसे बच न सकेंगे। व्यापारमें कुछ सुधार करते हुए उसमें पूंजी लगावेंगे। प्रेम सम्बन्धमें सफलता। उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन। हर्षदायक समाचार। यात्रा अवश्य होगी। २३ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—यह मास आपके लिये पर्याप्त अच्छा है और अनेक शुभ फलोंके साथ प्रगति की सूचना देता है। आनन्द-विनोदमें दिन बीतेंगे। प्रियजनोंका उत्तम समागम, उत्सवोंमें सम्मिलन, हर्षदायक ममाचार, भ्रमण-मनोरंजन के अवसर। स्थायी साधन तथा कई अन्य रास्तोंसे धन लाभ, इस सम्बन्धमें ५-७-६-१३ या १४-१५-१७-२३-२५-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, आकस्मिक लाभ भी होंगे, एक-दो रकमें हाथ आवेंगी, नवीन-वस्त्र वैभव-सम्पत्ति। किसी मित्र या कुटुम्बीके यहां होने वाले मंगलकार्यमें भाग लेंगे। उत्तरार्द्धमें एक नया उत्साह आप में जाग उठेगा और श्रम पूर्वक उद्योग करेंगे। व्यापार बढ़ेगा। वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति। २१ ता० नेष्ट।

तुला

अगस्त—यदि आपने धैर्य और विवेकसे काम लिया तो मासान्त होते-होंते परिस्थितियां आपके अनुकूल हो जायंगी। आपकी समस्याएं

मूलरूपसे व्यक्तिगत होंगी और आधारहीन समस्याएं भी चिन्तित बनावेंगी । पर यह निश्चित है कि आप दृढ़तापूर्वक श्रम करेंगे और मासान्तमें आत्मविश्वास प्राप्त हो जायगा । प्रयासोंमें सफलता मिलेगी, इस दृष्टि से ३-४-१२-१३-२१-२२-३०-३१ ता० अनुकूल हैं । दो-तीन प्रतिष्ठित व्यक्ति सहयोग देंगे । व्यापार बढ़ेगा, उसमें पूंजी लगावेंगे । धन लाभके लिये ६-१५-२४ ता० श्रेष्ठ हैं । समाजमें प्रतिष्डा और मर्यादा अन्तमें बढ़ेगी । यात्रा और दौड़धूप करनी ही पड़ेगी । २३ ता० नेष्ट ।

सितम्बर—यह मास आपके लिये मध्यम फल वाला है । तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो प्रथमार्द्धको अधिक अच्छा कह सकते हैं । अपने महत्वपूर्ण काम इसी भागमें बना लेना चाहिये । जीवनमें कुछ उतार-चढ़ाव आनेकी सम्भावनाएं हैं, किन्तु प्रयत्न करने पर उनसे सहज ही बचा जा सकता है । आशंकाएं आपको भ्रमित करेंगी । कार्यकारी जीवनमें असुविधाओं का अनुभव होगा । फिर भी प्रयासोंमें सफलता मिलती रहेगी । व्यापार जैसे-तैसे चलता रहेगा, धन लाभके लिये ३-११ या १२-२०-३० ता० श्रेष्ठ हैं । एक छोटा आकस्मिक लाभ । विशेष व्ययसे बच न सकेंगे । यात्रा और दौड़धूप अवश्य । प्रतिष्ठा बनी रहेगी । २१ ता० नेष्ट ।

अक्टूबर—यह मास आपके लिये सामान्य अच्छा है । आपकी व्यक्तिगत स्थिति पर विशेष प्रभाव न पड़ेगा, किन्तु उत्तरार्द्धमें एक द्विविधापूर्ण स्थितिमें पहूँच जायेंगे । कई प्रकारकी छुटपुट समस्याएं आती रहेंगी । क्रोध और खीझका अनुभव । निकट सम्पर्क वालोंसे विवाद उत्पन्न हो सकता है । प्रयासोंमें सफलता तो मिलती रहेगी पर कार्यकारी जीवनमें अवरोध भी रहेंगे । मासान्त तक परिस्थितियोंमें कुछ-न-कुछ सुधार होगा । व्यापार मन्द गतिसे चलेगा । धन लाभके लिये ९-१७-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि ६-१४-२४ भी अच्छी रहें । समाजमें प्रतिष्ठा बनी रहेगी । यात्रा और दौड़धूप । १८ या १९ ता० ता० नेष्ट ।

वृश्चिक

अगस्त—जीवनमें सफलता प्रगति और धन लाभके योग यदि गत माससे आरम्भ नहीं हुए थे तो इस मास प्रत्यक्ष दिखलाई देने लगेंगे । कामनाएं पूर्ण होंगी । सहयोगी मिल जायंगे, जीवन एक नया मंगलमय मोड़ लेगा । धर्म पर आस्था बढ़ेगी । व्यापार बढ़ेगा । मासान्त होते-होते उसमें पूंजी लगाने का विचार करेंगे । उत्साह और आत्मविश्वासमें वृद्धि । समाजमें जनप्रियता । उत्सवोंमें सम्मिलन । हर्षदायक समाचार और पत्र । किसी महात्मा या महापुरुषसे भेंट । तीर्थयात्रा के सुयोग । धन लाभके लिये २-६-८-९-१०-११ या १२-१५-१६-१७-१८-२०-२४ से २७-२९ ता० श्रेष्ठ । २३ ता० नेष्ट ।

सितम्बर—यह मास आपके लिये पर्याप्त अच्छा है । पहली ता० से ही जैसे जैसे समय आगे बढ़ेगा शुभ फलोंमें वृद्धि होती जायगी । बड़े उत्साहसे श्रम और उद्योग करेंगे । अनेक

व्यक्ति सहयोग देंगे । कामनाएं पूर्ण होंगी । अपनी योजनाओंको आपने अभी तक आरम्भ नहीं किया है तो शीघ्रातिशीघ्र आरम्भ कर देना चाहिये । भाग्य साथ देगा । व्यापार बढ़ेगा, नये रास्तोंसे विपुल धन लाभ, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा । धन लाभके लिये ४-५-१२-१३-२१-२२ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ६-८-१४-१६-२३-२५ या २६ भी अच्छी रहेंगी । विशेष व्ययसे बच न सकेंगे । कारोबार में पूंजी लगावेंगे । समाजमें मान-प्रतिष्ठा । यात्रा होगी । १९ ता० नेष्ट ।

अक्टूबर—यह मास कुछ असुविधाजनक प्रतीत होगा । दूसरे और तीसरे सप्ताहमें कुछ नयी समस्याएं जन्म ले सकती हैं, किन्तु आप की व्यक्तिगत स्थिति बिगड़ने न पावेगी और अन्तिम सप्ताहके भीतर ही वह सुदृढ़ बन जायगी । मित्रोंसे सहयोगकी आशा नहीं है, पर एक सज्जन व्यक्ति भरपूर सहयोग देगा । कार्यकारी जीवनमें अवरोध आवेंगे । प्रयासोंमें बस थोड़ी ही सफलता मिलेगी । व्यापारमें कोई परिवर्तन करने या किसी नये कारोबार में पूंजी लगानेका निश्चय कर लेंगे । धन लाभ के लिये प्रथमार्द्ध अच्छा है । १-२ ता० विशेष अच्छी हैं, १०-११-२०-२९ भी अच्छी रहेंगी । उत्तरार्द्धमें विशेष व्यय और हानि । अप्रिय यात्रा और दौड़धूप । गुप्त चिन्ताएं । १६ ता० नेष्ट ।

धनुः

अगस्त—यह मास आपके लिये उज्ज्वल भविष्यकी सूचना देता है । सम्भव है कि आपके विचार उदासीनता भरे हों । अपनी परिस्थितियोंमें उलट-फेर करनेके लिये आप व्याकुल हो जायं और जोश-क्रोध या जल्दबाजी में कोई ऐसा काम कर बैठें जो आपके लिये अहितकर हो । यदि आपने धैर्यसे काम लिया तो यह निश्चित है कि अगला मास आपको प्रफुल्लित कर देगा । और आपकी अधिकांश मनोकामनाएं पूर्ण हो जायंगी । आपसी विवाद से सावधान रहना चाहिये । समाजमें प्रतिष्ठा बढ़ती जायगी । काम चलाने भरको धन भी मिल जायगा । व्यापार बढ़ेगा । यात्रा और दौड़ धूप । २१ ता० नेष्ट ।

सितम्बर—यह मास आपके लिये पर्याप्त अच्छा है । जो परिवर्तन या उतार-चढ़ाव आपको गत मास अप्रिय असुविधाजनक प्रतीत हो रहे थे उनकी रूपरेखा बदल कर लाभकारी हो जायगी । उन्नति-प्रगतिके नये रास्ते खुल जायंगे । नये उत्साह और स्वबाहु बल पर विश्वाससे भरकर आप कार्यकारी जीवनमें व्यस्त हो जायंगे । प्रयासोंमें सफलता मिलेगी । नयी योजनाके साथ व्यापार बढ़ेगा । स्थायी साधन और कई अन्य रास्तोंसे धन लाभ, इस सम्बन्धमें ३-५ से ८-१२ से १६-२० से २६ २८ ता० श्रेष्ठ है । समाजमें प्रतिष्ठा, हर्षदायक समाचार । ता० ९-१७-२७ नेष्ट ।

अक्टूबर—यह मास पर्याप्त अच्छा है और परिस्थितियोंमें सुधार तथा प्रगतिकी सूचना देता है । पहली ता० से जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा शुभ फलोंमें वृद्धि होती जायगी । श्रम और उद्योग करनेमें मन लगेगा । प्रयासोंमें सफलता मिलेगी । व्यापार

बढ़ेगा, मनचाहा लाभ भी देगा। उत्तरार्द्धमें उसमें पूंजी लगानेका विचार करेंगे। धन लाभ के लिये १ से ५ ता० तकका समय श्रेष्ठ है। १० से १४ ता० तकका समय मध्यम है। समाजमें प्रभाव बढ़ेगा। दो प्रिय व्यक्तियोंसे भेंट, फिर दो व्यक्तियोंसे विद्रोह। १४ ता० नेष्ट।

मकर

अगस्त—व्यक्तिगत रूपसे आप अपनेको असुविधाजनक स्थितिमें भले ही समझते रहें पर यह मास आपके लिये अच्छा है और सूचना देता है कि आगे और भी अच्छा समय आने वाला है। छुटपुट समस्याएं आती रहेंगी। कुछ संघर्ष भी रहेंगे। पर वे उपेक्षणीय हैं। कुछ नयी सरस कल्पनाओंमें आपका मन भ्रमण करेगा। एक श्रेष्ठ व्यक्तिसे आपकी भेंट होगी, और स्थायी सम्बन्ध बनेंगे। अधिक श्रम और दौड़धूपके कारण थकानका अनुभव। विचित्र स्वप्न दिखायी देंगे। समाजमें मान वृद्धि। व्यापारमें नयी योजनाएं आरम्भ करेंगे। धन लाभके लिये २-३-४-११-१२-१३-२०-२१-२६-३० ता० श्रेष्ठ हैं। उत्सव या मंगल कार्य में सम्मिलन। १८ ता० नेष्ट।

सितम्बर—यह मास आपके लिये मिश्रित फल वाला है। उत्साहपूर्वक उद्योग करेंगे। किन्तु सफलताके मार्गमें बाधाएं आवेंगी या अकारण विलम्ब होगा। यह ध्यान रखें कि जोश-क्रोध या जल्दबाजीमें कोई ऐसा काम न कर बैठे कि बादमें पछताना पड़े। निकट सम्पर्क वालोंसे वैमनस्य होगा। कोई झूठा आरोप लग सकता है। व्यापारमें प्रगति होगी और लाभ भी रहेगा। धन लाभके लिये ८-९-१६-१७-२५-२६-२७-२८ ता० श्रेष्ठ हैं। किसी शुभ कार्यमें विशेष व्यय। समाजमें जनप्रियता, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार, विलासादि सुख, यात्रा और दौड़धूप करनी ही पड़ेगी। १४ या १५ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—सम्भव है कि आरम्भमें यह मास कुछ असुविधाजनक प्रतीत हो, पर तृतीय सप्ताहसे कार्यकारी जीवनमें उतार-चढ़ाव आवेंगे या असुविधाएं उत्पन्न होंगी जिनपर निश्चय ही नियन्त्रण मिल जायगा। नया उत्साह और उल्लाँस आपमें जाग उठेगा। कर्म शक्ति बढ़ जायगी। श्रम और उद्योगमें मन लगावेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। कामनाएं पूर्ण होंगी। व्यापार बढ़ेगा। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ जायगी। धन लाभके नये-नये साधन बनेंगे। इनके साथ ही अनेक प्रकारके विलासादि सुख प्राप्त होते रहेंगे। व्यस्ततामें दिन बीतेंगे। कुछ गुप्त चिन्ताएं भी रहेंगी। १२ ता० नेष्ट।

कुम्भ

अगस्त—इस मासमें आपके लिये जीवनकी धारामें अप्रिय मोड़ आ जायंगे जो असुविधाजनक प्रतीत होंगे। उनसे छुटकारा पानेका निकट भविष्यमें कोई उपाय नहीं है। यदि आप अपने दृष्टिकोणको बदलते हुए अपनेको अधिक श्रमका अभ्यस्त बना सकें तो यह परिवर्तन निश्चित रूपसे सम्पन्नता लाने वाले प्रमाणित होंगे। अधिक श्रम दौड़धूप और विवादसे बच पाना कठिन है। व्यसनों-विलासों

में मन भटकेगा। चल रहे व्यापारको बढ़ाने या किसी नये कारोबारके लिये ऋण लेनेको सोचेंगे। एक सज्जन व्यक्ति आपको सन्तोष देगा। धन लाभके लिये ३-६-१२-१५-२१-२४-३० ता० श्रेष्ठ हैं। उदर विकार। दिनचर्या अस्तव्यस्त। १६ ता० नेष्ट।

सितम्बर—शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी इस मासको आपके लिये अच्छा नहीं कहा जा सकता है। प्रयासोंमें वांछित सफलता मिल पानी कठिन है। आलस्य और थकानका अनुभव। आपके असावधान रहने पर घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आ सकते हैं। लेकिन किसी महात्मा या महापुरुषकी कृपा आप पर रहेगी और परिस्थितियां सीमासे अधिक न बिगड़ेंगी। उत्तरार्द्धमें एक अतिप्रिय व्यक्ति आपके जीवनमें प्रवेश करके सुख-सहयोग प्रदान करेगा। किसी न किसी प्रकार काम चलाने भरको धन मिल ही जायगा, इस सम्बन्धमें १-२-३-९-११-१२-१७-१९-२०-२७-२९-३० ता० अच्छी हैं। समाजमें प्रतिष्ठा बनी रहेगी। १४ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—यह मास आपके लिये संघर्षपूर्ण है। प्रायः वैसे ही परिस्थितियां रहेंगी जैसी विगत कई मासोंसे चली आ रही हैं और जिनके आप अभ्यस्त हो चुके हैं। आरम्भमें तो श्रम और उद्योग करनेमें रुचि ही न रहेगी। अनुत्साह और थकानका अनुभव होगा। जो प्रयत्न करेंगे भी उसमें अवरोध आ जायंगे। यह सन्तोषका विषय है कि २४ ता० से सुधारके लक्षण प्रकट होने लगेंगे और भविष्यकी योजनाएं आरभ करने यौग्य परिस्थितियां बनेंगी। तभीसे व्यापारमें भी नयी जान आने लगेगी। धैर्यपूर्वक सुसमयकी प्रतीक्षा करना ही कर्त्तव्य है। कुछ मित्र या सम्बन्धी अकारण विरोध करेंगे। अपने स्वास्थ्यका पूरा ध्यान रखना चाहिये। अप्रिय यात्राएं। १० ता० नेष्ट।

मीन

अगस्त—कुछ थोड़ा संघर्षपूर्ण होते हुए भी यह मास आपके लिये पर्याप्त अच्छा है और नये युगके आगमनकी सूचना देता है। विगत एक-दो महीनोंसे उन्नति करने या बड़े आदमी बननेकी महत्वाकांक्षाएं उभर आवेंगी। प्रयासोंमें सफलता और शत्रुओं बाधाओं पर विजय देने वाले योग विद्यमान हैं। किन्तु यदि आप व्यसनों और विलासोंमें फंस गये तो वर्षों तक पछताते रहेंगे और यदि इस तथा आगामी छः मासोंका आपने सदुपयोग किया तो उन्नतिके शिखर पर पहुंच जायंगे। व्यापारमें नयी योजना-व्यवस्थाका शुभारम्भ। आकस्मिक लाभकी आशा। धन लाभके लिये २-८-९-११-या १२-१७-२०-२६-२९ ता० श्रेष्ठ हैं। उदर विकार, दौड़धूप। १४ ता० नेष्ट।

सितम्बर—यह मास आपके लिये अच्छा ही कहा जा सकता है। तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो प्रथमार्द्ध अधिक अच्छा है, अपने कठिन काम इसी भागमें बना लेना चाहिये। व्यसनों-विलासों और मनोरंजनोंमें आपको विशेष रुचि रहेगी। दो महत्वपूर्ण व्यक्ति सहयोग देंगे। स्थायी साधन तथा कई अन्य रास्तोंसे धन लाभ, इस सम्बम्धमें ३-५-८-११

या १२-१३-१६-२०-२२-२५ या २६-३० ता० अच्छी हैं, प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति, आकस्मिक लाभ सम्भाव्य। व्यापार को बढ़ानेके लिये कुछ ठोस कदम उठावेंगे, सम्भव है यि तदर्थ ऋण भी लें। विशेष व्यय और छुटपुट हानियोंसे बच न सकेंगे। १४-१५ ता० में सावधान रहें। उत्सवों मंगल कार्योंमें सम्मिलन। दौड़धूप अवश्य। १० ता० नेष्ट।

अक्टूबर—कुछेक नेष्ट फलोंसे युक्त होने पर भी यह मास पर्याप्त अच्छा है। समस्याओं और संघर्षोंका परिहार धीरे-धीरे हो जायगा। आनन्द-विनोदके अनेक अवसर मिलेंगे। घर और बाहर होने वाले उत्सवों तथा मंगल कार्योंमें भाग लेंगे। मेहमानोंका आगमन। व्यापारमें सामान्य गतिसे वृद्धि होती रहेगी। स्थायी साधन और विशेषकर कुछेक अन्य रास्तोंसे धन लाभ. प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति, आकस्मिक लाभ सम्भाव्य। धन लाभके लिये २-५-११-१३ या १४-२०-२३-२९ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ९-१५-१७-२५-२७ भी अच्छी रहेंगी। समाजमें मान, हर्षदायक समाचार, ८ ता० नेष्ट।

त्रैमासिक व्यापार भविष्यफल

[लेखक :—श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त, खोरी (हरियाणा)]

श्रावण मास

"सावन एकम करे जो गुरुवारसे मेल, मँहगे भावोंमें बिके उर्द मूँग तिल तेल।" (भविष्यभारती) बदी एकमका क्षय, तीन दिनके अन्दर प्रत्येक वस्तुमें एक बार मन्दी का झटका लायेगा। ता० २२ जुलाई, सरसों अलसी तिल तेल पाट बारदाना तेज। आज गुरु उदय होगा। बाजारमें रुई, चांदी, सोना, सरसों, मूंगफली, सूत गुड़में एक बार तेजी होगी, कुछ दिनमें भाव गिर जायेंगे। बदी ४ रविवारी अनाजमें तेजी रक्खेगी। ता० २५ सोना चांदी ताम्बा पीतल गेहूं तेज। कन्यागत भौम चन्दन, रेशमी वस्त्र लाल रंगके सभी पदार्थ, सरसों अलसी गुड़ गेहूँ मसूर मिर्च तेज करेगा। राहु भौमयुतिसे रुईमें जोरदार तेजी, अन्नका नाश, बंगाल और पंजाबमें उपद्रव, बंगाल-आसाममें बीमारी। २७ जुलाई रुई कपास सूत नमक घी तेल दही शहद तेज। मालवामें हानि तथा दुर्भिक्ष। ता० ३० रविवार उ०फा०का शुक्र गल्ला तेज, मारवाड़में उपद्रव करेगा। आज रोहिणी नक्षत्र उत्तम संवत् होने की सूचना देता है। ३१ को चांदी चावल रुई कपास चीनी, खाण्ड, चीनीके वर्तन, कप प्लेट आदि मन्दे होंगे।

अगस्त मास—ता० १ को गुड़ खाण्ड सोना चांदी खार नमक तेज। ता० २ कन्याका शुक्र रुई चांदी चावल घी मन्दा करेगा, खेतीमें नुकसान, जुवार बाजरा मूंग मोठ उर्द तेज, चावल विशेष तेज, वक्री बुधसे सोना चांदी रुई कपास गुड़ खाण्ड तेज हों। अमावस्या गुरुवारी मन्दी तथा वर्षाकारक। अश्लेषाका सूर्य—गेहूँ चना अलसी गुड़ शेयर्स तेज, पूर्वी देशोंमें उपद्रव। अमावस्याकी वृद्धि मन्दीकारक, परन्तु रुई कपास तेज, कर्क गुरु वर्षाकारक, बाजार मन्दा, फल फूल मन्दे। गुरुके कर्क राशि पर आनेसे प्रथम ही अनाज संग्रह कर लेना चाहिये। सुदी १ शनिवार तिलहन और गल्ला तेज, रुई कपास चांदी मन्दी।

ता० ६ रविवार पू०फा० में चंद्रोदय अन्नमें अच्छी मन्दी करेगा। ता० ८ बाजार मन्दीमें खुलेगा, बादमें सोना, चांदी ताम्बा गुड़ गेहूँ हल्दी तेज। ता० ९ को शनिका अस्त, पाट कुष्टा बारदाना, रुई अरण्डी तेज, सोना मन्दा। ता० १० हस्ते भौम—वर्षामें कमी, तुष धान्य ज्वार बाजरा मकई घी गुड़ नमक तेज, चारामें अच्छी तेजी होगी। ता० ११ बुधास्तसे चांदी, रुई, शेयर्स हैंसियन मन्दा, वर्षा कम, चोरी तथा रोगोंका उपद्रव। आज जहां वर्षा होगी, वहां खेतीकी उपज उत्तम होगी। सुदी एकादशीका क्षय, कार्तिकमें कहीं मंत्रीमण्डल परिवर्तन होगा और तेजी भी होगी। १६ को सिंह संक्रांति बुधवारकी है अतः ईख, गन्ना, गुड़ खाण्ड मीठे पदार्थ लाल रंगकी वस्तु वर्तन लाल धातुएं हल्दी तेज हो। गत जेठ मासमें भी बुधवारी संक्राति थी, गुड़ खाण्डके सिवाय सभी वस्तु तेज हुई। ता०

१७ रुईमें अच्छी मन्दी हो। ता० १८ शुक्रवारी पूनम मन्दीकारक "नभनिर्मल सुख दायिनी पूनम सावन मास। नफा मिले घी तेलमें मेघ घटा आकास॥" (भ०भा०)।

भाद्रपद मास २०३५ वि०

वदी १ को शतभिषा नक्षत्र इस पक्षमें अनाजमें तेजी रखेगा। पुष्ये गुरु, वर्षामें रुकावट, अन्न तेज, सरसों अलसी तिलहन तेज। वदी ४ का क्षय तीन दिनके अन्दर सभी वस्तुओंमें एक बार मंदीका उछाला आएगा। ता० २३ मघाके तीसरे चरण पर शनि, उज्जैन मालवामें दुर्भिक्ष, गल्ला तेज, चूहों और टीडियों से खेतीमें हानि। ता० २४ चित्राका शुक्र बम्बई गुजरात काठियावाड़में अच्छी वर्षा। ता० २५ जन्माष्टमी शुभ है। जौ, गेहूँ बाजरा गुवार मटर, सभी धातुएं, कस्तूरी, तिल तेल हींग सोंठ जीरा आदि किराना तेज हो, इनका स्टाक तीन मास पीछे लाभ देगा। रातको ग्यारह वजेके करीव चंद्रग्रहण आरंभ होगा, ढाई बजे समाप्त हो जायेगा। ज्वारका स्टाक करें, लाभकारी चांस है। काली वस्तुएं लोहा जस्ता मशीनरीसे लाभ, पीले और लाल पदार्थों से दो मास पीछे लाभ होगा, पशु तेज। ग्रहण बाद वर्षा हो तो ग्रहणका फल नहीं होगा।

आश्विन मास सं० २०३५ वि०

वदी २ सोमवार, चांदीमें अच्छी मन्दी, जौ चणा चावल खाण्ड चीनी मन्दी, पू०फा० का शनि दारुण भयकारक है। मगलवारी तीज अग्निभय अथवा अन्न तेज हो, सोना ताम्बा पीतल गुड़ खाण्ड अलसी तेज, २३ को रोहिणी नक्षत्रकी वृद्धि मन्दीकारक, आज तिलहन लोहा जस्ता बारदाना तेज होगा, कन्यागत बुध छठे मास तक सोना तथा शक्कर में लाभ देगा, पीले पदार्थ तेज, विशाखाका शुक्र सोना चांदी सरसोंमें मन्दीका उछाला लायेगा। ता० २६ दशमी मंगलवार व्याधि (रोग) कारक है। बाजारमें तेजीका रख रहेगा। बुधवारी एकादशी गाय, बैल, भैंस बकरी आदि पशु तेज करेगी, हस्ते रवि: गुड़ खाण्ड घी गेहूं नमक हल्दी हरड़ हींग धनिया तेज हो। एकादशीकी वृद्धि मँगसिरमें अन्न तेज करेगी, नोट करें यह एक चांस है। हस्ते बुध, उत्तम वर्षा तथा उपजकारक अन्न मन्दा। ता० ३० तिलहन मशीनरी स्टीलके वर्तन गल्ला बारदाना तेज।

अक्टूबर मास—अमावस्या सोमवारी— "सोमवनी मावस पड़े कभी जु आश्विन मास, अन्न खाण्ड गुड़ तेलमें मन्दीका आभास।" (भ० भा०) ता० ३ शनि अगारक योग, कई प्रकारकी दुर्घटनाएं, तेजी तथा रोग कारक है। ऐन्द्र योग रुई मन्दी, सोना ताम्बा चणा हल्दी तेज। ता० ४ बुधवारी दोयज रुई तेज करेगी। इस पक्षमें रुई तेज रहेगी। सिंह संक्रांतिके दसवें दिन बुधका उदय घोर वर्षाकारक है। आज बाजार तेज रहेगा। २८ को मार्गी बुध व्यापारकी लाइन बदलेगा, मन्दी वस्तुएं तेज और तेज चीजें मन्दी हो जायेंगी। ता० ३० पू०फा० का शुक्र—रुई कपासमें अच्छी मन्दी, चांदी, कांसी, अलुमुनियम मंदी, प्रजामें सुख शांति करेगा। चित्राका भौम रोग, धातु गेहूं चणा तेज करेगा।

सितम्बर मास—शनिवारी अमावस्या घी तेल तिलहन गल्ला तेज। मघा नक्षत्र वर्षाकारक। सुदी १ को पू०फा० इस पक्षमें अन्न में तेजीकी सूचना है। ता० ४ बाजार मन्दा, चंद्रोदय एक मास तक अन्नमें तेजी करेगा। परन्तु वर्षाकारक भी है ता० ५ सिंहे बुध रुई चांदी, सूत, लकड़ी फरनीचर तेज। यहां चार ग्रहोंकी युति तेजीकी लाइन बनाएगी। ता० ७ स्वात्या शुक्र तेजीकारक, चोर डाकुओं वा अग्निकाण्डोंसे प्रजाको कष्ट। ता० १० तुलागत भौम, ज्वार, गुवार बाजरा मकई, उर्द मूंग मोठ रुई कपास तेज करेगा। यहां भौम शुक्र युतिसे रुई कपासमें भयानक तेजी मन्दी चलेगी, गल्ला तेज, किसी उच्च नेता अथवा व्यक्तिकी मृत्यु भी हो सकती है। मूल नक्षत्रके कारण दो मास तक इकतर्फा लाइन रहेगी। ता० १३ उ० फा० का सूर्य रुई मंदी, अलसी, अरण्डी, चावल, गुड़, मूंग, सोना, चांदी लोहा, मूंज, बांस तेज, बीमारीकी आशंका। सुदी त्रयोदशीका क्षय घी तेज। शनिका उदय मूंग, चावल, लहसन, साजी, चांदी, लोहा, रबड़, बिजलीका सामान मोटर फर्नीचर तेज, रोगोंका प्रसार, वर्षा कम, खेती में हानि, अन्न तेज, यह तेजी पांच दिन पीछे चलेगी। पूनम शनिवारी आज ही कन्या संक्रांति है, चंद्रमा सूर्यका अपोजीशन, ६ मास तक अनाजमें तेजी रह सकती है। तिलहन, अनाज, तेल घी, नारियल लाल रंगके पदार्थ तेज होंगे। स्वातिमें चंद्रोदय—गल्ला मन्दा, नमक क्षार पदार्थ तेज। ता० ७ सुदी ६ को ज्येठा नक्षत्र है, अनाजका स्टाक करें लाभ होगा। षष्ठीका क्षय रुई एक मास तक तेज रहेगी ता० ६ विशाखाका भौम, रुई कपास कपड़ा गल्ला तेज करेगा। "नौमी मंगलवार, जो शुक्ला आश्विन मास। मूंग, मोठ, चोला, उर्द संग्रह करो कपास।" यह स्टाक चैत्रमें लाभ देगा, **यह एक चांस है**। तुलाका बुध वर्षाकारक। गल्ला गुड़ खाण्ड अफीम तेज। ता० ११ को विजयादशमी सोना चांदी रुई सरसों मन्दीकारक है। त्रयोदशी शनिवारी—"आश्विन तेरस शनि दिना सूर नखत पर सूर अन्नहीन भूमि रहै मन्दी समझो दूर" (भ० भारती) ता० १५ सोमवारी पूनम मन्दीकारक। आश्विनमें वदी पक्षमें तिथि बढ़ी है, सुदीमें घटी है, संक्रांति क्रूर बारमें है अतः जनरल लाइन तेज रहेगा।

धनुर्लग्नमें उच्च-नीच ग्रहोंका फल

[लेखक :—श्रीमदनमोहन ज्योतिषी "पवि"]

सूर्य—धनुर्लग्नमें यदि पंचमभावमें सूर्य उच्चका हो तो महाप्राज्ञ, धनाढ्य, बलवान्, दास दासी वाहनयुक्त महाभाग्यशाली, कृतज्ञ। २२वां वर्ष विद्या व भाग्यसे श्रेष्ठ व्यतीत होवे। पीतवस्तुके व्यापारमें सिद्धि पावे। आत्मबली मातृ पितृ विचारधारासे विमुख रहे।

चन्द्र :—छठे उच्चराशिमें चन्द्र बहुत शत्रुयुक्त, मित्र शत्रुका कार्य करें। शत्रु चक्कर देकर रुपया ऐंठ लेवे। किन्तु शत्रुओंके जालसे मुक्त होंगे। प्रसन्न वदन होवे। जीवन भर शत्रु उदयास्त होते ही रहेंगे।

बृहस्पति :—अष्टमभावमें उच्चका गुरु बहुत

भवन एवं वाहन पति होवे। लोकसेवक, जोवन भर भवन कार्य जनहितार्थ करें। वेदपाठी, पूजा पाठलीन, आस्तिक, धनाढय, नौकरचाकर वाहनयुक्त, शरीफ, मुखिया, प्रधान वा नायक होवे। ससुरालसे धनार्जनकर्त्ता, भाग्यशाली समुद्री महायात्रा करने वाला होवै, तीर्थ स्थलमें हरिस्मरण करते हुए जीवन यात्रा समाप्त करें

बुध :—दशमभावमे उच्चका बुध ऐच्छिक, स्थानान्तर होता रहे। अफसर मेहरवान होवे, शिफारिशका आश्रय रहे। लेखन या वकील कर्ममें सिद्धि समृद्धि पावे। दत्तक योग निष्फल जावे। भूमियुक्त होवे। वायुयान यात्रा भी करेंगे।

मंगल :—उच्चका मंगल दूसरे भावमें गणितज्ञ, वा बैंक मैनेजर, अकाउण्टेट, बहुत परिवार युक्त, शल्य चिकित्सासे मरण होवे। अग्निभय, कुटुम्बमें कलह होवे। सत्पुत्रयुक्त, पुत्रोत्पत्ति धनवृद्धिकारी, २८वें वर्षमें भाग्योदय होवे।

शुक्र :—चौथे उच्चका शुक्र मोटर, वाहन एवं सन्मित्रयुक्त, व्यापारमें वृद्धि, मित्र उच्चपदाधिकारी होवे। माता प्रज्ञाचक्षु, धनाढय, बलाढय, सुन्दर नेत्र, सुखयुक्त होवे। सुगन्धित द्रव्यका शौकीन, प्रतिभावान्, वीर्यवान्, कामकलामें चतुर होवे।

शनि :—११वें उच्चका शनि कन्या संतान वृद्धि, भ्राता भगिनी उच्चपद प्राप्त, स्वभाव तेज, उदर वा वायु विकार युक्त होवे। यान्त्रिक धन्धोंसे धनार्जन करें। शल्य चिकित्सा भी करानेका योग लगता है।

धनुर्लग्नमें नीचग्रह :—

सूर्य :—ग्यारहवें भावमें नीचस्थ सूर्यसे सेवक वर्गमे चौरी व असहयोगकी संभावना, सेवक धूर्त होंगे। संतान रुग्ण रहे। १ या २ संतान अपनी मध्यावस्था में मर जावे।

चन्द्र :—बारहवें नीचका चन्द्र कफ पीड़ा, जल भय, सत्कार्यमें व्यय, शत्रुवृद्धि, स्वासरोग, सर्दी जुकाम, मामा सुख न्यून रहेगा।

मंगल—आठवें नीचका मंगल बवासीर, ननिहाल निरवंश वा ननिहालका सुख नहीं होता है। धनार्जनमें विघ्न होगा। कुटुम्बके लिये जीवन देने वाला, परंतु कुटुम्बका सहयोग नहीं मिलेगा। संतान रुग्ण होवे। भ्राता भगिनी सुख साधारण रहता है।

बुध :—चौथे नीचका बुध निजी भवन बेचना पड़े। उत्तरावस्थामें भवन बनेगा। राज्य में संघर्ष, पत्नी दुर्बलदेही रुग्ण रहे। माता दुःखी होकर मरे वा सौतेली माता होती है।

गुरु : दूसरे नीचका गुरु वृहद् कुटुम्बयुक्त, पाई-पाईके लिये जीवन देने वाला, परिवारसे असन्तुष्ट, किसी पर पूर्ण विश्वास नहीं होता है। दंत विकार युक्त, चेहरा भरा हुआ, ससुरालसे धन मिलता है, ससुर मृत या धूर्त होता है।

शुक्र :—दशवें नीचका शुक्र व्यापारमें लाभ, चित्त चिन्तातुर रहे। पितृ-द्रोह, अधिकारीसे विचार मेल नहीं रहता। शत्रु अधिक, धन यथेष्ट प्रयत्नानुसार पूर्ण प्राप्त नही होता है।

शनि :—पांचवें नीचका शनि विद्यामें विघ्न, पत्नीको प्रसव वेदना, नौकर चाकर स्थाई नहीं रहें। भ्राता भगिनी कष्टप्रद जीवनयापन करें। कुटुम्ब अराजकता, पत्नी रुग्ण, दुर्बल, संघर्षमय जीवन, कठिनाईसे धन मिलता है।

राहु :—लग्नमें नीचका राहु तेजस्वभावी, चिन्तातुर, अल्प-निद्रालु, सर्पसे भय पाने वाला, यदि शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो जीवनमें कुछ अच्छा काम करने वाला होता है। केवल राहु धनुका हो तो सारा जीवन दुखमय अवस्था में कटता है। कुटुम्ब पत्नी सुख रहित, भ्राता द्रोही होते हैं।

"JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा कुमार प्रि० प्रेस सोलनमें छपकर ज्योतिष्मती-